पुली तक

श्री विद्या भूषण के सौजन्य से

लेखक—
अभय राम शर्मा

सम्पादक—
बसन्त कुमार वर्मा

पिता से पुत्री तक

श्री शिक्षा भूषण के सौजन्य से

लेखक-. अभय राम शर्मा
सम्पादक-. बसन्त कुमार वर्मा
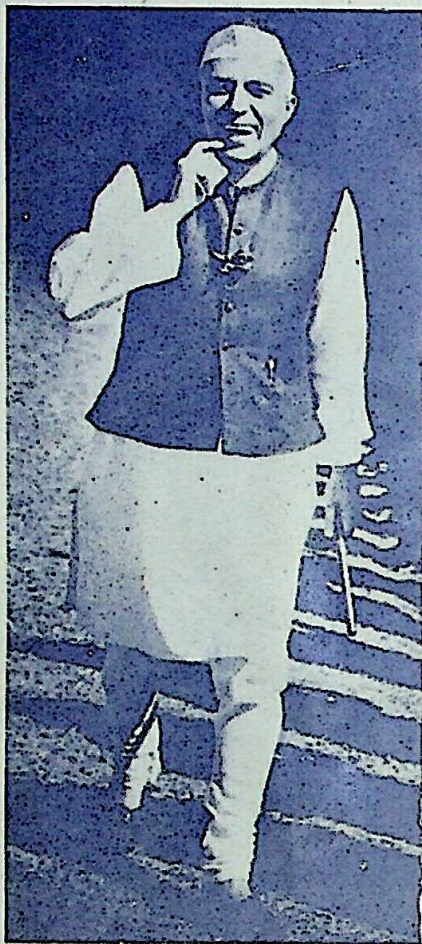
मंज़िल तेरी कड़ी है,
और दूर है ठिकाना ।
पीछे ना पग हटाना,
आगे क़दम बढ़ाना ।।

महान पिता की महान पुत्री,
भारत की अभिलाषा है ।
जन गण मन में तुमने,
भरदी जीवन की आशा है ।।

गीत-माला

आजादी के बाद बदलते भारत का चित्रण

पिता से पुत्री तक
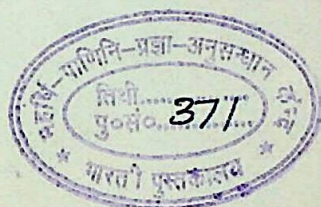
• लेखक :
अभयराम शर्मा 'गीतकार'

इस पुस्तक का विमोचन
प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा
29 अगस्त 1983 को प्रधान मंत्री निवास पर
किया गया है।

• सम्पादक :
बसन्त कुमार वर्मा

प्रकाशक
श्रीमती सरस्वती देवी, 'सरस्वती भवन'
जिलाधिकारी निवास के पीछे, सहारनपुर-247008

मोतीलाल के लाल को जग में मिलती नहीं मिसाल । जवाहरलाल ने भारत देश का कर दिया उन्नत भाल ।।

आती है याद जग को कमला की कहानी ।
जवाहर को दी जिसने हिम्मत की निशानी ।।

कष्ट सहे बहुतेरे जब थी वे छोटी सी बच्ची ।
नेताओं में आज इन्दिरा गांधी सबसे अच्छी ।।

है महान इन्दिरा गांधी ॥

संकट में पड़ करके निज
देश का मान बढ़ाया है,
बाप के छोड़े हुये काम को
आगे और बढ़ाया है,
नया रास्ता अपना करके
नई रोशनी लादी ॥ है महान…

खेल रचा लहरों पर और
डरी नहीं तूफानों से,
मदद ग़रीबों की करने को
कह दिया है धनवानों से,
नये बीस सूत्री कार्यक्रम से देश
में ज्योति जगादी ॥ है महान…

इस भारत की देवी ने,
देश का रूप निखारा है,
भूख गरीबी बेकारी को,
जोरों से ललकारा है,
ऊँच नीच का भेद मिटाने,
की मर्यादा बांधी ॥ है महान…

श्रीमती इन्दिरा गांधी को सश्रद्धा एवं सविनय समर्पित ।

—विद्या भूषण

पुरानी रंजिशों को भूल जाने की जरूरत है ।
जो कहते है उसे अब कर दिखाने की जरूरत है ।।

देश के वासी इस आशा की किरण को ताक रहे ।
सपने हों साकार सभी गहराई से झाँक रहे ।।
आज समय की मांग को राजीव गांधी आंक रहे ।
तजे अनेकों सुख वैभव धूल अमेठी की फांक रहे ।।

—विद्या भूषण

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिये श्री विद्या भूषण जी, मंत्री उत्तर प्रदेश शासन, ने जो उदारता पूर्वक आर्थिक सहयोग दिया है उसके लिये लेखक उनका आभारी है। इनका जन्म 22 सितम्बर, 1933 को मुजफ्फरनगर जनपद के गोकुलपुर गांव में हुआ। 1973 में मुजफ्फरनगर के नगरपालिका के अध्यक्ष बने। 1980 में विधायक, और इस समय उत्तर प्रदेश के आबकारी मंत्री हैं।

—अभयराम शर्मा

प्रथम संस्करण – 2000

पुस्तक-परिचय

प्रथम खण्ड
1950 से 1962
तक के गीत
(नव चेतना)

द्वितीय खण्ड
1962 से 1967
तक के गीत
(सुरक्षा एवं एकता)

तृतीय खण्ड
1967 से 1969
तक के गीत
(आर्थिक उत्थान)

चतुर्थ खण्ड
1969 से 1977
तक के गीत
(साहस)

पाचवां खण्ड
1977 से 1982
तक के गीत
(पुनर्प्रतिष्ठा)

मुद्रक :
अग्रवाल प्रिंटिग प्रेस,
लखनऊ
फोन : ५१३६९
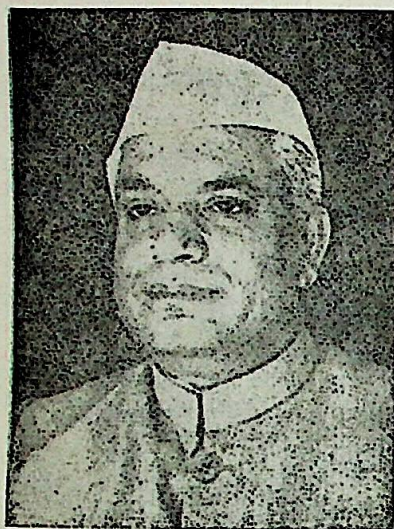
उद्योग, इस्पात एवं खान मन्त्री
भारत
उद्योग भवन, नई दिल्ली-११००११
MINISTER OF INDUSTRY, STEEL & MINES
INDIA
UDYOG BHAWAN, NEW DELHI-110011

दिनांक : 27 सितम्बर, 1982

संदेश

श्री अभयराम शर्मा "गीतकार" द्वारा संकलित पाँच भागों में प्रकाशित की जा रही पुस्तक "पिता से पुत्री तक" में स्व० श्रद्धेय जवाहर लाल नेहरू जी की देश के आर्थिक विकास नीतियों और प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के नये वीस सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रमों को वड़े ही सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है। मुझे विश्वास है कि इन गीतों से जन-साधारण में देश-प्रेम, सामाजिक व आर्थिक विकास और हिन्दू-मुस्लिम एकता को बल मिलेगा।

मैं पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

नारायण दत्त तिवारी

मंत्री
आवकारी एवं मद्यनिषेध
उत्तर प्रदेश
विधान भवन, लखनऊ

दिनांक : 21 सितम्बर, 1982

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता है कि श्री अभयराम शर्मा ने "पिता से पुत्री तक" पुस्तक में स्वतंत्रता उपरान्त वदलते भारत के सजीव चित्रण के उन गीतों का संग्रह किया है जो 1950 से श्रद्धेय पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के भाषणों से प्रेरित होकर लिखे थे और जिनके द्वारा प्रदेश के नगर व ग्रामीण अंचलों में जन-सभाओं को आयोजित करके अपनी गायन कला से नव जीवन ज्योति जगाई। तत्पश्चात् छत्तीसवें स्वतंत्रता समारोह पर समयानुसार अपनी मुख्य रचनाओं द्वारा देश-प्रेम की भावना जगाई, और भारत की प्रथम महिला प्रधान मंत्री आदरणीया श्रीमती इन्दिरा गांधी, जो विश्व की महान नेता हैं, की नीतियों एवं कार्यकलापों को जन-जन तक फैलाने में प्रशंसनीय कार्य किया है। मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक को पढ़ कर लोगों को यह जानकारी हो जायेगी कि आजादी के बाद से अब तक की अवधि में अनेकों कठिनाइयों के होते हुये देश ने जो उन्नति की है वह अद्वितीय है और भारत के नव-निर्माण के जिस अंकुर को पिता ने "आराम हराम है" नारे से उगाया था, उसे पुत्री ने कठिन परिश्रम, दूर-दृष्टि, दृढ़ निश्चय, अनुशासन और एकता से पुष्पित व पल्लवित करके भारत की जीवन-धारा को नया मोड़ दिया है।

शुभकामनाओं सहित

विद्या भूषण

लेखक की ओर से

स्वतन्त्रता प्राप्ति से अब तक जो भी आवश्यकता व परिस्थिति आती गयी उसी के अनुसार गीत लिखता व उन्हें स्वर देकर जन सभाओं में सुनाता रहा हूँ। मेरे कुछ मित्रों ने कई बार परामर्श दिया था कि अब तक के सभी निर्माणात्मक गीतों को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करा दिया जाय। अतः स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू के कार्यकलापों से लेकर उनकी पुत्री प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा १५ अगस्त १९८२ को लाल किले पर दिये गये भाषण तक गीतमाला "पिता से पुत्री तक" नाम से पुस्तक प्रकाशित कर प्रस्तुत है। मेरा पाठकों से अनुरोध है कि राजनीति से ऊपर उठ कर इस पुस्तक के गीतों को पढ़ें और राष्ट्रोत्थान का कार्य करें। यदि नये २० सूत्री कार्यक्रम द्वारा निर्माण की कुछ भी भावना इस पुस्तक के गीतों से जागृत हुई तो मैं इस प्रयास को सफल समझूँगा।

मैं श्री वसन्त कुमार वर्मा जिला सूचना अधिकारी लखनऊ का आभार व्यक्त करता हूँ कि जिन्होंने अपने कुशल सम्पादन से इस पुस्तक की गरिमा को निखार दिया है।

अभयराम शर्मा, 'गीतकार'
"सरस्वती भवन",
जिलाधिकारी निवास के पीछे
सहारनपुर-247001

गांधी जयन्ती,
दिनांक २ अक्टूबर १९८२

सम्पादकीय

विद्यार्थी जीवन के प्रारम्भ से ही मुझे परमादरणीय प० जवाहरलाल नेहरू के विचारों, उनकी दिनचर्या तथा उनकी आस्थाओं की बड़ी बारीकी से जानने की उत्कंठा रहती थी। अपनी माता जी से उनके देश प्रेम व स्वराज्य के विचारों को सुनने की वहुत रुचि थी। २८ फरवरी, १६३६ को श्रीमती कमला नेहरु के निधन के पश्चात् इन्दिरा जी काफी वीमार हो गयी थीं। नेहरू जी के कहने पर स्वास्थ्य लाभ हेतु वे स्विट्जरलैन्ड गयी थीं। वहां से लन्दन होते हुए उन्हें वापस आना था लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के कारण उन्हें काफी समय ब्रिटेन में रुकना पड़ा। मार्च १६४१ में वे स्वदेश लौटी तो उन्होंने अनुभव किया कि भारतीय राजनीति में ऐतिहासिक परिवर्तन आने लगा है।

इसके थोड़े समय वाद ही वे यू०पी० स्टूडेण्ट्स कल्चरल कान्फ्रेंस को सम्बोधित करने कानपुर पधारी थीं। उस समय स्टूडेण्ट्स फेडरेशन कानपुर शाखा का संयुक्त मंत्री होने के नाते मैं प्रथम बार उनसे मिला था। उनका भाषण सुनकर उपस्थित जन समुदाय वहुत प्रभावित हुआ था। भारत वर्ष में अंग्रेजी राज्य था, उस समय उन्होंने जो कहा था वह मुझे आज तक स्मरण है—"भारत महान है, "यहां के असंख्य नर नारी शताब्दियों से दासता की जंजीरों में जकड़े होने के कारण अपने गौरवमयी अतीत, अद्वितीय कला-कौशल की बहुमूल्य निधि खो चुके हैं। उसको पुनः पाने के लिए राजनैतिक स्वतंत्रता का वातावरण परमावश्यक है। इसके लिए उन्होंने समाज के सभी वर्गों, विशेषकर विद्यार्थी समुदाय से जोरदार शब्दों में आह्वान किया था कि "ग्रामों एवं श्रमिक बस्तियों में जाकर इस प्राचीन गौरव की पुनः स्थापना की प्रेरणा दें।"

उसी समय से मेरे दृष्टिकोण में परिवर्तन आया और १९४२ के राष्ट्रव्यापी स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय भाग लिया जिसके फलस्वरूप एक वर्ष के लिए मेरी शिक्षा में विघ्न पड़ा, इसके वाद शासकीय सेवा की सीमाओं में रह कर भी मैने इस मार्ग को नहीं छोड़ा है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रदेश के सूचना विभाग में ही "नेशनल हेराल्ड" की सेवा त्याग कर ३० वर्ष पूर्व जिला सूचना अधिकारी के पद पर सेवा में आया था, जहाँ जन सम्पर्क के अवसरों और माध्यमों का समन्वय उपलब्ध है। तभी से सुदूर ग्रामों और श्रमिक वस्तियों में जाकर राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करने का कार्य कर रहा हूँ।

यह मेरा सौभाग्य ही था कि सेवाकाल के प्रारम्भ में ही श्री अभयराम शर्मा से मेरी भेंट हुई जोकि इस दिशा में मुझसे भी आगे थे और अपने हृदय में "श्रम एवं जयते" की भावना संजोये गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के कथन "तू अकेला ही चला चल" को चरितार्थ करते हुए अपने द्वारा रचित गीतों को स्वर देकर स्वयं राष्ट्र चेतना जगा रहे थे। इनकी इन विशेषताओं से जटिल से जटिल समस्या को, जन साधारण तक उन्हीं की भाषा में गीत निर्माण कर, उनको प्रभावित कर लेने की कला में वे निपुण है। प्रचार कार्य में उनसे मैं भरपूर प्रेरणा पाता रहा हूँ। इसी कारण मैंने उनके आग्रह पर गीतमाला "पिता से पुत्री तक" पुस्तक का सम्पादन कार्य सहर्ष स्वीकार किया है। वर्तमान युग में विश्व की महानतम महिला श्रीमती इन्दिरा गांधी के द्वारा राष्ट्र को पुनर्प्रतिष्ठित करने से सम्वन्धित लिखे गीतों को सम्पादित करके अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ। लेखक के मधुर कण्ठ से सुनी उनके गीतों की निम्न पंक्तिया अब भी मेरे कानों में गूंजती रहती हैं।

चट्टान की तरह तेरी शक्ति महान है।
मोती है तेरे खून में जवाहर की शान है॥

हर खिजां ने बहार में चेहरा छुपा लिया।
डूबने से मुल्क को तूने बचा लिया॥

कठिन परिश्रम दूर दृष्टि, दृढ निश्चय अनुशासन से।
करो एकता आपस में, भारत नया बनायेंगे॥

बच्चा-बच्चा देश का इन्दिरा गांधी पर निसार ।
जब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफिल में है ।।

सभी के साथ रहेंगे मिलकर भारत ने नीति बनाई है ।
जिस पर चलकर सभी सुखी हों वही डगर अपनाई है ।।

बीस सूत्र को नयी दिशा दो आगे कदम बढ़ाओ ।
भारत वालों मिलकर आओ देश महान बनाओ ।।

ऐ नौजवां वतन के दुनिया नयी बना दे ।
कहने का युग नहीं कुछ करके अब दिखादे ।।

रोशनी दिखाता चल, प्यार को लुटाता चल ।
अभयराम पिछड़ों को गले से लगाता चल ।।

स्वतंत्रता का छतीसवाँ भारत ने दिवस मनाया ।
लाल किले पर इन्दिरा गांधी ने झण्डा फहराया ।।

औरों को कहने से पहले स्वयं ठीक हो जायें ।
जैसे तैसे करके अपना देश मजबूत बनायें ।।

देववन्द (सहारनपुर) विकास खण्ड के रणखण्डी गांव में कुछ अमेरिकन रहे थे । वे उनके कार्यक्रम में सम्मलित हुआ करते थे । उन्होंने वापस जाकर 'Changing 'Villages of India' (भारत के वदलते गांव) पुस्तक में श्री शर्मा की चित्र सहित चर्चा की है । यह वही ग्राम है जिसकी चर्चा उन्होंने "नवचेतना" खण्ड में की है । जहां यमुना नहर को ४० मील तक श्रमदान से चौड़ा करने का गीत है । और जिस कार्य का निरीक्षण स्वयं प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने वायुयान द्वारा किया था ।

कालिज से जब चले वीर ये बना-बनाकर टोली ।
करी नमस्ते सबने फिर जय भारत मां की बोली ।।

यद्यपि वे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सहारनपुर के निवासी हैं, परन्तु उनके कार्यक्रम पूर्वी जिले में भी अत्यन्त प्रिय हैं। इनका जन्म १८ फरवरी, सन् १९२८ को सहारनपुर के ग्राम खटौली के एक साधारण परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री सूरजभान शर्मा के आर्य समाजी होने के नाते समाज सुधार के विचार होने स्वाभाविक हैं। इन्होंने राष्ट्र निर्माण के सम्वन्ध में वहुत से गीत व कहानियां लिखी हैं। लगभग ३६ वर्ष से पण्डित जवाहर लाल नेहरु के "आराम हराम" है तथा श्रीमती इन्दिरा गांधी के "कठिन परिश्रम" नारे को साकार करने का पूरा प्रयत्न करते आ रहे हैं। ये बड़ी से वड़ी भीड़ को नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। उन्हें वेदों और उपनिषदों का की अध्ययन है। इनके गीतों में देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता, निर्भीकता, सीमित परिवार तथा समाजवाद देश प्रेम की झलक स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ती है।

बुलन्दशहर में शर्मा जी ने मेरे साथ परिवार कल्याण कार्यक्रमों के अन्तर्गत आयोजित कई समारोहों में भाग लिया। उस अवसर पर वहाँ के जिलाधिकारी श्री अजीत कुमार दास ने इनके कार्यक्रम की मुक्त कंठसे प्रशंसा की थी (प्रमाण पत्र पुस्तक में प्रदर्शित हैं) इनके कार्यक्रम इतने लोकप्रिय हुए कि इनके कार्यक्रमों की अवधि वढ़वाई गयी। इनकी इस पुस्तक को कार्यकाल की दृष्टि से निम्न पाँच भागों में वाँटा गया है।

(१) नव चेतना खण्ड, में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात १९५० से १९६२ तक रचित उन गीतों का समावेश है जो श्री शर्मा ने देश के विकास कार्यों में जन समर्थन व जन सहयोग प्राप्त करने के लिए लिख कर प्रयोग किये। इस खण्ड में श्रमदान, कृषि सुधार, राष्ट्रीय वचत. पशुपालन एवं युवकों व महिलाओं के लिए प्रेरणा पूर्ण गीतों को लिया गया है।

(२) राष्ट्रीय एकता व सुरक्षा खण्ड में १९६२ में चीनी व १९६५ में पाकिस्तानी आक्रमण के समय के जन जागरण गीतों का समावेश है। युद्धकाल में राष्ट्र ने अभूतपूर्व एकता दिखाई। इस काल में "जय जवान जय किसान" नारे को सार्थक वताते हुए श्री शर्मा ने अनेक सुरक्षा व प्रेरणा पूर्ण गीतों की रचना की तथा उनका जनता में प्रचार किया। श्रद्धेय जवाहर लाल नेहरू के निधन के हृदय विदारक दृष्य के गीत भी इसी खण्ड में हैं।

(३) आर्थिक उत्थान खण्ड में गरीबी हटाओ नारे के आधार पर आर्थिक उत्थान की चेतना जगाने वाले गीतों का समावेश है। इस काल में शासन द्वारा वहुत कार्य जनता की भलाई के लिए किए गये लेकिन योजनाओं का पूरा-पूरा लाभ जनता को नहीं मिल सका। कारण था जनसंख्या विस्फोट। अतः परिवार नियोजन जैसी जटिल समस्या पर गीत लिखे गये। श्री शर्मा ने परम्परागत रीति रिवाजों के विरुद्ध यौन समस्याओं जैसे गम्भीर विषय की भी चर्चा की जो कि उस समय धर्म विरुद्ध समझी जाती थी, परन्तु इस विषय पर उन्होंने सार्वजनिक रूप से अपने विचार प्रगट किये जिससे लक्ष्य दम्पत्तियों को प्रेरित करने में जितना सहयोग मिला उसका वर्णन शब्दों द्वारा करना मेरे लिए कठिन है।

(४) साहस खण्ड में उन गीतों का समावेश है जो श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा अपने शासन काल में साहस पूर्ण कार्यों के परिचायक हैं। उन गीतों में विश्व की प्रथम महिला प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा किये गये बैंक राष्ट्रीयकरण, प्रिवियर्स उन्मूलन का वर्णन है जिसमें पाकिस्तानी सेनाओं के हराने पर विजय दिवस मनाने की भी चर्चा है। तोड़-फोड़ अराजकता व अव्यवस्था फैलाने तथा बीस सूत्री कार्यक्रम लागू करने के बाद आपात स्थिति के समय के गीत भी इसी खण्ड में हैं।

(५) पुनर्प्रतिष्ठा में राष्ट्र की पुनः प्रतिष्ठा होने से सम्बंधित गीत हैं। इसके अतिरिक्त श्रीमती गांधी की सफल विदेश नीति से सम्बन्धित गीत हैं जिसके कारण विश्व के अनेक देशों का भारत के प्रति दोस्ती का हाथ बढ़ाना तथा हाल की अमेरिका और जापान यात्रा से जो भारत को प्रतिष्ठा मिली है उसका भी वर्णन शामिल है। अन्त में १५ अगस्त १९८२ को लाल किले पर झण्डा फहराते हुए जो संदेश उन्होंने देशवासियों को दिया उस पर आधारित गीत भी हैं।

पुस्तक के सम्पादन में प्रदेश के आबकारी मंत्री श्री विद्या भूषण जी की उदारतापूर्वक सहायता व पुस्तक को आकर्षक बनाने में सुझावों के लिए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

अन्त में मैं श्री योगेन्द्र नारायण, आयुक्त-सचिव सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग तथा मुख्यमंत्री जी के सचिव, जिनके अधीनस्थ मुझे पहले भी कार्य करने का अवसर मिला है, के प्रति चिराभारी रहूँगा जिनका मार्ग दर्शन एवं सहायता पाकर ही लखनऊ में लेखन कार्य प्रारम्भ किया है। इस पुस्तक के सम्पादक के लिए मुझे उन्हीं की अनुकम्पा से श्री गंगाधर प्रसाद शुक्ल विशेष सचिव एवं सूचना निदेशक द्वारा शासन की अनुमति प्राप्त हुयी है।

अच्छा हो यदि पुस्तक के प्रकाशन के उपरान्त विद्यालयों के पुस्तकालयों में तथा ग्रामीण अंचलों के युवक संगठनों में इसकी प्रतिलिपि उपलब्ध करा दी जायें। निःसन्देह इससे युवक प्रेरित होंगे तथा देश के विकास कार्यों एवं राष्ट्रीय एकता जैसे महत्वपूर्ण विषयों में नया मोड़ देने में सहयोग मिलेगा।

यद्यपि वस्तु तथा तथ्यों के शुद्ध प्रस्तुतीकरण के प्रति पूर्ण सतर्कता बरती गयी है फिर भी त्रुटियों की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। यदि त्रुटियां मिलती हैं तो क्षमा अपेक्षित है। सुझावों और संशोधनों का स्वागत लेखक और प्रकाशक करेगा ताकि आगे के संस्करणों में उनका समावेश किया जा सके।

मैं आशा करता हूं कि श्री अभय राम शर्मा की इस पुस्तक से समाज में सभी वर्गों को लाभ पहुंचेगा जिसके लिए सरकार प्रयत्नशील है।

बसन्त कुमार वर्मा
जिला सूचना अधिकारी
लखनऊ

अक्टूबर ७, १९८२
तदनुसार बृहस्पतिवार १४ शक १९०४

तजो मजहबों मिल्लत के विवादों को वतन वालो।
किसानों और मजदूरों वतन की मांग भर डालो॥

विशिष्ट व्यक्तियों की प्रतिक्रिया

श्री अभयराम शर्मा श्रोताओं के अपने कवि है। श्रोता पाठक से ज्यादा संवेदनशील होता है। अभयराम जी अपने लम्बे अनुभव से यह जान गये हैं कि श्रोताओं की तात्कालिक संवेदन शीलता क्या सुनाना चाहती है, वे उसी चाह के कवि हैं। सरल भाषा में शास्त्रीय नहीं, जन कवि हैं' और जनता की मनोवृत्ति को प्रभावित करने की असीम क्षमता उनमें है।

प्रजातन्त्र प्रशिक्षित जनमानस की शक्ति पर जीवित रहता है, पनपता है। इस दृष्टि से अभयराम जी प्रजातन्त्र देश के प्रतिष्ठित नागरिक हैं। मैं हर तरह से उनकी सफलता चाहता हूं।

विकास प्रेस — **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**
सहारनपुर — १६.१०.७५

श्री अभयराम शर्मा बड़े से बड़े जन समूह को नियंन्त्रित करने में सिद्ध हस्त हैं। राष्ट्र के निर्माण में इन्होंने बड़ा योग दिया है। विकास योजनाओं को सफल बनाने में इन्होंने प्रभावशाली गीत लिखे हैं समय-समय पर मैं भी इन्हें विकास सम्बन्धी योजनाओं से प्रशिक्षित करता रहा हूं।

—भगवन्त सिंह IAS.,
मंडल आयुक्त, लखनऊ

२३.८.७१

प्रमाणित किया जाता है कि श्री अभयराम शर्मा का कार्यक्रम अति सुन्दर है। अशांत भीड़ को नियन्त्रित करने की इनकी शक्ति प्रशंसनीय है। मैं यह देखकर दंग रह गया और बड़ा प्रभावित हुआ कि इन्हें अपनी वाणी पर पूरा नियन्त्रण है। यह श्रोताओं को घण्टों तक मौन मुग्ध रख सकते हैं जनता ने इनके कार्यक्रम को बड़ा पसन्द किया। परिवार नियोजन कार्यक्रम तथा संकटकालीन स्थिति में जनता का मनोबल ऊँचा रखने में यह बड़ा योग दे सकते हैं।

अजीत कुमार दास IAS.,
जिला मजिस्ट्रेट, बुलन्दशहर

११-१२-७१

प्रमाणित किया जाता है कि श्री अभयराम शर्मा ने इस जिले में अभूतपूर्व मेहनत से काम किया है। यदि यह इस जिले में न आते तो प्रचार कार्य को इतनी सफलता न मिलती इनके अच्छे कार्य की जितनी सराहना की जाये कम है।

—अनादि नाथ सहगल IAS.,
जिलाधिकारी गोरखपुर

१४-६-७२
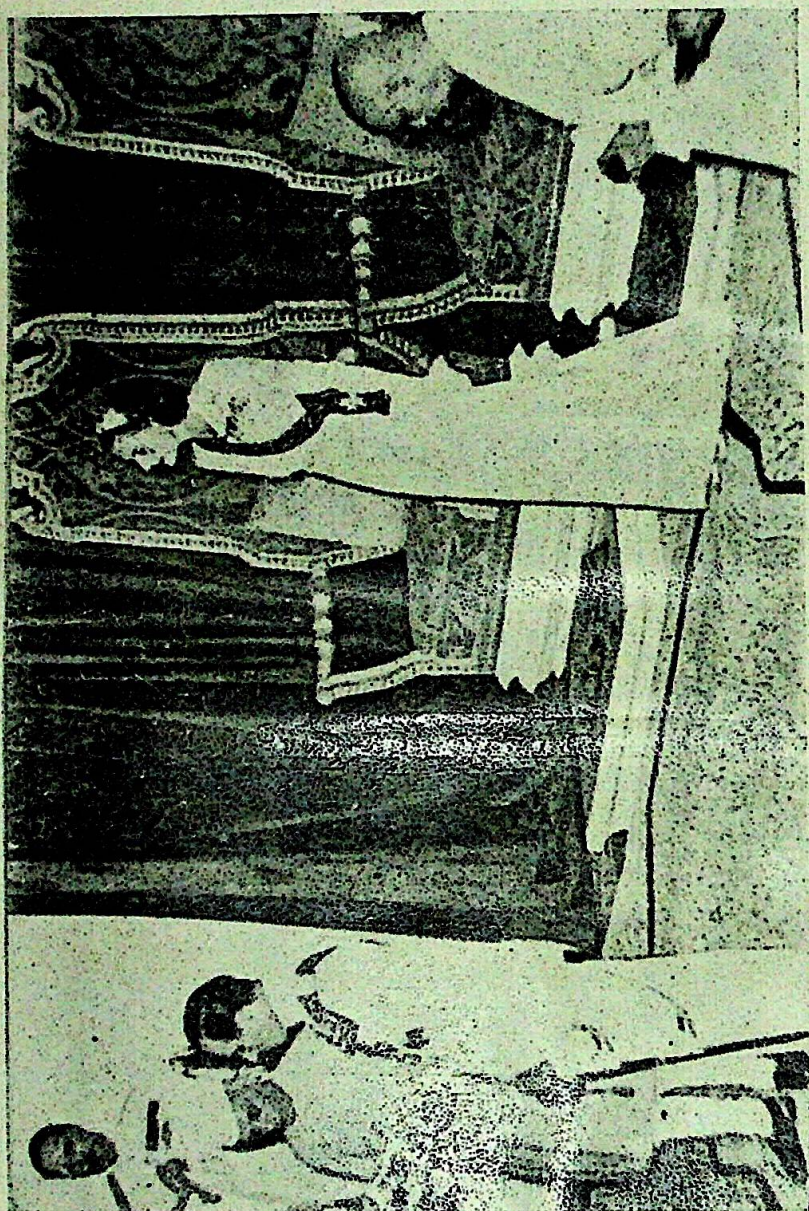
पं० जवाहर लाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पद की शपथ लेते हुये ।

पहली महिला प्रधान मंत्री के रूप में

इन्दिरा गांधी प्रधान मंत्री पद की शपथ लेते हुए

सभी की दृष्ट इन पर है।
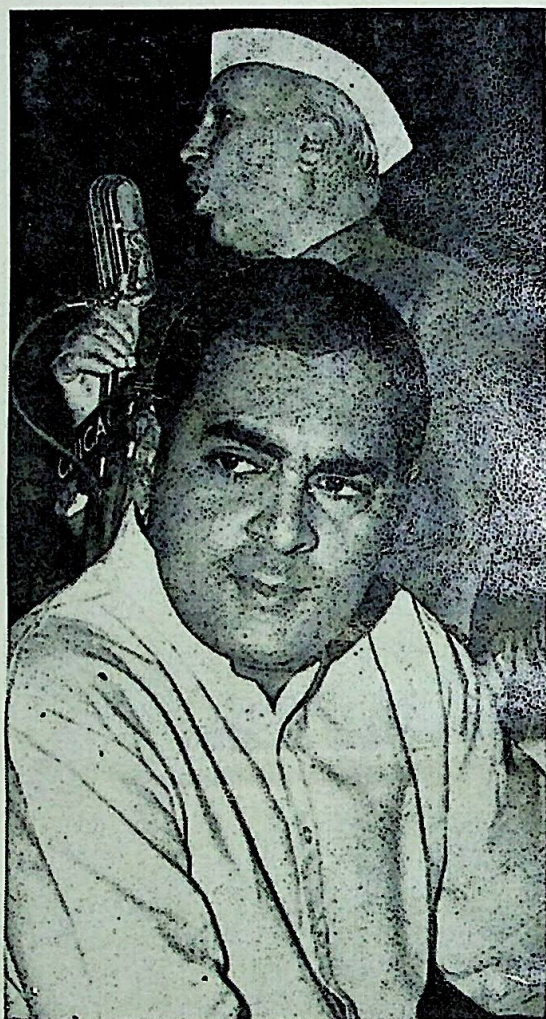
आनन्द भवन और वैभव का जिसने जग में त्याग किया ।
जेलों में दी काट जवानी कष्टों से अनुराग किया ।।
राज किया दुनिया के दिलों में जीवन को बेदाग किया ।
जन सेवा और प्रजातंत्र का रोशन एक चिराग किया ।।
राजीव ने भी ऐसे ही अब अपना आनन्द छोड़ दिया ।
और अनेकों सुख वैभव से अपना नाता तोड़ लिया ।।
देश की सेवा की राहों पर निज जीवन को मोड़ दिया ।
सज्जनता सचाई मानवता से संबन्ध जोड़ लिया ।।

ॐ

नव चेतना खण्ड

"इस खण्ड में १६५० से १६६२ तक के निर्माण गीत हैं"

सरस्वती-वन्दना

ओऽम् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टु धियावसु ॥ ऋग्वेद

गीत

मां शारदे मुझको यह वर दे, वाणी में मृदुता भर दे ॥ मां शारदे…
अविरल अविचल भक्ति भाव से, कलुषित कपट हर दे ॥ मां शारदे…
कण-कण क्षण-क्षण जनहित जागे, मन में प्रकाश भर दे ॥ मां शारदे…
कटुता द्वेष मोह क्रोध मिटादे, अभय वरदान अमर दे ॥ मां शारदे…

चौपाई :—वन्दऊ गुरु पद पदम परागा ।
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥

गुरु-बन्दना

वेदो के प्रचार में जिन्होंने भारी योग दिया ।
सत्य सिद्धान्त पथ के गीत लिखे भारी है ॥

एक सो इक्कीस वर्ष में भी लगते हैं युवक से ।
विरोधी रुढ़ी वाद के व्यायाम के पुजारी है ॥

मेरे जैसे सैंकड़ों ही शिष्यों का उद्धार किया ।
रहे अविवाहित और सन्यासी सदाचारी हैं ॥

अभयराम मेरे गुरु शिष्य दयानन्द के हैं ।
घरोंडा करनाल के भीष्म जी ब्रह्मचारी हैं ॥

राष्ट्र-वन्दना

हमें वह शक्ति दो भगवान,
रहे प्रेम से मिल जुलकर सब,
पानी दूध समान ।। हमें वह……

आशा का अंकुर उपजा दो,
जनहित का पीयूष पिलादो,
सेवा का संमार्ग सुझादो,
साहस का सोपान ।। हमें वह……

प्रेम एकता का वर वर दो,
ज्ञान उजाला घर घर कर दो,
कूट-कूट-कर दिलों मे भर दो,
स्वाभिमान सम्मान ।। हमें वह……

देश-प्रेम की लगन लगा दो,
छूत छात का भूत भगा दो,
कर्मवीर बनना सिखला दो,
कर दयालु दान ।। हमें वह……

स्वतंत्रता के तुरन्त वाद सन् १६४८ में देश की दशा की एक झलक

गीत

आजादी तो मिली देश को जिसकी खुशी महान हमें ।
लेकिन मिलकर करना है अब भारत का निर्माण हमें ।।
बुरी तरह संकट में डालकर भारत को अंगरेज गया,
सोना चांदी माल खजाना सब लन्दन को भेज गया,
भूख गरीबी बेकारी से कर हमको लबरेज़ गया,
नहीं बुझाये बुझे फूट की आग लगा कर तेज़ गया,
सदियों के बन्धन से पहुंचा है भारी नुकसान हमें ।।
लेकिन मिल कर……………

महात्मा गांधी सुभाष जवाहर को जेलों में सड़ा दिया,
भगत व बिस्मिल अश्फाक आदि को फांसी पर चढ़ा दिया,
काल कोठरियों में रख करके दण्ड कड़े से कड़ा दिया,
जलावतन कर दिये बहुतों को संगीनों पर खड़ा किया,
नहीं भुलाना चाहिये कभी उन वीरों का एहसान हमें ।।
लेकिन मिल कर..............

दशा देखकर अपने देश की प्यारो फटती छाती है,
दो गज कपड़े को लम्बी लाइन लगवाई जाती है,
पाव भर नमक की खातिर जनता रोती और चिल्लाती है,
सुई तलक भी भारत देश में जापान आदि से आती है,
विदेशी सड़े अन्न पर करना पड़ रहा है गुजरान हमें ।।
लेकिन मिल कर..............

कृषक खेत में पूरे साल श्रम करके अन्न कमाता है,
सर्दी गर्मी आंधी से वह किंचित न घबराता है,
पाल पोस कर गाय भैंस को दूध के योग्य बनाता है,
सरमायेदार क़र्ज़े में सब ये चुपके से ले जाता है,
अभयराम इन सबका अब करना है समाधान हमें ।।
लेकिन मिल कर..............

निम्नांकित गीत शहीदों की याद में पन्द्रह अगस्त सन १६५० को एक जनसभा में सुनाया था ।

गीत

लाल किले पर आज तिरंगा झंडा जो लहराता है ।
बीत गये जो दिन भारत के उनकी याद दिलाता है ।।
यह वह झण्डा मिली है जिससे भारत को आजादी,
ऋषि दयानन्द ने आकर स्वराज की याद दिलादी,

चले हाथ में लेकर इसको पूज्य महात्मा गांधी,
दादा भाई नोरोजी तिलक व बिस्मिल आदि,
रोम रोम में चुश्ती हर रग रग में जोश दिलाता है।। बीत गए............

कहां गई सत्तावन वाली वो झांसी की रानी,
सपने में भी जिसने अंग्रेजों से हार न मानी,
पुत्र कमर में आप समर में बढ़ती गई दीवानी,
लड़ते लड़ते अंग्रेजों के याद दिलादी थी नानी,
संग में तात्या टोपे व नाना भारी कष्ट उठाता है।। बीत गये............

ब्रिटिश क़फन की कील बनेगा मेरे ही हिय का छाला,
हाथी आगे झूम गये थे वीर लाजपतराय लाला,
माल रोड पर बनी हुई है लाला जी की बधशाला,
हँसते हँसते फांसी चढ़ गया वीर भगत सिंह मतवाला,
खुशी के मारे फांसी पर ढाई पोण्ड वजन बढ़ जाता है।। बीत गये............

डायर ओ डायर का मुझको याद कारनामा काला,
हुई जुल्म की अन्तिम सीमा तीर्थ बना जालिया वाला,
बदला लेने की युवकों के दिल में फिर भड़की ज्वाला,
कष्ट उठाकर लन्दन पहुंचा ऊधम सिंह पिस्टल वाला,
श्रद्धानन्द था शेर जो सीना खोल खड़ा हो जाता है।। बीत गये............

याद रहेगी नेता की पोशाक अमर वह अफगानी,
अंगरेजों की क़ैद से निकला और बना फिर सेनानी,
फौज सजा कर सिंघापुर में कैसे लड़ने की ठानी,
झण्डा लेकर चला हाथ में और करदी फिर कुर्बानी,
दिल्ली चलो चलो अब दिल्ली ये आवाज लगाता है।। बीत गये............

माता स्वरूपा रानी ने क्या कुल में जादू डाल दिया,
दशरथ रूपी मोती लाल ने कितना स्वयं कमाल किया,
विश्वामित्र रूपी गांधी की झोली में सुत डाल दिया,
देश की खातिर अपना प्यारा बेटा जवाहर लाल दिया,
जिसका लेकर नाम अभय श्रद्धा से शीश झुकाता है।। बीत गये............

गाँधी सी अंगूठी में जवाहर सा नगीना

मात स्वरूपा रानी ने क्या कुल पै जादू डाल दिया ।
दशरथ रूपी मोती लाल ने कितना स्वयं कमाल किया ।।
विश्वामित्र रूपी वापू की झोली में सुत डाल दिया ।
देश के कारण अपना प्यारा बेटा जवाहरलाल दिया ।।
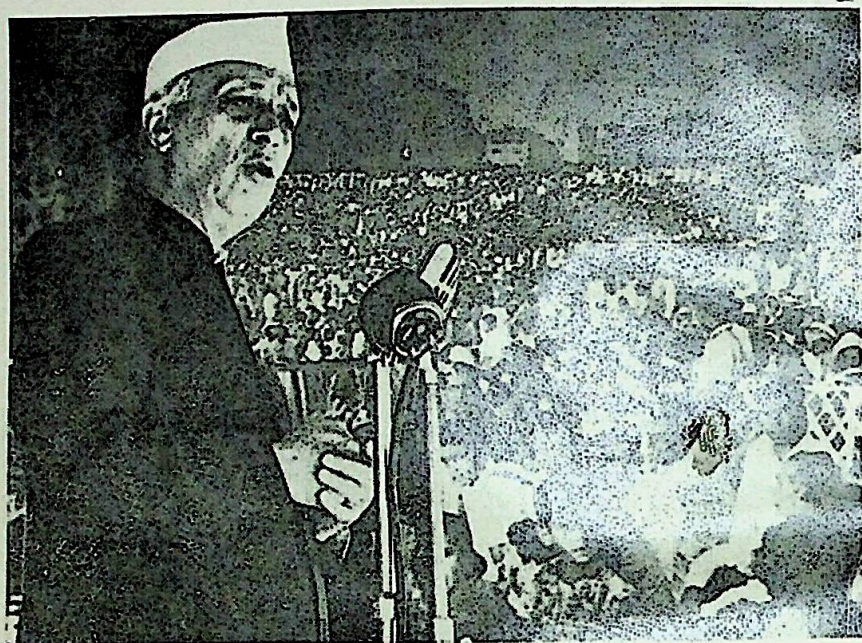
आओ वीरों काम करें, भारत माँ का नाम करें ।
जब तक ना हो सुखी देश हम आराम हराम करें ।।
श्रम का सूरज प्रगटाकर तम को दूर भगायेंगे ।
तजकर अति प्राचीन रूढ़ियां भारत नया बनायेंगे ।।

आज़ादी का सूरज निकला आया नया सवेरा ।
मानवता की हवा चलाकर करदो दूर अंधेरा ।।
नये राष्ट्र में नये तीर्थों पर लहरा रहे तिरंगे ।
यहीं है तेरी मथुरा काशी यहीं है यमुना गंगे ।।

निम्नांकित गीत जो पं० जवाहर लाल नेहरू के सम्बन्ध में है जनता बहुत ध्यान से सुनती थी।

गीत

मैदाने जंग में जो चला खोल के सीना।
गांधी सी अंगूठी में जवाहर का नगीना॥

सर बांधे क़फ़न लेके वह हिम्मत का सहारा,
आगे को ही बढ़ता गया मोती का दुलारा,
खूं अपना बहाया जहाँ दीनों का पसीना॥ गांधी सी अँगूठी......

ताज़ी है याद आती है कमला की कहानी,
समझा नहीं उसने किसे कहते हैं जवानी,
मरने से भी बदतर है गुलामी का वो जीना॥ गाँधी सी अंगूठी......

जीवन में सदा फूल खिले कांटो पे चला था,
आज़ादिये शमां पर बन परवाना जला था,
एहसान जिसके भारत भूलेगा कभी ना॥ गाँधी सी अंगूठी......

जब सारे संसार में गुलामी की काली घटा छायी हुयी थी ऐसे समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वराज शब्द की याद दिलायी। सामाजिक परिवर्तन का बीड़ा उठाया तथा सारे संसार को नया प्रकाश देकर सबके उपकार की बात कही। निर्बल वर्ग को ऊपर उठाने के लिये कार्य करना आरम्भ किया। निम्न गीत में यही भावना जागृत की गयी है।

गीत
(स्वामी दयानन्द सरस्वती)

संसार का किया है उपकार महऋषि ने।
हंस-हंस के विष पिया है कई बार महऋषि ने॥

विधवा अनाथ बेकस निष्प्राण हो चुके थे,
सबको गले लगाया किया प्यार महऋषि ने॥ संसार का... ... ...

पाखंड को मिटाया वेदों की रोशनी से,
सत्यार्थ से किया है प्रचार महॠषि ने ।। संसार का… … …

नारी को मात्र शक्ति ॠषि ने ही था बताया,
इनको दिला दिये सब अधिकार महॠषि ने ।। संसार का… … …

जिसने जहर दिया था उसको भी माफ करके,
अभयराम तज दिया था संसार महॠषि ने ।। संसार का… … …

गांधी जी के सम्बन्ध में भी उन्हीं दिनों निम्न गीत लिखकर जन सभाओं में सुनाया गया।

गीत

गांधी जी संसार को संदेश दे गये।
सच्ची सेवा प्रेम का उपदेश दे गये ।।

सत्य के आधार पर भी गांधी की कहानी,
दुनिया ने मानी है उनकी ये वानी,
प्यार किया उससे भी जो क्लेश दे गये ।। सच्ची सेवा……

जीता नहीं कभी कोई जग में हथियारों से,
जीता है यदि कोई तो सत्य के विचारों से,
सबसे ज्यादा बात ये विशेष दे गये ।। सच्ची सेवा……

बुरा जो करे है तो न उसकी भी बुराई कर,
भला जो चाहे तो अभय जग की भलाई कर,
जनता ही बनाये वह नरेश दे गये ।। सच्ची सेवा……

जवाहर लाल नेहरू के आह्वान पर सारे देश में विकास कार्य होने लगे। उस समय निर्माण के लिए लोकगीतों की धुन पर वहुत से गीत कहानियां व नाटक लिखे गये। उनमें से कुछ गीत निम्नांकित हैं।

परिश्रम गीत

चलो नौजवानों कुछ करके दिखा दो।
पसीना बहा धूल सोना बना दो ॥
घृणा को घृणा से कठिन जीत पाना,
कठिन बैर को बैर से है दवाना,
बड़ी ही कठिन राह इस जिन्दगी की,
बना दो इसे तुम सुकोमल बना दो ॥ पसीना बहा···
बड़ा ही सरल है बने को मिटाना,
बड़ा ही सरल है उठे को गिराना,
सरल है नहीं किन्तु निर्माण करना,
अगर कर सको तो इसे कर दिखा दो ॥ पसीना बहा···
चले सोच कर जो जवानी नहीं है,
चले सोच कर आग पानी नहीं है,
जवानी कभी सर झुकाती नहीं है,
यही गीत गावो औरों से गवा दो ॥ पसीना बहा···

———

राष्ट्र निर्माण के लिये प्रथम पंच वर्षीय योजना के द्वारा जगह जगह नये नये कार्यो का शुभारम्भ हुआ। जनता को श्रमदान करके सड़के व अन्य कार्यों को पूरा करने के लिये भी प्रोत्साहित किया गया। निम्न गीत में यही भावना जागृत की गयी है।

श्रमदान–गीत

आवो वीरो काम करें भारत मां का नाम करें।
जब तक ना हो सुखी देश हम तब तक ना आराम करें ॥
आजादी की नई किरण से मन के दिये जलायेगें,
ज्ञान का सूरज प्रगटा कर के तम को दूर भगायेंगे,

छूत छात का सर्प विषैला इसको मार भगायेंगे,
तज कर अति प्राचीन रुढ़ियां भारत नया बनायेंगे,
प्रेम की गंग बहा कर के अपने उन्नत ग्राम करें ।।
आओ वीरों...............

पैदावार बढ़ाकर अन्न की देश की भूख मिटायेंगे,
और करके उद्योग देश में सारी चीज बनायेंगे,
तन मन और धन अर्पन करके देश का मान बढ़ायेंगे,
राम राज के सपने को अब कर साकार दिखायेंगे,
नये राष्ट्र में नये तीर्थ कर जग का उत्तम धाम करें ।।
आओ वीरों...............

रुकने पाये नहीं फावड़ा चले दना दन बढ़े चलो,
करने को श्रमदान बहादुरों कंगाली से लड़े चलो,
श्रम का प्याला पीकर संकट अपने देश के हड़े चलो,
और करके श्रृंगार पसीना तूफानों से अड़े चलो,
अभयराम बापू का सपना वही जमाना राम करें ।।
आओ वीरों...............

चौ० जो पांचहि मत लागे नीका – हरषि करु रामहि टीका ।

पंचायत गीत

मिल जुल कर हम पांच साल का सफल सभी प्रोग्राम करें ।
राम राज आ जाये जो हम पंचायत से काम करें ।।

अपना काम हम आप करेंगे मन में यह शुद्ध भाव करें,
देकर के सहयोग सदस्यों को सब दिल में चाव करें,
बना बना प्रस्ताव सभी प्रधान को पेश सुझाव करें,
सुन्दर गांव बने जिससे ऐसे पास प्रस्ताव करें,
न्याय पंचायत के द्वारा अपने झगड़े दूर तमाम करें ।।
राम राज आ जाये जो हम.........

नई नहीं है पंचायत की बातें है बहुत पुरानी,
सुनी बुजर्गों से सर माथे जो पंचो की बानी,
पंचभूत और पांच यज्ञ हैं पांच तत्व का प्रानी,
पांच समय की नमाज से ही चलती है मुसलमानी,
इंसानी में फर्ज हमारा इसका पालन आम करें ॥
राम राज आ जाये जो हम.........

ग्राम देवता मेहनत तेरा छोड़ ये धर्म कभी ना,
हरी चुनरिया उढ़ा के भू को कर श्रंगार पसीना,
जहां जहां ये पड़ जायेगा वो धरती बने नगीना,
करने को निर्माण देश का चलो खोल के सीना,
श्रम का प्याला पीकर के काम सभी अभयराम करें ॥
राम राज आ जाये जो हम.........

नव युवकों में देश प्रेम एवं परिश्रम करने की भावना जागृत करने हेतु निम्न गीत लिखा और जन सभाओं में सुनाया गया।

गीत

हमने बढ़ना सीख लिया नहीं पीछे कदम हटायेगें ।
दिन दूने और रात चौगुने आगे बढ़ते जायेंगे ॥

संघर्षण में जीवन है पड़े तो सुस्ती छाती है,
हाँडी से घी निकले जब रई चारों ओर घुमाती है,
चंचल सरिता में महामस्ती आगे बढ़ती जाती है,
बढ़े चलो रे बढ़े चलो नित ये ही नाद गुंजाती है,
सड़े पड़े तालाब का सा न जीवन व्यर्थ गवायेंगे ॥
दिन दूने और...........

श्रम की बूंदे डाल डाल कर भूकी प्यास बुझानी है,
हरी चुनरिया उढ़ा के इसको फिर से हमें सजानी है,
पैदा करती वीर सदा ये इसकी अमिट निशानी है,
इसके कारण नौजवानी ने करी बहुत कुर्बानी है,
हम भारत के लाल मात का मिल कर मान बढ़ायेंगे ॥
दिन दूने और............

पर्वत नदिया जंगल जो इसका भरपूर खजाना है,
बना बनाकर बांध बहुत से बिजली यहाँ बनाना है,
इनके द्वारा ही भारत को फिर स्वर्ग समान कराना है,
राम राज के सपने को कर साकार दिखलाना है,
भूख गरीबी बेकारी की जड़ को काट गिरायेगें ॥
दिन दूने और.........

भारत मां के वीर सपूतों कदम बढ़ायें चलते चलो,
देश प्रेम और मानवता का द्वीप जलाये चले चलो,
भूले भटके मिले जो राह में गले लगाये चले चलो,
जय हिन्द के नारे का जग में नाद गुजाये चले चलो,
अभयराम अब देश प्रेम के गीत बनाकर गायेंगे,
दिन दूने और...........

मिल जुलकर पुरुषार्थ करने के सम्वन्ध में ही निम्न गीत है ।

गीत

भूलो पिछली भूले और नया ढंग अपनाओ ।
नई उमंगे नई तरंगे लेकर देश बनाओ ॥

एक पिता के पुत्र सभी हम कर लो भाईचारा,
होकर एक समान करो सब दुःखो का बटवारा,
दीन दुखी अबला निर्बल को मिल कर गले लगाओ ॥
नई उमगें............

कायरता संकीर्ण भाव और बदी भाड़ में डालो,
सजन्नता सच्चाई और पुरुषार्थ के शस्त्र सम्भालो,
दूर नहीं है मंजिल देखो बुला रही है आओ ।।
नई उमंगे............

मजबूर समझकर अगर किसी पर कोई पाप करेगा,
उसे भविष्य अभयराम बिल्कुल नही माफ करेगा,
नया उजाला लेकर हृदय का अंधकार मिटाओ ।।
नई उमंगें............

जव कुछ कार्य होने लगे और उनसे कुछ आशायें वनी तव निम्न गीत लिखकर जन सभाओं में सुनाया ।

गीत

प्यारा भारत वर्ष हमारा देश महान बनेगा ।
थोड़े दिन के बाद देखना स्वर्ग समान बनेगा ।।

नाम मात्र भी नहीं रहेगी भारत में कंगाली,
देश की रक्षा कर सकते है किसान शिल्पी हाली,
चोर और जार नही होंगे फिर ना हो ताले ताली,
सच्ची सेना फौज पुलिस हो भारत की रखवाली,
हर एक युवती युवक देश भारत की शान बनेगा ।।
थोड़े दिन के बाद............

वायुयान रेलों के इंजन यहाँ बनाये जा रहे,
पंखे रेडियों बिजली के घर घर पर में लगाये जा रहे,
बिजली के कुएं बहुत खेतों में खुदवाये जा रहे,
करे रोशनी बिजली के ही बल्ब जलाये जा रहे,
पहले जैसा भारत का फिर शिष्य जहान बनेगा ।।
थोड़े दिन के बाद............

अगर जरुरत धन की हो तो धनवानों तुम धन दे दो,
अगर नही दे सकते धन तो देश को अपना तन दे दे,
अगर पास नहीं है कुछ भी तो वो अपना मन दे दो,
आज देश के लिये जवानों तुम अपना जीवन दे दो,
अभयराम सेवा और श्रम से ही उत्थान बनेगा ।।
थोड़े दिन के बाद...........

इसी निर्माण के दौर में जन साधारण को जाति पाँति तोड़ने, छुआछत और ऊँच नीच के भेद भाव को भगाने के सम्बन्ध में भी प्रेरित किया गया ।

गीत

मिल जुल करके भेद भाव की दीवारों को तोड़ दो ।
भारतीयों, करो एकता टूटी लड़िया जोड़ दो ।।

बड़े बड़े बलिदानों से हमको अपना राज मिला,
देश को सुधारने का अवसर ये आज मिला,
आगे बढ़ने की अब लगा दिलों में होड़ दो ।।
भारतीयों, करो एकता...........

जिसके कारण देश हमारा कई बार बरबाद हुआ,
तब तब गुलाम बना जब जब आजाद हुआ,
इस विनाशिनी फूट का सर फोड़ दो ।।
भारतीयों, करो एकता

मेल संगठन में ही करते सुख सम्पत्ति वास सदा,
अलग अलग रहने में होता है विनाश सदा,
जात पात का आओ मिल कर भण्डा फोड़ दो ।।
भारतीय, करो एकता...........
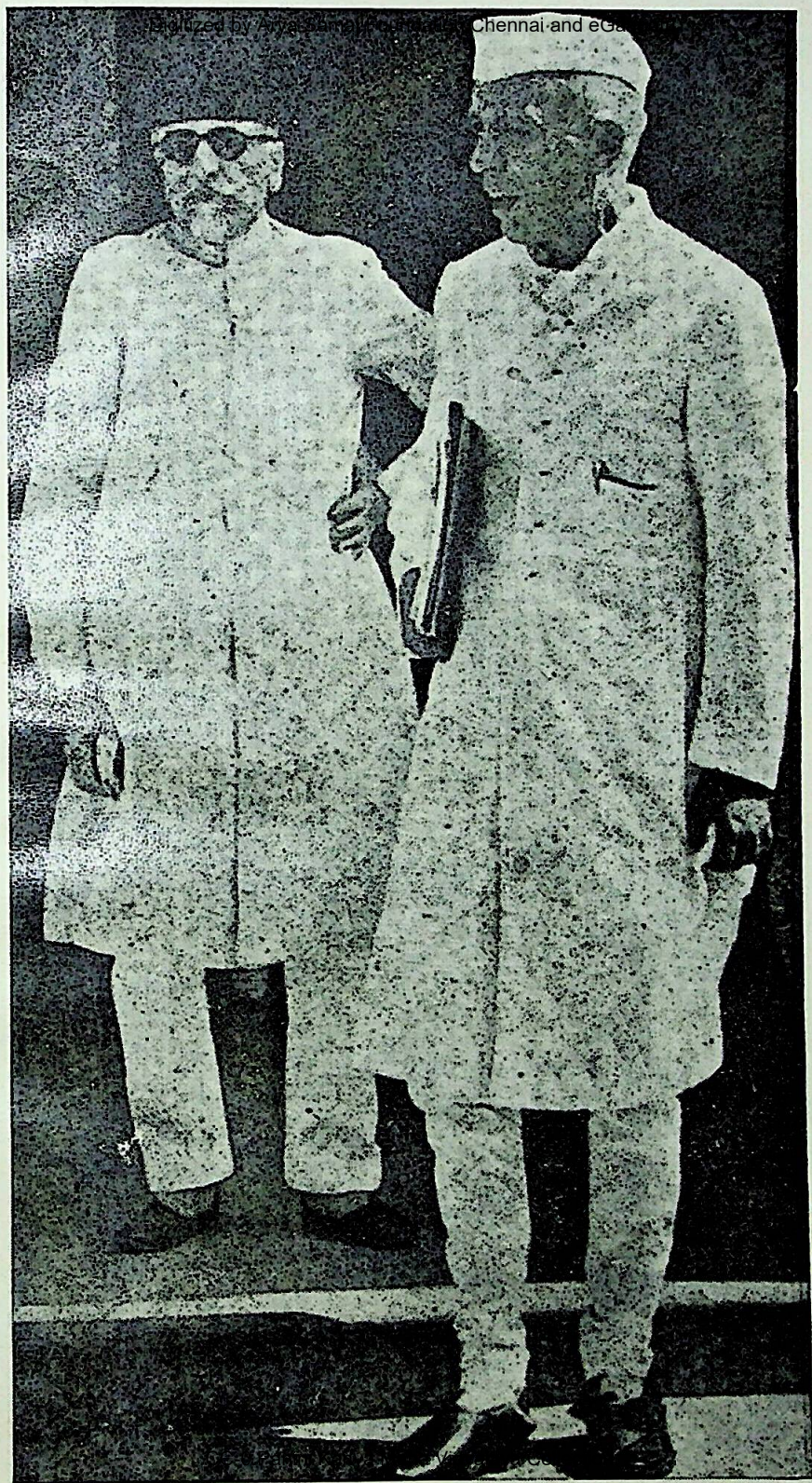
मोहब्बत से गले मिलने मिलाने की जरुरत है।

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

क़ौमी एकता

नहीं कोई है ज्यादा व कम बराबर ।
गंगा का जल आवे ज़म ज़म बराबर ।।
है हे से हिन्दू म से मुस्लिम बराबर ।

हिन्दू मुसलमान हैं हम बराबर ।।

विकास के लिए ही निम्नलिखित गीत वनाकर जन सभाओं में सुनाया गया–

गीत

जब बना लिया प्रोग्राम, रूके क्या काम ।
चलो रही, देखो ये पथ भूल न जाना ।।
आने वाली याद करेगी तुझको प्यारी नस्ले,
दूर है मंजिल तय करने को कमर को अपनी कसले,
माना कि मंजिल दूर, है जाना जरूर,
चलो राही, देखो…………

आजादी का सूरज निकला आया नया सवेरा,
मानवता की हवा चला कर कर दे दूर अंधेरा,
नित करके श्रमदान, डालने जान,
चलो राही, देखो…………

नये राष्ट्र में नये तीर्थो पर लहरा रहे तिरंगे,
यही है तेरी यमुना काशी यही है जमना गंगे,
अभयराम सुनाकर गीत बढ़ाकर प्रीत,
चलो राही, देखो…………

निर्माण व श्रमदान के साथ-साथ अन्न की पैदावार वढ़ाने व वच्चों की पैदावार घटाने हेतु निम्न गीत लिखा और जन सभाओं में गाया गया । अगरचे इन दिनों परिवार नियोजन के सम्वन्ध में शासन की ओर से कुछ भी कहने का कोई संकेत नहीं था । लेकिन भगवन्त सिह जी स्वयं ही अपने विवेक से राष्ट्र की आवश्यकताओं के सम्वन्ध में सुझाव दिया करते थे। उन्हीं के संकेत से कभी कभी परिवार नियोजन की चर्चा अपने गीतों में करनी आरम्भ कर दी थी। दर्शकगण बहुत ही ध्यान देकर और मनोरंजन के साथ इसे सुनते थे ।

गीत

हिन्दुस्तानी भाई-भाई मिलकर कदम बढ़ाओ रे।
अपने प्यारे भारत को फिर स्वर्ग समान बनाओ रे।।
अन्न संकट के बादल घिर-घिर चंहु ओर से आते हैं,
अन्न मंगावें बाहर से फिर भी भूखे रह जाते हैं,
पैदावार बढ़ाकर अन्न की देश की भूख मिटाओ रे।।
अपने प्यारे भारत............

एक साल में हम जितना भी आगे को बढ़ पाते हैं,
जन संख्या बढ़ने से उतना पीछे को हट जाते हैं,
इस बढ़ने के ऊपर भी अब कुछ तो रोक लगाओ रे।।
अपने प्यारे भारत............

ऊंच नीच का भेद मिटाके देश की ऊँची शान करो,
सुन्दर गांव बने जिससे डट कर के श्रमदान करो,
अभय राम अब देश प्रेम के मिलकर गाने गाओ रे।।
अपने प्यारे भारत............

सारे देश में श्रमदान द्वारा सड़कें आदि वनाने की इक होड़ सी लग गयी थी। जगह-जगह युवक तथा अन्य लोग मिल कर श्रमदान करते हुए चल दनादन फावड़े, आदि गीतों को गाने लगे थे। नया-नया जोश था। सहारनपुर के वरिष्ठ जिलाधिकारी (कुछ दिनों पश्चात उप विकास आयुक्त) भगवन्त सिंह तथा जनप्रिय नेता माननीय ठाकुर फूलसिंह की प्रेरणा से सहारनपुर नगर से डेढ़ मील पश्चिम की ओर यमुना नहर को ताजे वाला हेड वर्क्स से लेकर ४० मील तक श्रमदान से चौड़ा करने का एक विशाल कार्यक्रम सन १९५४ में वनाया गया था। बड़े-वड़े नेताओं चौधरियों एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को इस श्रमदान में सम्मिलित होकर फावड़ा चलाते देखा गया था। इस श्रमदान में दूसरे जनपदों से भी लोग टोलियां वना-वना कर भारत माता की, महात्मा गांधी व पं० जवाहर लाल नेहरू आदि नेताओं की जय बोलते हुए आये थे। भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू जी ने भी स्वयं वायुयान

द्वारा इसका निरीक्षण किया था। मैं भी अपने दल सहित श्रमदान में भाग लेने गया था।

रणखँड़ी गांव के इन्टर कालिज के सैकड़ों विद्यार्थियों से भरा ट्रक इस श्रमदान में जा रहा था। जब ट्रक रेल पटरी पर आया तो सहारनपुर से आती हुई बम्बई एक्सप्रेस गाड़ी से टकरा गया। इस एक्सीडेण्ट में दस ग्यारह जाने चली गयी थीं। देवबन्द उप सामुदायिक विकास खण्ड के ट्रेक्टर ड्राइवर श्री हनुमान प्रसाद भी इस एक्सीडेण्ट में मारे गए थे। वही रेल पटरी के पास जड़ोदा जट गांव घटमलपुर में इन मृतकों की याद में एक स्मारक बनाया गया था, जिसका शिलान्यास भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम राजेन्द्र प्रसाद जी ने किया था। उक्त घटना के सम्बन्ध में उस समय एक गीत लिखा था और उसी जन सभा में गाया था जिसमें राष्ट्रपति महोदय का भाषण हुआ था। गीत निम्नांकित है—

गीत

देश के कारण जिन वीरों की होती है कुर्बानी।
उन वीरों की सदा जगत में होती अमर कहानी॥

पूर्वी यमुना नहर के ऊपर लगा था श्रम का मेला,
गया देश की सेवा करने वहाँ युवक अलबेला,
टोली बनाकर गये कई कोई गया था युवक अकेला,
रणखंड़ी से शाम समय भर चला था मोटर ठेला,
श्रमदान करने की छात्रों ने निज मन में ठानी॥ उन वीरों······
कालिज से जब चले वीर ये बना-बनाकर टोली,
करी नमस्ते सबने फिर जय भारत मां की बोली,
चलकर आये लाइन ऊपर तो खिली खून की होली,
दस छात्रों की गई वहाँ पर प्रिय जान अनमोली,
बम्बई वाली गाड़ी आई बन गई मानस खानी॥ उन वीरों······
पांच बजकर बीस मिनट पर जो ये नर संहार हुआ,
सुना ये किस्सा जिसने भी दुखी वही नर नार हुआ,
भूल गये सब खाना पीना कष्टों का अम्बार हुआ,
कालिज में जब गई खबर तो कृपाल सिंह लाचार हुआ,
कितने सस्ते भाव लुटी यह उठती हुई जवानी॥ उन वीरों ·····

लेकिन माँ का हाल न पूछो जिनके बेटे बिछड़ गये,
बने बनाये खेल आज क्षण भर में सारे बिगड़ गये,
आशाओं के सब्ज बाग एक-दम सारे उजड़ गये,
होनी होकर के रहती यहाँ आ-सब माथा रगड़ गये,
जीवन भर नहीं रुकेगा माँ के नैनों का पानी ॥ उन वीरों······

त्रिलोक सिंह, सत्यपाल सिंह और अमर ओऽम् वीर हुये,
मोहर सिंह और जीत सिंह ओम प्रकाश रणधीर हुये,
जगत सिंह और बनी सिंह मुस्तफा हसन अक्सीर हुये,
देवबन्द के प्रोजेक्ट के हनुमान प्रसाद बलबीर हुए,
घटमल पुर रणखंडी में है उनकी अमर निशानी ॥ उन वीरों······

पौढ़ शिक्षा गीत

अक्षर आंखे कहलाती है बात ध्यान में लाओ।
बिना पढ़े कुछ पढ़ो लिखो और साक्षर बन जाओ ॥

मानव चोला पाकर के व्यर्थ ही इसे गंवाया,
भेद रहा क्या पशु मानव में जब केवल पीया खाया,
करो रोशनी शिक्षा से हृदय का अंधकार मिटाओ ॥
बिना पढ़े कुछ············

अक्षर ज्ञान से निराशा का फूट जाता है भंडा,
उन्नत पथ पर जाने को सीढ़ी का पहला डण्डा,
कुछ तो पढ़ो पढ़ाओ और उन्नत पथ को पाओ ॥
बिना पढ़े कुछ··········

अशिक्षा है अंधियारा और साक्षर प्रकाश है,
साक्षर है स्वतंत्र निरक्षर रहे ग़ैर का दास है,
मानव बनकर अभय हृदय का अंधकार मिटाओ ॥
बिना पढ़े कुछ···········

तरन्त स्याम दुर्गंहा ।। वेद
हम कठिनाइयों को तैरने वाले बने ।।

गीत

कांटों से भरी ये मंज़िल है और बहुत कठिन ये रस्ता है ।
चलने वाला बिना रूके इस राह पर चलता रहता है ।।
इस राह पर चलने वालों ने क़फन सरों से बांधा है ।
विष की प्याली पीकर भी दीवाना हंसता रहता है ।।
कांटों से भरी............

कोई दर्द को लेकर चलता है कोई फर्ज़ को लेकर चलता है ।
कई सौदागर भी कहते कि बहुत ये सौदा सस्ता है ।।
कांटों से भरी............

ये बलिदान की वेदी है और देश हेत का मारग है ।
देखो तो ये फूल लगे पर कांटों का गुलदस्ता है ।।
कांटों से भरी............
उस मरने में भी जीने से बढ़ कर ही मज़ा आता होगा ।
शमां के ऊपर परवाना जूं आकर के जल मरता है ।।
कांटों से भरी............

सामुदायिक विकास क्षेत्रों द्वारा खोले गये युवक मंगल मिलन केन्द्रों में गाये जाने वाले विकास गीतों का उस समय बहुत अभाव था। कुछ गीत इसी उद्देश्य से लिखे गये। निम्नाँकित गीतों में युवकों को नयी आवश्यकताओं से अवगत कराया गया है।

युवक मंगल दल गीत

ऐ नौजवां वतन के दुनिया नई बना दे ।
कहने का युग नहीं है कुछ करके अब दिखा दे ।।
पीछे तेरे से जो थे आगे निकल गये हैं,
लटके हुए अधर में पूरे सम्भल गये हैं,
सूरज चढ़ा शिखर पर सोतों को तू जगा दे ।। कहने का.....

कमियाँ समाज मे है छोटा कोई बड़ा है,
सोया है पेट भर के भूखा ही इक पड़ा है,
भूखे हैं जो वतन में खाना उन्हें खिला दे ।। कहने का……

मंजिल तेरी कड़ी है और दूर है ठिकाना,
पीछे न पग हटाना आगे क़दम बढ़ाना,
अटकी भवर में नैया साहिल से ये लगा दे ।। कहने का……

तू चाँद बनके मानव धरती पे अब चमक जा,
जो खोट है जला दे क़ुन्दन सा बन दमक जा,
अभयराम रौशनी से दीपक मुझे जला दे ।। कहने का……

युवक मंगल दल गीत

आगे बढ़ते जाना-देश का बन दीवाना,
आजाद है तू ये माना-इसको दूर भगाना,
वतन में गरीबी, बड़ी बदनसीबी,
न फिर हमसें कहना बताया नही था ।।
आगे बढ़ते जाना……

ज्ञान के सबेरे में, तू क्यों अधेरे में,
भूख और गरीबी घुसी देख तेरे डेरे में,
जड़ से मिटाके ऊंचा देश उठाना, देश उठाना ।।
आगे बढ़ते जाना……

भारत मशहूर कर दे, बड़ी दूर दूर कर दे,
दुनिया का नूर कर दे, धन से भरपूर कर दे,
दुनिया ये गाने लगे तेरा ही तराना, तेरा तराना ।।
आगे बढ़ते जाना……

रोशनी दिखाता चल, प्यार को लुटाता चल,
अभयराम पिछड़ों को गले से लगाता चल,
जिन्दगी की राहों में पसीना बहाना, पसीना बहाना ।।
आगे बढ़ते जाना……

युवक मंगल दल गीत

देश के उपकार में, ज़िन्दगी बितानी है ।। ज़िन्दगी बितानी है ।।
पढ़ने के अलावा भी खेतों में काम करें,
जब तक न हो गरीबी दूर नहीं आराम करें,
अपने भारत देश का जग में ऊँचा नाम करें,
ग्राम के उद्धार में, ज़िन्दगी बितानी है ।। देश के............

थोड़ी सी जमीन में भी ज्यादा पैदावार करें,
नये नये वैज्ञानिक ढंग से भूमि को तैयार करें,
झगड़े बिस्मार करें आपस में प्यार करें,
काम के विस्तार में ज़िन्दगी बितानी है ।। देश के............

गांव में जब रहे तो गांव की भलाई करें,
झूठी ना बड़ाई करे मन से समाई करें,
स्कूलों में घड़ी पेन पैदा दियासलाई करें,
अभयराम प्रचार में ज़िन्दगी बितानी है ।। देश के............

उक्त गीतों के साथ-साथ स्त्री शिक्षा पर भी कुछ गीत लिख कर जन सभाओं में सुनाये । उनमें से कुछ गीत निम्नांकित हैं :

गीत (महिलाओं का)

देश की महिलायें भी यदि कदम बढ़ायें ।
जल्दी ही देश मेरा सुखी बन जाये ।।

पर्दा जहालत का जब से पड़ा है, इसी ने सारे सुखों को हड़ा है,
पर्दा जहालत का जल्दी हटायें ।। जल्दी ही............

सोने में सोना गया अब ना सोना, खोया बहुत वक्त आगे न खोना,
उठो जन्म हीरा ना यो ही लुटायें ।। जल्दी ही............

ज़ेवर तुम्हारा न लौकिट व लच्छे, ज़ेवर तुम्हारा अच्छे हों बच्चे,
बच्चों को वीर यदि माता बनायें ।। जल्दी ही............

घर में कलह ने गाड़ा है झण्डा, पति और पत्नी में बज रहा डंडा,
झगड़े मिटा गंगा प्रेम की बहायें ।। जल्दी ही............

किसको सुनाता है अभयराम गाना, पहले ये गाना अपने घर भी सुनाना,
जिससे कि तेरे भी घर मौज आये ।। जल्दी ही............

माता निर्माता भवति ।। माता निर्माण करने वाली होती है ।।

गीत

(तर्ज-रेशमी सलवार)

संसार की महिलायें ही निर्माता हैं ।
इसीलिए तो मां का ऊँचा नाता है ।।

नौ मास गर्भ में रख कर मां भारी संकट सहती,
बच्चे को खिलाती पहले खुद भूखी प्यासी रहती,
प्यारी माता है ।। इसीलिये तो ... ...

दे देती जो शिक्षा मां बच्चे को बचपन में,
वह सदा साथ रहती है बच्चे के जीवन में,
सुख दुख पाता है ।। इसीलिए तो ... ...

मां चाहे तो सुत को कायर और क्रूर बना दे,
बन कर के जीजाबाई शिवा सा शूर बना दे,
भाग्य विधाता है ।। इसीलिए तो ... ...

जो देश बनाना चाहो तो मां को बनाओ पहले,
राम राज जो चाहो कौशल्या को लाओ पहले,
अभयराम गाता है ।। इसीलिये तो ... ...

गीत

(महिलाओं का)

छोटी छोटी बातों का बढ़ाना बुरी बात है।
आपस में लड़ना लड़ाना बुरी बात है ॥
मर्दों को चाहिये कि मेहनत से काम करें,
महिलायें भी अपने घर का ठीक इन्तज़ाम करें,
क़ाहिली के जीवन को बिताना बुरी बात है ॥ आपस में... ... ...

प्रेम से है स्वर्ग और द्वेष से नर्क है,
स्वर्ग और नर्क में इतना ही फर्क है,
द्वेष की आग को भड़काना बुरी बात है ॥ आपस में... ... ...

पिता पुत्र सास बहु भाइयों में प्यार हो,
अभयराम स्वर्ग फिर सारा ही संसार हो,
प्रभु की आज्ञा ठुकराना बुरी बात है ॥ आपस में... ... ...

गीत

(महिलाओं का)

अपने देश को स्वर्ग बनायें बहनों ॥ बनायें बहनों ॥
अच्छे अच्छे गाने गाकर, संतानों को बीर बनाकर
भय का भूत भगायें बहनों ॥ अपने ... ...

विद्या पढ़ विद्वान बनेगी, भारत का अभिमान बनेगी
सोता देश जगायें बहनों ॥ अपने ... ...

पति ससुर देवर जेठानी-सब से चाहिये प्रीति बढ़ानी
सास के चरण दबायें बहनों ॥ अपने ... ...

साफ रहे नित घर और वस्तर, घर घर आगे धरे कनस्तर
वहां कूड़ा डाल कर आयें बहनों ॥ अपने ... ...

गोवर ना बरवाद करेंगी, इससे तेयार अब खाद करेंगी
चूल्हे में लकड़ी जलायें बहनों ॥ अपने ... ...
बनने वाली हो यदि माई, बुलवा कर होशियार सी दाई
उससे नार कटवायें बहनों ॥ अपने ... ...

बच्चों को नित नहला धुला कर, भाव भरे नित दिल बहलाकर
अभयराम के गीत सुनायें बहनों ॥ अपने ... ...

योजनाओं को चलाते रहने के लिए तत्काल धन की आवश्यकता थी। भारत में उस समय धन की वहुत कमी थी। विदेशों से क़र्ज लेकर योजनायें चलाते रहने पर वहुत सारा धन क़र्ज व उसके ब्याज के रूप में विदेशों में जाता दिखायी दिया। फलस्वरूप अल्पबचत योजना बनायी गयी। लोग अपनी थोड़ी आमदनी से भी छोटी वचत करके डाकखाने या बैंक में जमा करें। उन्हें अच्छा ब्याज देने का प्राविधान किया गया। इसके प्रचार की बड़ी जरूरत थी। इसलिए इस योजना के सम्बन्ध में कुछ गीत लिख कर जन सभाओं में सुनाये।

अल्प बचत योजना गीत

आमदनी अपनी को ना व्यर्थ करो बरबाद।
इसे बचाओ जमा करो तो सुखी रहे औलाद॥

सेविंग सार्टीफिकेट खरीदो डाकखाने से भाई,
सबसे ज्यादा लाभ है इससे कल कोमिटे तबाही,
सौ के एक सौ पैसठ मिलते बारह साल के बाद॥ इसे बचाओ.........
लेते है यदि कर्ज विदेशी होता हर्ज हमारा,
आज देश की खातिर धन दे है ये फ़र्ज हमारा,
सभी योजना सफल बने जो भारत की बुनियाद॥ इसे बचाओ.........
भारत के इस शुष्क चमन में फिर से फूल खिलेंगे,
आम के आम मिलेंगे और गुठली के दाम मिलेंगे,
क़ायम रखनी अभयराम हमें बापू की मर्याद॥ इसे बचाओ.........
नोट : आजकल यह धन दोगुने से भी ज्यादा मिलता है।

गीत

आजादी का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिये ।
नर्क कुन्ड जो बना देश में स्वर्ग बनाना चाहिये ।।
आज़ादी के आते ही बढ़ गये है रोग हज़ार यहाँ,
ब्लैक डकैती रिश्वत खोरी फैला भष्टाचार यहाँ,
बड़े-बड़े जन सेवक तक भी इसके हुए शिकार यहां
घटती नही है बढ़ती जा रही बैढंगी रफतार यहाँ,
बेकार यहाँ फिर रहे हजारों इन्हें काम दिलाना चाहिए ।। नर्क कुण्ड......

विदेशों से जो अपने देश मे माल मंगाया जावे,
इसके बदले सोना चाँदी विदेश में हम पहुंचावे,
रुपया और को जो देते उसे अपने यहाँ बचावे,
छोटी मोटी चीज जो भारत अपने यहाँ बनावे,
लगावे अपने कामों में ना खर्च बढ़ाना चाहिए ।। नर्क कुण्ड......

गांव-गांव में सफाई हो तो कोई गली न गन्दी हो,
शराब सुलफा भांग चरस की भारत में पाबन्दी हो,
छोड़ लड़ाई झगड़े जो अब खेती की चकबन्दी हो,
अन्न दाता के घर घर अन्दर फिर तो आखा नन्दी हो,
मंदी हो जाय कंगाली इसे दूर भगाना चाहिये ।। नर्क कुण्ड......

बेल कलह की बढ़ी देश में इसे तोड़ के धर दो,
भारत में परमारथ के अब भाव दिलों में भर दो,
गांव गांव में पंचायत को फिर से बना अमर दो,
जो आवे स्वार्थ को लेकर उसका तोड़ असर दो,
जनहित में अब अभयराम प्रचार सुनाना चाहिये ।। नर्क कुण्ड......

प्रथम पंचवर्षीय योजना से गांव गांव में सड़कें बनने लगीं। बहुत से गांव में बिजली भी लगने लगी। नये नये खाद बीज से किसानों की खेती भी लहलहाने लगी तब निम्न गीत बना कर जन सभाओं में गाया गया।

गीत

सकल देश में चारों तरफ मच रही आज हल चल है।
नये राष्ट्र में नूतनता से दुनिया रही बदल है॥
पिछला पांच साल का हमने जो भी प्लान बनाया,
इसके द्वारा अधिक अन्न है खेतों में उपजाया,
बढ़िया बढ़िया खाद बीज है देख देख अपनाया,
बाहर से आता था जितना उतना ना अन्न मंगाया,
भारत वासी पहले से अब ज्यादा गये सम्भल हैं॥ नये राष्ट्र में ···

शिक्षा देकर बिना पढ़े अब बहुत पढ़ाये जा रहे,
बीमारों के लिये बहुत अस्पताल खुलवाये जा रहे,
गिरे हुए जो भाई थे वह ऊपर को उठाये जा रहे,
करें रोशनी बिजली के ही बल्ब जलाये जा रहे,
ठौर ठौर पर युवकों के लिये खुल रहे मंगल दल हैं॥ नये राष्ट्र में ···

सभी काम बन जायें यदि इंसान बने इंसान यहां,
छोड़ ईर्ष्या द्वेष परस्पर गायें खुशी के गान यहां,
पनपाये जो मानवता बन जाये वह नौजवान यहां,
फिर तो भारत देश हमारा बन जाये स्वर्ग समान यहाँ,
अभयराम दें छोड़ दिलों से जो भी स्वार्थ छल है॥ नये राष्ट्र में···

गीत

तर्ज–रेशमी-सलवार

देश की सरकार ने यह ठाना है।
थोड़े दिन में देश ये स्वर्ग बनाना है॥
काम का करना छोड़ा तो बढ़ गई है बेकारी,
क्या करें समझ ना आये यों सोचे है नर नारी,
ना मिलता खाना है॥ थोड़े दिन में ··· ··· ···

राष्ट्र के नाम नेहरूजी का संदेश

अगर जरुरत धन की हो तो धनवानों तुम धन दे दो ।
अगर नहीं दे सकते हैं धन देश को अपना तन दे दो ॥
अगर पास नहीं है कुछ भी तो अपना मन दे दो ।
आज देश के लिये जवानों तुम अपना जीवन दे दो ॥

जहाँ सुई न बनती बड़े सामान वन रहे ।
पैटन टैंक राकेट और विमान वन रहे ॥
टेली विज़न और इंजन धन की खान बन रहे ।
देश की रक्षा करने को नौजवान वन रहे ॥

परिवर्तन गीत

बदल रहा है हिन्दोस्तां, नये जमाने का है समां,
धीरे-धीरे बदल रहा है सारा ढंग पुराना ।।

ये मेहनत करने वाले, नदियों में डेरे डाले क्या-क्या कर रहे,
पी देश प्रेम के प्याले, बांहों में बांहें डाले हो अमर रहे,
पर्वत ने दिया शीश झुका, बांध सैकड़ों दिये बना ।। धीरे धीरे…

ये बैल गाय के बछड़े, जो हल में जुड़े है तकड़ें जोड़ी आ रही,
ये खेतों में हरियाली, और गाँव में खुशहाली, दौड़ी आ रही,
देख देख खुश हुआ किसान, गीत खुशी के रहा है गा ।। धीरे धीरे…

मेरी बहन चलावें चरखा और काम करे है घर का, विद्या पढ़ रही,
जिन्हें मतलब था परदों से, देश के अब मर्दो से, आगे बढ़ रही,
लक्ष्मी बाई नूरजहां, कायम कर रही आज फिज़ा ।। धीरे धीरे…

मिलकर सहकारी संघ से, और पंचायत के ढंग से, गांव जी रहा,
तज कर के छान उसारा, चौधरी बना चौबारा, हुक्का पी रहा,
अभयराम मिल रही दवा, सब रोगों की आज यहाँ ।। धीरे धीरे…

परिव्रर्तन गीत

दुनिया बदली भारत बदला चाल बदलते जवान चलो ।
छोड़ के सुस्ती मिल कर सारे करने को श्रमदान चलो ।।

करना है सो कर डालो मिला सुनहरा मौका,
सब शक्ति है पास तुम्हारे कौन है जिसने रोका,
भूल बहुत सी हुई आज तक खाया भारी धोका,
धार बीच में लटक रही है पार करो ये नौका,
दबे हुए मन से क्या होता अब तो सीना तान चलो ।। छोड़ के सुस्ती…

रात गुलामी की बीती जगने की बेला आई है,
युग-युग की सोई ये धरती ले रही अब अंगड़ाई है,
बैठ डाल पर कोयल ने भी मधुर रागनी गाई है,
सकल देश में आज किसी ने जीवन ज्योति जगाई है,
राम राज लाने का वीरों करते हुए आह्वन चलो ॥ छोड़ के सुस्ती···

रामराज का बापू जी का पूरा करना सपना है,
देश प्रेम और एकता का ही मूल मंत्र अब जपना है,
किसी ग़ैर के लिये नहीं ये प्यारा भारत अपना है,
इसकी सेवा करना किसी भी तप से कम ना है,
अभयराम बृजपाल अब करने नव निर्माण चलो ॥ छोड़ के सुस्ती···

अन्य योजनाओं के साथ साथ पशु पालन के लिये भी किसानों एवं अन्यों को प्रोत्साहित किया ।

गीत पशुपालन

पशु पालन, करो तन मन से हो जाओ माला माल रे,
घर घर सुख का वासा हो ॥

गाय भैंस से मिलता है खाने को दूध मलाई,
इनके बेटे हल में चलते करते हैं खेत कमाई,
मूत्र व मल, की खाद अव्वल, अन्न पैदा करे कमाल रे ॥ घर घर···

जननी तो छः सात मास तक सुत को दूध पिलाती,
गऊमाता तो जीवन भर ही दूध पिलाती जाती,
अंत घड़ी, भी खड़ी, खड़ी, खिचवा देती खाल रे ॥ घर घर···

भूल गये पशुपालन को अब भारत के नर नारी,
नहीं दवाई करते हैं यदि होती कोई बीमारी,
भूखी तिसाई, का ही भाई, लेते दूध निकाल रे ॥ घर घर···

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की लोक भाषा में कहीं कहीं नीले को लीला और सफैद को धोला कहते हैं। अगले गीत में शब्दों को इसी प्रकार समझें। यह गीत परिश्रम से सम्वन्धित है।

परिश्रम गीत

चल मेरे लीले चल मेरे घोले आगे कदम बढ़ता चल।
एक एक बूँद पसीने से यह धरती हरी बनाता चल ॥

मेरी तेरी एक बात तू बैल और मै हाली,
कभी चैन से नहीं बैठते जब से होश सम्भाली,
में तो रोटी खा भी लूं तू भूखा ही करे जुगाली,
जेठ की गरमी पोह की सर्दी ली सर पे घटाये काली,
नित करके उपकार जगत पे यह एहसान चढ़ाता चल ॥ एक एक...

लाखों भूखे नंगों की तुझे पेट की आग बुझानी,
नहीं मंगाना पड़े अन्न की पैदावार बढ़ानी,
आये जो आपत्ति उसको ठोकर से ठुकरानी,
अपने पैरों आप खड़े हो ज्योति वतन में जगानी,
तेरी क़िस्मत में मेहनत है फिर काहे घबराता चल ॥ एक एक...

मेहनत करके जीते जो है सफल उन्हीं का जीना,
आलस और प्रमाद से जीवन हो जाता है हीना,
करने को कल्याण देश का चलो खोल के सीना,
भारत माता मांग रही है केवल आज पसीना,
अभयराम मन्डली को लेकर गाता और बजाता चल ॥ एक एक...

राष्ट्रीय सुरक्षा एवं एकता खण्ड

"इस खण्ड में १९६२ से १९६६ तक के गीत हैं"

भारत में विकास कार्य तेजी से हो रहे थे। पड़ोसी देशों को यह तरक्की पसन्द न आई। चीन ने १९६२ में भारत के उत्तरी सीमाओं पर आक्रमण कर दिया। राष्ट्र में प्रचार के सभी माध्यमों को सुरक्षात्मक व राष्ट्र एकता का वातावरण तैयार की आवश्यकता थी। गीतकारों, कहानी व नाटक कारों ने इस वातावरण को तैयार करने में वहुत योगदान दिया। सारे देश में देश प्रेम की इक लहर सी चल पड़ी। आल्हा, महाराणा प्रताप, शिवाजी, झांसी की रानी, सुभाष चन्द्र वोस व अशफाक आदि की वीर रस की कहानियां सुनाई जाने लगीं। उनमें से कुछ निम्नांकित हैं।

गीत

समय आ गया आज देश पर बन जाओ दीवाने,
बन जाओ दीवाने ।।

विष पीकर ओर गोली खाकर जिसने जीना सीखा,
जर्जर भारत माता के सीने को सीना सीखा,
वीर शहीदो की भांति अब बन जाओ परवाने। बन जाओ...

कई बरस से बना हुआ था जो दुनिया में हौवा,
छः घण्टे में खाली कर दिया पुर्तगाल ने गोवा,
पाकिस्तान और चीन तभी से लग गये घात लगाने ।। बन जाओ ..

सावधान रे चीन हमें ना छेड़ जवानी में,
वरना चीनी समझ तुझे हम घोल पिये पानी में,
अभयराम हम देश की खातिर जीना मरना जाने ।। बन जाओ...

सैनिक करें पुकार

गीत

खड़ा हुआ हिम की चोटी पर सैनिक करे पुकार,
सुनो देश वालो हो जाओ तैयार ।।

सीमाओं में देश की भारी संकट है, चीनियों का पड़ा हुआ वहां जमघट है,
बार बार ललकार रहा है हमको ये हरबार ।। सुनो देश वालों............

वर्फीली चट्टानों पै है बनी डगर, वहीं पड़े हुए चीनियों से ले टक्कर,
जला जवानी मना रहे हैं दीवाली का त्योहार ।। सुनो देश वालों............

जितने भी हम रात दिन दबते ही रहे, उतने ही हमलावार ये बनते ही रहे,
सो गाली शिशुपाल की अब तो हो गई आखिरकार ।। सुनो देश वालों............

क़दम हमारे कुछ भी हो बढ़ते ही रहे, जब तक दम मे दम है हम लड़ते ही रहे,
अभयराम हो जीत हमारी रण में आखिरकार ।। सुनो देश वालों............

चीनी आक्रमण दीवाली से कुछ दिन पहले हुआ था। उधर सीमाओं पर जवान अपना खून वहा रहे थे इधर सारा देश दीवाली मना रहा था। दीवाली के दो दिन वाद भैय्या दूज के पावन पर्व पर वहन के यहाँ जब भाई कुछ खिलौने और मिठाई आदि लेकर गया तो वहन भाई से निम्न प्रकार कहती है।

गीत

(तर्ज : रंग-विरंगी राखी लेकर)

कपड़े रंग केशरिया रंग में जाइये भैया, होकर के तैयार,
तू जाइये भैय्या होकर के तैय्यार ।।

चाऊ एन लाई बनकर के रावण आया,
राम की भूमि पर पैर जमावन आया,
पैर जमावन आया सीता चुरावन आया,
बजरंग बली बन चीन की लंक जलाइये भैया
रावण को दिये मार ।। तू जाइये भैय्या.................

खून भी ले जा तू ले जा सुहाग मेरा,
पति भी तेरे साथ जाये सौभाग मेरा,
जाये सौभाग मेरा सारा अनुराग मेरा,
नेहरु जी का जग में मान बढ़ाइये भैय्या,
हो देश की जय जय कार ॥ तू जाइये भैय्या..................

सोने के हार कंगन पहुंची और बाले मेरे,
तू जो सामान लाया वह भी हवाले तेरे,
वह भी हवाले तेरे कानों के बाले मेरे,
इन्हें सुरक्षा कोष में देकर आइये भैय्या,
इनसे आवेगें हथियार ॥ तू जाइये भैय्या..................

आवोगे जीत कर मैं दीवाली मनाऊंगी,
असली तो टीका भैय्या तब ही लगाऊंगी,
तब ही लगाऊंगी मन में हर्षाऊंगी,
वहां अभयराम के गीत सुनाइये भैय्या,
भर दे जोश अपार ॥ तू जाइये भैय्या..................

गीत

(भारतीय शिशु की भावना)

अम्मा छोटी सी बन्दूक ला दे मुझे ॥

सीमाओं पर जाके सिंह सा दहाड़ूँगा,
बन कर के शिवाजी चीन को पछाड़ूँगा,
जोशीला उपदेश सुना दे मुझे ॥ अम्मा.........
लाखों सियारों से बड़ा होता एक शेर है,
टीका लगा दे जल्दी हो रही देर है,
दांव पेंच जरूरी सिखा दे मुझे ॥ अम्मा.........
जाकर चिट्ठी लिखूंगा जवाहर लाल को,
देखो आकर चीनी प्राप्त हो रहे काल को,
अभयराम कोई गाना लिखा दे मुझे ॥ अम्मा.........

गीत

भारत के नर नारी बूढ़े नौजवान और बालके,
आओ हम मजबूत बनायें हाथ जवाहर लाल के ।।
उठो वायलोगें की घाटी हमें है पुकारती,
भारत की सेना खड़ी शत्रु को ललकारती,
व्यर्थ करो तुम हथकण्डे डट कर चीनी चाल के ।। आओ हम···

शपथ तुम्हें है वीर शहीदों की सोई राख की,
लाज बचानी है हमको नेफा और लद्दाख की,
फूल बनेंगे शीश अनेकों मातृ भूमि के भाल के ।। आओ हम···

यद्यपि शान्ति अहिंसा का हमको प्रबल सहारा है,
हमलावर को नहीं छोड़ना भी उद्देश्य हमारा है,
आज़ादी का दीपक हमको रखना है सम्भाल के ।। आओ हम···

मैक मोहन पद्दलित हो गई बर्बर चीनी पांव से,
वीरों की हुंकारें आती भारत के हर गांव से,
कर्णधार हो अभयराम तुम जलती हुयी मशाल के ।। आओ हम···

गीत

प्यारी भारत भूमि में गैरों की नज़र न लगे ।। सुनो वीरों
ये सब दुनिया से न्यारी है, और केसर की क्यारी है,
हम हैं इसके लाल हमें यह जान से ज्यादा प्यारी है ,
काशी, देवबन्द, हरिद्वार सा कोई नगर ना लगे ।। सुनो वीरों···

गंगा यमुना की धारा – पावन वेद ज्ञान सारा,
सदा से रक्षा करता आया हिमगिरी पूज्य हमारा ।
इसके ऊपर कभी विदेशी शासन की डगर ना लगे ।। सुनो वीरों···

जो हमस टकरायेगा – चूर चूर हो जायेगा,
बच्चा बच्चा मेरे देश का काल वर्ण हो जायेगा ।
अभयराम इस अवसर में हमें किसी का डर ना लगे ।। सुनो वीरों···

वड़ा भाई सैनिक है, और अवकाश पर आया है। जब वह अवकाश समाप्त करके जाने लगा तो छोटी बहन अपने भाई को टीका लगाते हुए देश भक्ति के निम्न भाव प्रकट कर रही है।

गीत
(लोक धुन)

भइयन को तिलक लगा रही रे, छोटी सी बहनिया
कर में कंगनवा पहना रही रे, छोटी सी बहनिया ।।

बढ़ के अंगरवा पे धरिये चरनवा, दुश्मन की छतियन को करियो अगनवा
यों कह कर के लडुवा खिला रही रे, छोटी सी बहनिया ।। भइयन······

महाराणा की आन तुम्हीं हो, और शिवा की शान तुम्हीं हो
पुरुषन की याद दिला रही रे, छोटी सी बहनिया ।। भइयन······

मोको बिछड़वे का ग़म नेक नइया, जाने क्यों अंखियन में छा गई तरैइया
नेह का रिश्ता निभा रही रे, छोटी सी बहनिया ।। भइयन······

शेर की भांति बढ़ बढ़ जाइये, दुश्मन की लाशों पै चढ़ चढ़ जाइये
अभयराम जोश दिला रही रे, छोटी सी बहनिया ।। भइयन······

क़ौमी एकता

कौमी एकता के लिये भी जनता को आकर्षित किया गया। पाकिस्तान ने आक्रमण करके पहले ही हमारा कुछ भाग अपने अधिकार में ले रखा था, चीनी हमले से भारत को कमजोर समझ कर पाकिस्तान खतरनाक स्थिति पैदा करता जा रहा था इसलिए हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए हरवंश कोर की कहानी का प्रयोग किया गया। कहानी का कुछ अंश निम्नांकित है। एक कृषक परिवार की कहानी है। तेजासिंह कोहिली ने गद्य में सरपंच नामक पुस्तक लिखी थी। सन् १९४७ में बटवारे के दिनों में हरवंश कोर अपने परिवार से विछुड़ गयी थी। इसके परिवार के सारे सदस्य अमृतसर पहुँच गये थे। यह कुछ कवायली सैनिकों के फन्दे में

आ गयी। इनसे किसी प्रकार पिण्ड छुड़ा कर ज्वार के खेत में छुपी बैठी थी। इसे इस दशा में वहीं पास के किसी गाँव की रहने वालीशरीफन नामक मुसलमान बुढ़िया ने देख लिया। इस लड़की की दुःख से भरी कहानी सुन कर इसकी सहायतार्थ एक वस स्टैण्ड पर इसे लिए बैठी थी। वह ये चाहती थी कि अगर किसी प्रकार यह लड़की अमृतसर पहुँच जाये तो कभी न कभी अपने परिवार से अवश्य मिल लेगी। हरवंश कौर ने अपने सोने-चांदी के जेवर भी एक पोटली में बांध कर पहले ही शरीफन को सौंप दिये थे।

अमृतसर को जाने वाली वस के वस स्टैण्ड पर बैठ कर यह बुढ़िया इस युवती को बुर्का उढ़ा कर धीरज बंधाते हुए जिधर से बस आने वाली थी उधर को मुँह किये बैठी थी।

गीत

आया न कोई मोटर बैठे बैठे हो गई शाम ॥
हाय रे गजब हुआ ॥

बैठ गयी हरवंश कौर सर पै बुर्का ओढ़ कर,
हे भगवान दया कर कुछ तो कहती हूं कर जोड़ कर,
इस बुढ़िया ने बचा दिया है मेरा धर्म तमाम ॥ हायरे.........

बुढ़िया भी हरवंश कौर से बैठी थोड़ी दूर थी,
कोई मोटर न मिलने पर मन में वह मजबूर थी,
कहां रात में ठहरे मन में सोचे थी प्रोग्राम ॥ हायरे.........

बुढ़िया ने हरवंश कौर को रास्ते में समझाया था,
कोई पूछे यही बताना मेरा मालिक लाया था,
तांगा लेने गया हुआ है पास में अपने ग्राम ॥ हायरे.........

हरवंश कौर कहे बुढ़िया तेरी मूरत एक बनाऊंगी,
तुझे मानकर सच्ची देवी तुझ पर फूल चढ़ाऊंगी,
मुझ पर जो उपकार किया है भूले न अभयराम ॥ हायरे.........

दोहा

मोटर ट्रक स्टैण्ड पर रुका तुरन्त इक आन ।
हिन्दू सिख औरत मर्द जिसमें फौजी जवान ।।

बुढ़िया ने हरवंश कौर को फौरन किया इशारा है ।
जाओ बेटी बैठकर इसमें भला इसी में सारा है ।।

चलने वाला ट्रक हुआ हरवंश कौर वहाँ आती है ।
मुझको भी संग में लिये चलो आकर के चिल्लाती है ।।

लड़की को बैठाया ट्रक में लोग हुए हैरानी में ।
हरवंश कौर जब जाने लगी तो आंख भीग गई पानी में ।।

गीत

नमस्ते के बाद हुई बुढ़िया से. जुदाई ।
बुढ़िया से जुदाई पर नैनों में आंसू आई ।।
जाने लगी देवी तो फौरन ही रो पड़ी,
बुढ़िया भी वियोग में पागल सी हो पड़ी,
खोपड़ी में बात कैसी बुढ़िया के समाई ।। नमस्ते.........

जेवर देना भूल गई बुढ़िया गलती खा गई,
रोको मोटर जल्दी रोको कहती कहती भागी,
देखा हरवंश ने तो गाड़ी रुकवाई ।। नमस्ते.........

भागी-भागी बुढ़िया आई भारी खा चोट ली,
दे दी हरवंश को जेवर की पोटली,
रह गई थी मुझ पर तेरी चीज ये पराई ।। नमस्ते.........

विदा करे बेटी को तो माता दिया करती है,
न कि उसके गहने और कपड़े भी लिया करती है,
एक और रुपया दिया रस्म जब विदाई है ।। नमस्ते.........

हुआ तेरे साथ बेटी उस पर मिट्टी डालिये,
पति जब मिले तेरा तो मुझे भी चिट्ठी डालिये,
अभयराम मोटर चला चली बुढ़िया माई रे ।। नमस्ते.........

यह लड़की हरवंश कौर अमृतसर में आकर अपने परिवार से मिली। शरीफन नामक मुसलमान बुढ़िया के उपकार की मधुर स्मृति इसके जीवन में सदैव बनी रहेगी।

कहानी समाप्त

परिस्थिति विपरीत होते हुए भी हमारे बहादुर जवानों ने जिस वीरता का परिचय दिया वह सर्वविदित है। चीनी सेनाएं पीछे हटीं। हमारे देश का कुछ भाग भी चीनियों ने अपने अधिकार में ले लिया, लेकिन उन्होंने यह अनुभव कर लिया कि भारतीय सेनाओं से टक्कर लेना कोई आसान काम नहीं है। सोता शेर जगाने वाली बात हुयी। भारत ने भी आक्रमण को वरदान समझा। सारे देश में जोश का वातावरण छा गया और भारत अपनी सुरक्षा की तैयारी में जुट गया।

पण्डित जवाहर लाल नेहरु को इस आक्रमण से बहुत आघात पहुँचा। पंचशील पर हस्ताक्षर करके हिन्दी चीनी भाई भाई का नारा लगाने वाले चीन ने भारत की पीठ में छुरा भोंक दिया। इसी को विश्वासघात कहते हैं। पं० जवाहर लाल नेहरु भारत को अपनी आंखों के सामने चतुर्मुखी प्रतिभा से सम्पन्न देखना चाहते थे। चीनी आक्रमण से विकास की धारा ही बदल गयी। जिस तेजी से विकास हो रहा था उसमें अन्तर आता गया। सुरक्षात्मक उपाय करना बहुत आवश्यक हो गया। बहुत सारी धनराशि उस पर व्यय की जाने लगी।

अपनी आंखों के आगे गांधी जी का सपना साकार न होते देख पण्डित जी को गहरा आघात लगा। भुवनेश्वर में उन्हें किसी खास बीमारी का दौरा पड़ा। बहुत उपचार के बाद भी वे बहुत ज्यादा दिन न जी सके। २७ मई सन् १९६४ को उनका दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। पण्डित जी की मृत्यु का समाचार सुन कर भारत में ही नहीं सारे विश्व में

शोक की लहर दौड़ गयी। "हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में इक दीदावर पैदा।" इस हृदय विदारक दृश्य के सम्बन्ध में निम्नलिखित गीत है।

गीत

जवाहर का जिस दिन निधन हो रहा था।
धरा रो रही थी गगन रो रहा था॥
प्रकृति का उस दिन वो चक्कर चला था,
मिन्टो वृज पर देहली इक वृक्ष हिला था,
न आंधी न वर्षा थी मगर गिर पड़ा था,
भूकम्प आया और धमाका लगा था,
महाकाल का आगमन हो रहा था॥ धरा रो रही थी ....

महाकाल ने जब जवाहर को खाया,
दुनिया ने अपना झण्डा झुकाया,
सुना जिसने भागा वह देहली को धाया,
वर्षा हुई शव पैं गगन को रुलाया,
गुलाबों का राजा, मगन सो रहा था॥ धरा रो रही थी .....

वो बे ताज का शाह जब अकेला चला था,
लाखों जनो का संग में मेला चला था,
ये छः मील लम्बा झमेला चला था,
भारा आंसुओं का इक रेला चला था,
लिपट कर तिरंगा क़फन रो रहा था॥ धरा रो रही थी.........

चिता जब अभय उनकी जलने लगी थी,
और अग्नि से लपटें निकलने लगी थी,
तभी सारी दुनिया बिलखने लगी थी,
बिना जल के मछली सी तड़फने लगी थी,
इलाहाबाद आनन्द भवन रो रहा था॥ धरा रो रही थी.........

जवाहर का जिस दिन निधन हो रहा था।
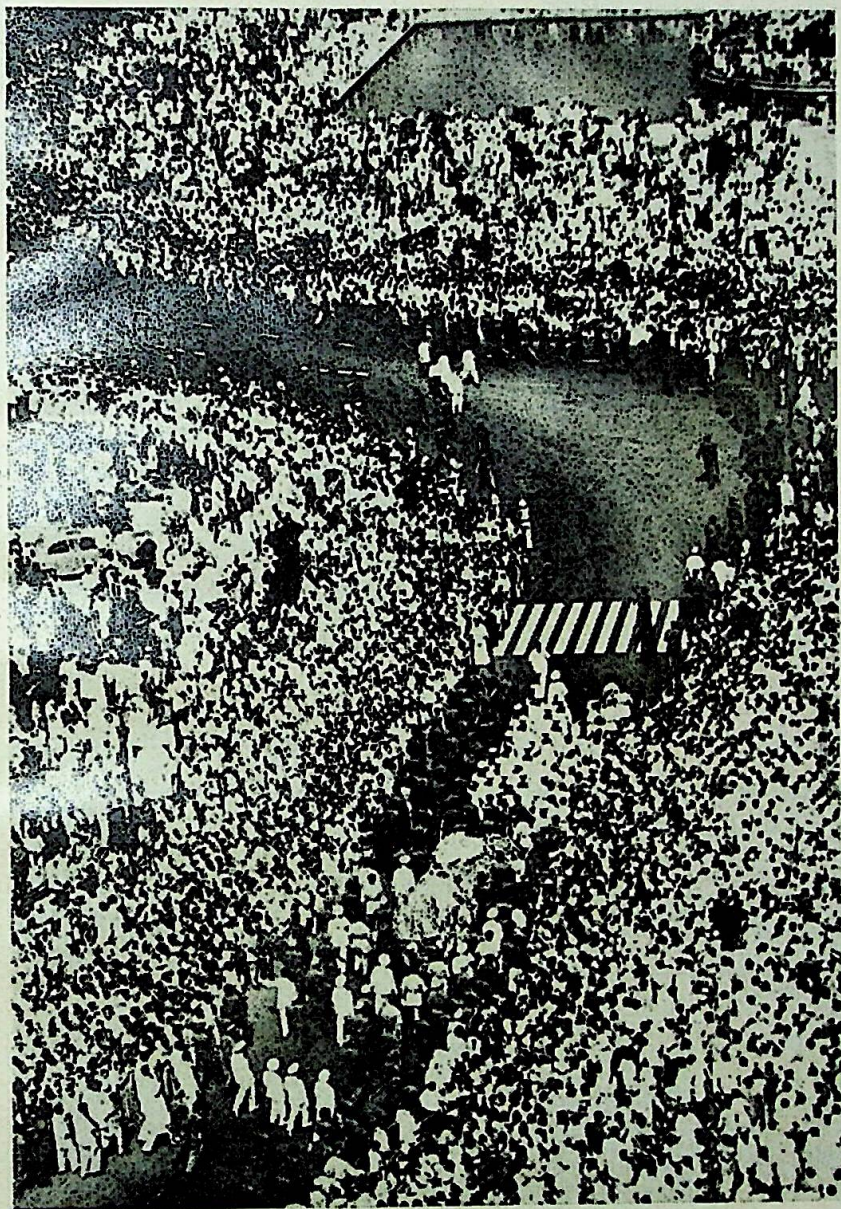
वो बेताज का शाह जब अकेला चला था ।
लाखों जनों का संग में मेला चला था ।।
छः मील लम्बा झमेला चला था।
भरा आंसुओं का यह रेला चला था ।।
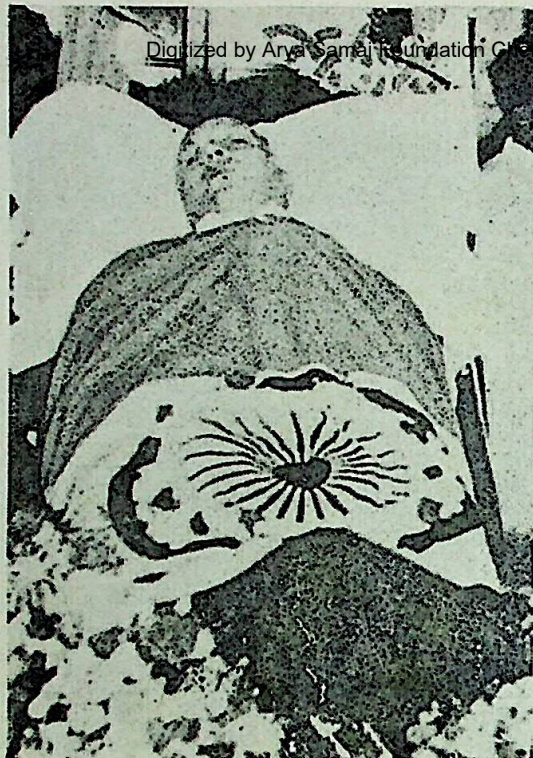
नेहरू जी की वसीयत

गुलावों का राजा मगन सो रहा है।
लिपट कर तिरंगा कफ़न रो रहा है॥

मेरी अस्थियों को वायु यान द्वारा सारे वतन की जमीं पर गिराना।
मेरी अस्थियों का थोड़ा भाग लेकर इलाहाबाद गंगा में जाकर बहाना॥

पं० जवाहर लाल नेहरु की वसीयत पर आधारित

गीत

मेरे देश वालों मेरे बाद में तुम, मेरी याद में कोई भवन न बनाना ।
मेरी अस्थियों को वायुयान द्वारा सारे वतन की जमीं पर गिराना ।।

मुझे प्यार जितना वतन ने दिया है, शायद काम उतना न मैंने किया है,
मै हूं वतन का वतन है ये मेरा, मैं चाहता रहा इसको आगे बढ़ाना ।।
मेरे देश वालों.........

मेरी लाश को तुम कहीं भी जलाना, मगर राख मेरी भारत में लाना,
मेरी अस्थियों का थोड़ा भाग लेकर, इलाहाबाद गंगा में जाकर बहाना ।।
मेरे देश वालों.........

ये गंगा है निर्मल बड़ी ही पुरानी, छिपी इसके आँचल मे पुरानी कहानी,
मै बचपन में इसकी गोदी में खेला, मुझे इसकी गोदी में जाकर सुलाना ।।
मेरे देश वालों.........

बचे राख बाकी तो उसको उठाना, सारे वतन की जमीं पे गिराना,
अभयराम ताकि यही दुनिया समझे, जवाहर था अपने वतन का दीवाना ।।
मेरे देश वालों.........

पण्डित जी के स्वर्गवास के वाद भारत के सामने प्रधान मंत्री वनाने का प्रश्न वहुत जटिल था । इस प्रश्न का उत्तर मिलते देर न लगी और भारत के प्रधान मंत्री श्री लाल वहादुर शास्त्री चुन लिये गये । लोग तो उसी समय प्रधान मंत्री पद के आसन पर श्रीमती इन्दिरा गांधी को देखना चाहते थे किन्तु इन्दिरा जी ने स्वयं संकेत किया कि "वाबू जी शास्त्री जी को वहुत चाहते थे ।"

शास्त्री जी ने पण्डित जी के उत्तराधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया । अतः उन्होंने उन सभी योजनाओं को पूरा करने का निश्चय किया जिन्हें पन्डित जी ने आरम्भ किया था । थोड़े ही दिनों में अभूतपूर्व

सफलता मिली। चीनी आक्रमण के थोड़े दिनों बाद ही भारत ने अपने सुरक्षात्मक उपाय आरम्भ कर लिये थे। पाकिस्तान को यह भ्रम था कि चीनी आक्रमण के पश्चात् भारत क्षति ग्रस्त हो गया है। ऐसा अवसर हाथ से न जाने दिया जाये। फलस्वरूप उसने भारत पर युद्ध थोप दिया। एक बार तो इस आक्रमण से देश में चिन्ता व्याप्त हुयी। मगर शास्त्री जी के कुशल नेतृत्व और प्रबल सूझ बूझ से भारतीय सेनायें लाहौर, बर्की और डोगराई आदि स्थानों में बढ़ गयीं। पाकिस्तान का बहुत सारा भाग अपने क़ब्जे में कर लिया। उस समय शास्त्री जी ने जय जवान जय किसान का नारा दिया। उस समय के जोशीले वातावरण और सैनिकों की वीरता की झलक निम्न गीतों में है।

गीत

नाथने है नाग अब हाथों मे बीन लो।
मखमल व पापलीन तज दो पहन जीन लो ॥ आगे बढ़ो.........

तुमको आज पुरानी परिपाटी पुकारती,
बिड़ला भवन में बापू की लाठी पुकारती,
शिवा और प्रताप की माटी पुकारती,
नेफा और लद्दाख की घाटी पुकारती,
हर भारतीय हाथ में उठा संगीन लो ॥ आगे बढ़ो.........

हमें क़स्म है जननी की और क़स्म भगवान की,
और क़स्म है देश प्रेमियों के बलिदान की,
कस्म तुम्हें वीरों हल्दी घाटी के मैदान की,
आओ मिलकर आबरू रखले हिन्दोस्तान की,
जो कर सको अभयराम वो कर अधीन लो ॥ आगे बढ़ो.........

गीत

सीमाओं पर तभी मोर्चा सफल बनेगा रण का।
गांव गांव हर खेत मोर्चा कृषक लगा दे अन्न का॥
दुश्मन से तो सैनिक लड़ते बन्दूक़ों के नल से,
मशीन गनों से तोपों से सज्जित सैनिक बल से,
आधार शिला है इनकी लेकिन कारखानों के कल से,
मजदूर किसानों के दम से खुरपा तसला हल से,
ढेर लगा देते हैं जोकि देश के अन्दर धन का॥ गाँव गांव........

देश की खातिर नौजवान तो जाकर अपना तन देगा,
नित करके उद्योग श्रमिक भी पैदा करके धन देगा,
खेती करके कृषक देश को दूध दही घी अन्न देगा,
जिसके पास नही है कुछ भी वह बेचारा मन देगा,
बहनें लक्ष्मी बाई बन के दृश्य दिखावे सत्तावन का॥ गांव गांव......

सदा किसानों तुमने ही निज देश का मान बढ़ाया है,
अपने खून पसीने से सदा भारत भू को सजाया है,
सजी हुई भूमि पर फिर संकट घिर आया है,
इधर भूख बेकारी है उधर शत्रु का साया है,
अभय राम बज गया बिगुल खोज मिटा दे दुश्मन का॥ गांव गांव......

जय जवान और जय किसान

गीत

जय जवान और जय किसान है भारत देश का नारा।
इसी के द्वारा करे में तरक्की जग में देश हमारा॥
सीमाओ की रक्षा तो भारत के नौजवान करेंगे,
आन बान और शान के ऊपर निज बलिदान करेगें,
दुश्मन हो चाहे कोई उसका चूर अभिमान करेंगे,
बनकर के विक्राल लाल जंग का मैदान करेंगे,
एक एक वीर सिपाही भारत के नैनो का तारा॥ इसी के द्वारा...

काश्तकार भी अब निज भारत का उद्धार करेंगे,
मेहनत करके अन्न की ज्यादा पैदावार करेंगे,
कमी न आने देगें अन्न का भारी भंडार करेंगे,
कारखानों में श्रमिक भाई भी श्रम अपार करेंगे,
बिना अन्न के चल नहीं सकता कभी कहीं कुछ चारा ।। इसी के···
जवान तो लड़ते दुश्मन से बन्दूकों के नाल से,
तोप टैंक से बम से और हथियारों के बल से,
लड़ता है किसान मगर खुरपा तसला हल से,
आंधी व तूफानों से सर्दी गर्मी और जल से,
अभयराम अन्नदाता कहता है इसको जग सारा ।। इसी के···

जिन वीरों ने अदम्य साहस एवं वीरता का परिचय दिया, उनमें से संक्षेप में कुछ की कहानियां निम्न प्रकार है। जनता इन नये वीरों की कहानियां वहुत ध्यान से सुनती है।

हाजी पीर विजेता मेजर रणजीत दयाल

गीत

घुस आये घुसपैठियो जबकि काशमीर में ।
जाना पड़ा फिर तो हमें दर्रे हाजीपीर में ।।
हाजी पीर काश्मीरी मुसलमान का मजार है,
फुटों में ऊँचाई इसकी साढे आठ हजार है,
फंसा था ये पीर पाकिस्तान की जंजीर में ।। जाना पड़ा·········
चारों ओर इसके दृश्य बड़ा ही सुहाना सुनो,
पाकिस्तान का था यहीं से जाना आना सुनो,
पाँच मील अन्दर युद्ध विराम की लकीर में ।। जाना पड़ा·········
पीर पै मजार की वैसे तो अंधेर था,
लेंकिन पाकिस्तान का यहाँ शस्त्रों का ढेर था,
हिन्दी सेना हुई इसे लेने की तदबीर में ।। जाना पड़ा·········

दोहा

कमाण्डर की बात सुन मेजर रणजीत दयाल ।
आगे बढ़ कहने लगा करके आंखें लाल ॥

करके आंखे लाल कहा मुझे आज्ञा दो जाने की ।
पीर पर निश्चित जाऊंगा कुछ बात नही घबराने की ॥

इधर भी सेना थोड़ी और उधर पाकिस्तान का धोखा था ।
युद्ध विराम के पार जाने का हमारा पहला मौक़ा था ॥

रणजीत सिंह ने क़स्म ये खाई मारूँ या मर जाऊंगा ।
लेकिन हाजी पीर पर तिरंगा झण्डा फहराऊंगा ॥

सत्तर सैनिक ले साथ में अपने पूरा करने क़ौल चला ।
मेजर रणजीत दयाल जय भारत मां की बोल चला ॥

केवल सत्तर सैनिकों को लेकर बहुत बीहड़ और दुर्गम रास्तों से चल कर सरों पर शस्त्रों का वोझ लादे हुए मेजर रणजीत दयाल एवं इनके साथी हाजीपीर की ओर चल पड़े । घोर वर्षा के होते हुए भी सैनिक आगे बढ़ते जा रहे थे । रास्ते में वहुत सारा गोला वारुद और राशन का भण्डार मिला । एक स्थान पर तो दो तीन टन गोला बारुद ट्रकों पर लदा हुआ इन्हें मिला ।

गीत

अगले दिन शाम को कहता मेजर वीर दयाल
बहादुरों बढ़े चलो ॥

आगे सीधी चार हजार फुट की खड़ी चढ़ाई थी,
ऊपर चढ़ने लगे तो फौरन जोर की वर्षा आई थी,
रास्ता भी कोई साफ नहीं था कष्टों का जंजाल ॥ बहादुरों…

कंधो पर हथियार लदे कितनों के पैर फिसलते थे,
फिर भी टेढ़े रस्ते से बचकर साफ निकलते थे,
सारी रात भर चलते रहे और करते रहे कमाल ॥ बहादुरों…

चलते चलते भोर हो गई होती इनको तड़क मिली,
थोड़ी देर आराम किया वहाँ हाजी पीर की सड़क मिली,
दो टोली अब चले बनाकर वीर सिंह की चाल ।। बहादुरों···

स्टेनगनों और रायफलों से सेना लड़ती जा रही थी,
दोनों ओर से भारतीय सेना आगे बढ़ती जा रही थी,
रणजीत ने अपना डेरा दिया जा हाजीपीर पर डाल ।। बहादुरों······

इधर सड़क में शत्रु की सेना का पैर उखाड़ दिया,
उधर पीर पै अपना झंडा रणजीत सिंह ने गाड़ दिया,
अभयराम यहां लगे भागने दुश्मन बन श्रगाल ।। बहादुरों··· ··

अब्दुल हमीद ओर मेंजर आशाराम त्यागी

बहुत से वीरों ने भारत की रक्षा हेतु अपने प्राणों का वलिदान दिया । अब्दुल हमीद और आशाराम भी उनमें ही हैं । आशाराम ने चीन से लड़ाई में भी अदम्य साहस का परिचय दिया था । कई वर्ष में आशाराम कुछ महीनों का अवकाश लेकर शादी कराने आया था । गाज़ियाबाद जनपद में फतेहपुर गांव का निवासी था । पिता का नाम सगवादत और मां का नाम बसन्ती देवी है । आशाराम का विवाह होने के कुछ ही दिनों बाद छुट्टी कैंसिल होने का टेलीग्राम आया । उसे पढ़ कर चलने की तैयारी करने लगा ।

गीत

फौजी कपड़े पहन लिये और बना सजीला जवान
जंग में वीर चला ।।

पत्नि के हाथों की मेन्हदी अभी सूख न पाई थी,
पता चला जब आशाराम को बोली उसकी माई थी,
कहां चला रे आशाराम तू लेकर के समान ।। जंग में वीर चला···

आशाराम ने कहा माता जी यहाँ रहने की मजबूरी है,
मुझे बुलाया है सेना में आया तार जरुरी है,
धोका देकर काश्मीर में घुस गया पाकिस्तान ।। जंग में वीर···

पिताजी आये जंगल से हाली ने हाल बताया है,
ये भी दौड़ा बैठक से और घर के अन्दर आया है,
समझाने यों लगे देवियों को जाकर प्रधान ।। जंग में वीर...

कहा पिता ने आशाराम से तभी सफलता जीने में,
पीठ पे गोली न खाना बस गोली खाना सीने में,
अपने पिता से अभयराम ये लेकर के वरदान ।। जंग में वीर...

नोट :—सेना में पहुंचने के पश्चात अब्दुल हमीद की डियुटी खेमकरण और आशाराम की डियुटी डोगराई मोर्चें पर लगी ।

अब्दुल हमीद

अब्दुल हमीद जब तक रण भूमि में लड़ता रहा,
दुश्मनों के टैंकों पर उसका गोला दन-दन पड़ता रहा,
पीछे नहीं हटा वीर लाशों ऊपर चढ़ता रहा,
बढ़ता बढ़ता लड़ता रहा आगे को ही बढ़ता रहा,
देश के दुश्मनों का कचूमर निकलता रहा,
भागे हुये दुश्मनों को दौड़ के पकड़ता रहा,
भूखा और प्यासा वीर सीना खोल अड़ता रहा,
बलिदान हुआ वीर जब चौथे ऊपर पड़ता रहा,

आशाराम अपनी नवविवाहिता पत्नि को पत्र लिख रहा है ।

गीत
(होली)

गई भड़क जग की ज्वाला ।।

कई रोज से लड़ता लड़ता आगे बढ़ता जा रहा हूँ,
पील बक्स और बंकर आदि तोड़ रगड़ता जा रहा हूँ,
ध्वजा तिरंगी फहरा हमने शत्रु को भगा डाला ।। गई भड़क...

फतह किया डोगराई हमने अब आगे की तैयारी है,
नहर पार शत्रु की सेना लगा मोर्चा भारी है,
लाशों के अम्बार लगे हैं क्षेत्र बना बधशाला ।। गई भड़क···

चारों तरफ गोली गोलों से हो रही घोर लड़ाई है,
आज अचानक न जाने क्यों याद तुम्हारी आई है,
चिन्ता की कोई बात नहीं अब होने को उजियाला ।। गई···

मेरे मात पिता की सेवा करना फर्ज तुम्हारा है,
जीतूंगा तो आऊंगा वरना स्वर्ग द्वारा है,
अभय राम लिख चिट्टी भेजी लगा जूझने मतवाला ।। गई भड़क···

राधेश्याम

सारी रात भर हुई लड़ाई दुश्मन का मुँह मोड़ दिया ।।
पील बक्स और बंकर का क़िला चक्रव्यूह तोड़ दिया ।।
टैंको की घमशान लड़ाई हमसे नहीं बताई जाती है ।
लड़ते लड़ते आशाराम की छलनी हो गयी छाती है ।।
आगे बढ़ कर लड़ा वीर और अनगिन टैंक मसल बैठा ।
शमां जलाने की खातिर खुद परवाना जल बैठा ।।
घायल होकर गिरा शेर फिर अमृतसर पहुंचाया है ।
चौबीस सितम्बर सगवा दत पैं तार ज़रुरी आया है ।।
कविता को तो मिली थी चिट्ठी इसके पिता को तार मिला ।
अमृतसर में पहुँचे यह तो मरने का समाचार मिला ।।

गीत

(आशाराम का अन्तिम सन्देश)

सुनो ऐ नर्स मेरा आखिरी एक काम कह देना,
पिता जी आयें तो उनको मेरा पैग़ाम कह देना ।।
कमर पर घाव यदि आये तो लानत ऐसे जीने को,
पिता जी आयें तो उनको दिखाना मेरे सीने को,
ये ग्यारह घाव दिखला कर मेरा प्रणाम कह देना ।। पिता जी···

घर से जब आये थे हम कफ़न भी साथ लाये थे,
विजय माला तिलक की साथ में सौग़ात लाये थे,
मेरी इस लाश को ले जायें अपने ग्राम कह देना ।। पिता जी···

कली जो खिल न पायी थी मेरी पत्नी बड़ी भोली,
उसे उपहार है मेरा चिता में निकले जो गोली,
सदा संग्राम के ही गीत गा अभयराम कह देना ।। पिता जी···

चले वीर की लाश को लेकर जन-जन ने जय कार किया ।
इक्कीस तोपें दाग वीर का दाह कर्म संस्कार किया ।।

इस युद्ध का दुनियां में व्यापक प्रभाव देख कर रूस ने भारत के प्रधान मंत्री लाल वहादुर शास्त्री व पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल अय्यूब को ताशकन्द में बुलवाकर समझौता कराया। उस रात में लगभग एक डेढ़ वजे लाल वहादुर शास्त्री का स्वर्गवास हो गया। यह सुनते ही भारत में शोक की लहर दौड़ गयी। समझौते में स्पष्ट था कि दोनों पक्ष जीते इलाकों को वापस करेंगे और युद्ध से पहले की स्थिति में आजायेगें।

गीत

(ताश क़न्द समझौता)

ताश कन्द समझौता भी अनमोल हो गया ।
बाद युद्ध के आपस में मेल जोल हो गया ।।

राह दिखायेगी जग को बापू की अमर कहानी,
उसी तरह से लाल बहादुर बन गये हैं बलिदानी,
अठारह वर्ष से अब तक जिसने बात कोई न मानी,
ताश क़न्द में आखिर उसने डगर शांति की पहचानी,
जवाहर लाल गांधी का पूरा क़ोल हो गया ।। भारत से···

अगर ये सच है तो भारत की तस्वीर सुरक्षित है,
नेहरू जी के अरमानों की यह जागीर सुरक्षित है,
लहू में डूबी हुई वीरों की शमशीर सुरक्षित है,
फूल फल और केशर की कश्मीर सुरक्षित है,
वीरों का बलिदान जहां बेतोल हो गया ।। भारत से···

कौमी एकता गीत

साठ कोटि, माता के बेटों, मां की सुनो पुकार ॥
उठो और हो जाओ तैयार ॥

जब जब भी तुम लड़े परस्पर भोगा कष्ट महान,
एक बार फिर कहती तुमसे तुम मेरी संतान,
आपस के मतभेद भुलाकर करो परस्पर प्यार ॥ उठो और···

जीवन का शत्रु होता है सदा आलस और प्रमाद,
अनुशासित और मेहनत क़श ही रहते हैं आज़ाद,
काम करो सब डटकर भरदो भारत का भंडार ॥ उठो और···

हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई मिलकर क़दम बढ़ाओ,
भूख गरीबी बेकारी को मिलकर दूर भगाओ,
अभय राम गुण गाये तुम्हारा सारा ही संसार ॥ उठो और···

आर्थिक उत्थान खण्ड

अड़तालीस वर्ष तक संघर्ष मय जीवन व्यतीत करने के वाद श्रीमती इन्दिरा गांधी कांटों का ताज पहन कर भारत की पहली महिला प्रधान मंत्री बनी। उन्होंने आलोचकों का यह कथन विल्कुल निराधार सिद्ध कर दिया कि भारत की राजनीति नारी के हाथ में जाकर कदापि सफल नहीं हो सकती।

प्रधान मंत्री बनते ही उनके सामने खाद्य समस्या, भाषा विरोध, मीजो नागालैन्ड समस्या, तथा भारत पाकिस्तान संघर्ष के परिणाम स्वरूप आर्थिक संकट, इत्यादि अनेकों समस्यायें उपस्थित हुईं। परन्तु एक-एक करके उन्होंने सवका समाधान अपनी कुशाग्र बुद्धि से करना आरम्भ किया। इस पृष्ठ भूमि में श्रीमती इन्दिरा गांधी को कुछ ऐसे अप्रिय निर्णय भी क्रियान्वित करने पड़े जो उनके कार्य भार सम्भालनें से पहले निश्चित किये जा चुके थे, रुपये का अवमूल्यन भी उनमें से एक था।

अनेकों कठिनाइयों के वावजूद इन्दिरा जी ने कार्य करना आरम्भ किया। उन्होंने निर्माण कार्यों पर विशेष वल दिया और गरीवी दूर हटाओ नारे के क्रियान्वयन के लिये कार्यक्रम तैयार किये। निर्माण गीत फिर गाये जाने लगे। साथ ही वढ़ती हुई जन संख्या पर चिन्ता व्यक्त कर परिवार नियोजन का व्यापक प्रचार कराया गया। इसके साथ-साथ इन्दिरा जी ने गरीवों की मदद के लिये कार्य करना आरम्भ किया। जन साधारण में उनके प्रति श्रद्धा जाग उठी। वे जहाँ भी जाती थीं लाखों की भीड़ उनके दर्शन को इक्ट्ठा होने लगी। उस समय परिवार नियोजन अनुशासन तथा परिश्रम करने के गीत वनाकर जन सभाओं में सुनाये गये।

परिश्रम गीत

काम के समय में ना आराम कीजिये।
बातें करना छोड़िये और काम कीजिये॥
छिप कर चोरी से होते जो वह काम नहीं कहलाते,
चोर व डाकू समाज को सदा दुख ही दुख पहुंचाते,
भार देश पर वह है जो यहाँ नहीं कमा कर खाते,
देश के शत्रु वह हैं जो कि भ्रष्टाचार फैलाते,
कमजोरी जो है वह दूर तमाम कीजिये॥ बातें करनी···

काम के करने वालों के घर बजे सुखों की वीना,
घर बनते हैं स्वर्ग मनुष्य का सफल होता है जीना,
जिसने हर अमृत से बढ़ कर समझा श्रेष्ठ पसीना,
रह करके स्वतंत्र चले सर्वत्र खोल के सीना,
जिससे हो संसार सुखी वह इंतज़ाम कीजिये ।। बातें करनी···

मेहनत करने वालों ने टूटे आइने जोड़ दिये,
किया उजाला बिजली का नदियों के रुख मोड़ दिये,
धरती पर हरियाली करदी उदर गिरि के फोड़ दिये,
सैर चाँद की कर आये ऐसे रोकेट छोड़ दिये,
धरती को अभयराम स्वर्ग धाम कीजिये ।। बातें करनी···

निम्न गीत एक लोक कथा पर आधारित है । राजा की वड़ी लड़की ने राज कुंवर के साथ और छोटी लड़की ने किसान के बेटे के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की ।

परिश्रम गीत

दो बहनों की कथा सुनो राजा की राजकुमारी थी ।
दोनों बेटी राजा को यह जान से ज्यादा प्यारी थी ।।

दोनों लड़की की शादी की राजा ने एक साथ सुनो,
राज कुँवर की कृषक पुत्र की आयी थी बारात सुनो,
बड़ी लड़की को राजा ने दई बहुत सौगात सुनो,
हाथी घोड़े दिये बहुत से हीरे और जवाहरात सुनो,
स्वप्न सुनहरे पूरे करके कर दई बिदा दुलारी थी ।। दोनों बेटी···

गई जिधर को बड़ी बहन तो पड़ता गया अकाल सुनो,
हाथी घोड़े गये रोंदते पैरों तले विशाल सुनों,
जरखेज़ जमी भी बंजर बन गई सब हो गया पामाल सुनो,
स्वागत तक करने वाला कोई मिला नही ससुराल सुनो,
मगर जिधर को छोटी निकली स्वागत की तैयारी थी ।। दोनों बेटी···

बंजर ऊसर में हरियाली देख सभी हर्षाने लगे,
जब आई ससुराल सभी नर नारी फूल बरसाने लगे,
लक्ष्मी बनकर आई ये देवी गीत सभी मिल गाने लगे,
पुरुषार्थ की महिमा को यों अभयराम बतलाने लगे,
दो बहनों की कथा सुनाई जिसकी इच्छा भारी थी ।। दोनों…

परिश्रम और एकता से गत वर्षों में जो निर्माणात्मक कार्य हुए और उनसे जो प्रगति हुई उसका जनता में प्रचार करने की वहुत ज़रूरत थी ।

गीत

(तर्ज-झूठ बोले कव्वा काटे)

देश भक्ति पुरुषार्थ और सहयोग के द्वारा ।
हम क्या थे और क्या हो गये, ये सोचकर देखो ।।

अब भावनाएं बन्धन की काफूर हो रही,
और कामनाएं बढ़ने की भरपूर हो रही,
सोचने की बुद्धि भी कुछ मजबूर हो रही,
बहुतों की कंगाली भी दूर हो रही,
नये-नये आविष्कार और प्रयोग के द्वारा ।। हम क्या थे…

जहां सुई ना बनती बड़े सामान बन रहे,
पैटन टैंक राकेट और विमान बन रहे,
टेलीविज़न और इन्जन धन की खान बन रहे,
देश की सेवा करने को नौजवान बन रहे,
बुद्धि बल विश्वास और उद्योग के द्वारा ।। हम क्या थे…

सड़क नहर टियूबवेलों की भरमार कर रहे,
कई गुनी अनाज की पैदावार कर रहे,
कपड़ा बढ़िया देश में तैयार कर रहे,
कई आवश्यक वस्तुओं का भण्डार कर रहे,
दुनिया भर के ज्ञान और संयोग के द्वारा ।। हम क्या थे…

जितनी की तरक्की उन्हे समस्या हड़ गई,
महामारियाँ हटाई तो आबादी बढ़ गई,
सर के ऊपर भूख और बेकारी चढ़ गई,
लड़ाइयों को भी कई बिजलियाँ पड़ गई,
अभयराम क्या करे यत्न इस रोग के द्वारा ।। हम क्या थे···

परिश्रम गीत

देश भक्ति के भाव भरे बिन देशोद्धार नहीं होगा ।
कठिन परिश्रम किये बिना अब बेड़ा पार नहीं होगा ।।
देश है पहले और बाद में सबसे होता कर्म बड़ा,
सेवा और पुरुषार्थ से बढ़कर नहीं कोई है धर्म बढ़ा,
जिस भूमि में जन्म लिया है जिसकी गोद में पले यहाँ,
जिस भूमि का अन्न खाया है घुटनों के बल चले यहां,
उसकी रक्षा सेवा सम कोई और उपकार नहीं होगा ।। कठिन परिश्रम···

स्वतंत्रता के चरणों में सदा रक्त चढ़ाया जाता है,
श्रम की बून्दे डाल कर हरा बनाया जाता है,
स्वाभिमान से लोग जहाँ जीने की बात किया करते,
आलस और प्रमोद छोड़ पसीने की बात किया करते,
वहां कोई भी भूखा नंगा दुखी लाचार नहीं होगा ।। कठिन परिश्रम···

सड़क नहर टियूबेल लगे और गांव में बिजली आई है,
फिर भी हम भारत वालों की मिटी नही कठिनाई है,
कारण इसका यही है कि हम जितना भी बढ़ पाते हैं,
जन संख्या बढ़ने से उतना ही पीछे को हट जाते हैं,
छोटा परिवार बनाये बिना सुखी परिवार नहीं होगा ।। कठिन परिश्रम ··

असली दौलत देश के बच्चे आन बान और शान यही,
अगर हैं अच्छे स्वच्छ व शिक्षित, हैं भारत के प्राण यही,
ये है फूल चमन के खुशबू देने वाले खिले यहां,
मांग समय की यही कि इनको सब सुविधायें मिले यहां,
जब तक घर घर अभयराम हमें यह स्वीकार नहीं होगा ।। कठिन परिश्रम···

परिवार नियोजन गीत

अपना बोझ उठाने की अपनी ही जिम्मेदारी है ।
ज्यादा बच्चे पैदा करना देश के संग गद्दारी है ।।

भारत वासी बढ़ रहे जैसे कीड़े और मकोड़े,
जिधर देख लो भीड़ भड़क्का लोग फिरे हैं दौड़े,
खाने वाले ज्यादा हैं और करने वाले थोड़े,
इसीलिए तो पड़े हुए हैं हर चीजों के तोड़े,
मंहगाई पर मंहगाई है बेकारी पर बेकारी है ।। ज्यादा...

फिर भी बूढ़े बुढ़िया कहते दया है भगवान की,
दशा अगर ये रही समझलो बिगड़े दशा वतन की,
सिर्फ तीन ही बच्चे हों ये बात सुखी जीवन की,
सबसे अच्छा इलाज इसका दवा है आपरेशन की,
मुफ्त करे आपरेशन डाक्टर समझदार सरकारी है ।। ज्यादा...

पत्नि को संग लेकर के अब अस्पताल में जाओ,
वहां मिलेगी नर्स उसे जा मन की बात बताओ,
आपरेशन ना करवाते हो तो और विधि अपनाओ,
नर्क कुण्ड में पड़ कर लेकिन मत ना समय गवाओ,
अभयराम विज्ञान के युग में काहे की लाचारी है ।। ज्यादा...

इन दिनों परिवार नियोजन के सम्वन्ध में 'समय का स्वर' पुस्तक लिखी उनमें से कुछ गीत निम्नांकित हैं :—

परिवार नियोजन गीत

दुनिया को बनाने वाले ने इन्सान को सब सामान दिया ।
दो हाथ दिये दो पांव दिये और बुद्धि का वरदान दिया ।।
जो बढ़ने वाले होते हैं रुकने का नाम नहीं लेते,
आंधी हो तूफान मगर झुकने का नाम नहीं लेते,
स्वागत करती दुनिया उनका जिसने नव निर्माण किया ।।
दो हाथ दिये............

पुरुषार्थ से इस दुनिया में सब कामना पूरी होती है,
आलसी और निकम्मों पर क़िस्मत भी उनको रोती है,
इन्सान के ऊपर निर्भर है फायदा या नुकसान किया ।।
दो हाथ दिये…………

औलाद का पैदा करना जो भगवान के वश में बताते हैं,
खुद पै ही नहीं वह धरती पर बोझा अधिक बढ़ाते हैं,
तादाद बढ़ाकर भूखों की कर दुनिया को वीरान दिया ।।
दो हाथ दिये…………

ईश्वर पिता हमारा है हम सब में परस्पर आदर हो,
उतने ही पैर पसारे कि जितनी लम्बी चादर हो,
अभयराम जरूरत है जिसकी कर उसका बयान दिया ।।
दो हाथ दिये…………

गीत

हम दो हमारे दो – हम दो हमारे दो,
एक रवि और एक शशि निज नैनों के तारे दो ।।
शोभा देता नहीं हमें ये स्वतंत्रता में पाप है,
देश के बच्चे दुखी रहें यह बहुत बड़ा अभिशाप है,
आसमान से खींच जमी पर लाये स्वर्ग दुलारे दो ।।
हम दो हमारे दो …………

जाने वाले थोड़े हैं और आने वाले ज्यादा हैं,
इस धरती की बोझ उठाने की भी एक मर्यादा है,
राम राज में लव और कुश ही होते हैं उजियारे दो ।।
हम दो हमारे दो…………

इधर उधर की बातों में अब ना समय गंवाना है,
आज समय की मांग यही छोटा परिवार बनाना है,
नई रोशनी आये जिनसे अभय राम है द्वारे दो ।।
हम दो हमारे दो…………

(पति और पत्नी के संवाद के रूप में)

परिवार नियोजन गीत

तर्ज़—लोक गीत

पति – सुनो सुनो री सजनिया कैसे सपरी ।
पत्नी– सुनो सुनो जी संवरिया ऐसे सपरी ।।
पति – दिन और रात कमाने पर भी हाल देखकर झुरता,
पैर की जूती टूट गई है फट गये धोती कुरता,
नाव डोली है भवंरिया, कैसे सपरी ।। सुनो सुनो......

पत्नी– घर में रोटी कपड़े के दिन पड़ता रहता हल्ला,
पैंतोस बरस की उम्र मेरी है ग्यारह लल्लो लल्ला,
किस की किसको लूँ खबरिया, कैसे सपरी ।। सुनो सुनो......

पती – काम से आऊं थका थकाया तुम्हें देख मुरझाऊं,
करूं अदाई कर्जे की या घर का काम चलाऊं,
ज्यादा जाओ न बजरिया, कैसे सपरी ।। सुनो सुनो......

पत्नी– आठ मास का बच्चा है अब जबकि गोद हमारी,
पहले ही कमजोरी तन में पांव हुए फिर भारी,
मुझे भाये न सजरिया, कैसे सपरी ।। सुनो सुनो......
तन्दुरुस्ती भी रहेगी क़ायम अस्पताल में जाओ,
देर करो ना स्वामी अब निज कल्याण कराओ,
ये सुधार की डगरिया, कैसे सपरी ।। सुनो सुनो......

परिवार नियोजन गीत

तर्ज़—किश्ती वाली

बच्चों वालों, को है समझाना, न धोका खाना ।
बचो नुकसान से, कोई लाभ नही ज्यादा संतान से ।।
दूध दही का तो कहना क्या है रोटी तक की तंगी है,
एक ही मकान में सास ससुर बहू बेटी तक भी नंगी है,
सब लड़की लड़के, नो बढ़ चढ़के, मरते हैं सड़ सड़ के,
धड़के सीना, ये कैसा जीना, ना खाना व पीना रहित मुस्कान से ।।
कोई लाभ............

वहीं पे रसोई पशु वहीं पे बीमार है और वहीं पर जच्चा है,
पता नहीं बालकों में कौन सा भतीजा है और कौन सा चच्चा है,
गलती खाई, भरी तबाही, लाज जरा न आई,
ताई दादा की है मर्यादा, स्वर्ग का इरादा इस नर्क के मकान से ।।
कोई लाभ............

होते है करोड़ों बच्चे साल भर में पैदा अगर न रोका जायगा,
मशीनों के जमाने में हर नारी को काम नहीं मिल पायेगा,
बिन शिक्षा, के मांगे भिक्षा, और चलावे रिक्सा,
शिक्षा कैसी जब पेट ही खाली छाई कंगाली रहे परेशान से ।।
कोई लाभ............

परिवार नियोजन गीत

बच्चों पै ना रोटी कपड़ा है इससे बुरी लानत क्या होगी ।
जब हाल अभी ये घर का है दस साल में हालत क्या होगी ।।

तुम कुछ तो सुनो मेरी, क्या होगा कमाने से,
पहले ही सात हैं बालक, एक और है आने में,
हर साल प्रसूता बनती हूं अब और मुसीबत क्या होगी ।। जब हाल...

हर साल तुम्हें समझाती तुम कुछ तो शरम करो,
खुद पे ही नहीं बच्चों पे थोड़ा तो रहम करो,
जब खुद की हिफाजत न होती, तो इनकी हिफाजत क्या होगी ।।
जब हाल............

ये बातें अगर तुम मानो, तो आ जाये आखानंदी,
या तो मैं लूप लगावाऊं या तुम करवालो नसबन्दी,
परिवार नियोजन से बढ़कर अभयराम जरूरत क्या होगी ।।
जब हाल............

परिवार नियोजन गीत

लड़की हो या लड़का दोनों ही अच्छे हैं।
वह कितने खुश नसीब जिनके दो ही बच्चे हैं॥

एक ही कुल को रोशन करता लड़का है जग जाने,
दोनों कुल की शान बढ़ाती है लड़की सब ही माने,
दोनों का सम्मान करे वह भाव जगत में सच्चे हैं॥ वह कितने…

सीता सुल्मा हाडी रजिया और झासी की रानी,
सभी जानते कहलाती हैं ये भगवती भवानी,
हीन समझते लड़की को वो लोग गलत और कच्चे हैं॥ वह कितने…

अधिक हो जाना मर्यादा से नाश का कारण होता,
इक दिन ऐसा आता है वह मूँड़ पकड़ कर रोता,
आज भतीजे पहले पैदा होते और बाद में चच्चें है॥ वह कितने…

लाखों कांटों से बेहतर इक फूल की क़ीमत होती,
करोड़ों तारों में पहुंचाता एक चन्द्रमा ज्योति,
छोटे परिवारों में ही अभयराम खुशी के लच्छे हैं॥ वह कितने…

(आदर्श परिवार की झांकी)

गीत

आओ मिलकर बसायें प्रेम नगरिया॥
प्रेम नगरिया की ये परिभाषा – जिसमें हो जीने की आशा,
जिसमें जनहित भाव छिपे हों, मिलकर चलेंगे उसी डगरिया॥ आओ…

घर में हो संतवन्ती नारी, बेटे भी हों आज्ञाकारी,
अन्न दूध की कमी रहे ना प्रेम के रस की भरी गगरिया॥ आओ…

जहाँ लगे हों प्यार के मेले हुई संततिसुन्दर आंगन खेले,
पुरुषार्थ के फूल फलों से सजी हुई हो अपनी बगरिया॥ आओ…

गीत

(धरती का वेटा)

श्रम और सेवा में ही रहता हरदम जिसका ध्यान ।
वह धरती का बेटा है और उसका नाम किसान ।।

नई जिन्दगी देने वाला जग का पहरेदार,
संघर्षों की मंजिल पर बन जाता ललकार,
जिसका धन धरती ही जग में वह सच्चा इंसान ।। वह धरती…

आजादी टकसाल बन गई खेतों और खलिहानों में,
कोटि-कोटि मानव जीवन नाच उठा मुस्कानों में,
नये बीज और खाद व बिजली खुशहाली की शान ।। वह धरती…

रही उगलती युग युग से जिसकी धरती सोना'
भरा है अन्न के भण्डारों से देश का कोना कोना,
जन्म भूमि के कारण करता सब कुछ ही बलिदान ।। वह धरती…

साहस खण्ड

(इस खण्ड में १६६६ से १६७७ तक के गीत हैं)

इस खण्ड में इन्दिरा जी के साहसिक कार्यों की चर्चा है। सन् पैंसठ के युद्ध के पश्चात् भारत अपनी आर्थिक प्रगति में जुट गया था। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सुरक्षा के साथ-साथ हरित क्रान्ति के द्वारा अन्न की पैदावार बढ़ाने पर बहुत जोर दिया। कल कारखानों में सभी आवश्यक प्रयोग की चीजों के उत्पादन को भी बढ़ावा दिया। हम सुरक्षा व अनाज में आत्म निर्भरता की ओर बढ़ रहे थे। समाजवाद के नारे को भी साकार करने हेतु बैंकों का राष्ट्रीयकरण सन् १६६६ में किया गया तथा राजाओं और नवाबों के प्रीवीपर्स (भत्ते) भी समाप्त किये गये। इन साहसिक कार्यों के कारण इन्दिरा जी ने भारत के कमजोर वर्ग को अभूतपूर्व ढंग से प्रभावित किया जिसकी चर्चा निम्नांकित गीत में है :–

(बैंकों के राष्ट्रीयकरण व प्रीवीपर्स वन्द पर)

साहस गीत

गरीबी हटाओ नारा जो ये इन्दिरा जी ने लगाया है ।
बैंकों को राष्ट्रीय बना दिया साहसिक कदम उठाया है ॥
जिन बैंकों से सरमाये दार धन लेकर काम चलाते थे,
निर्धन का शोषण करते थे और पैसा खूब कमाते थे,
उनका खोला द्वार गरीब के लिए सुयश कमाया है ॥ बैंकों को···
थोड़े ब्याज पर गरीबों को अब धन दिलवाया जायेगा,
छोटे मोटे चलाकर धन्धे उत्पादन बढ़ाया जायगा,
मची खलबली देश के अन्दर सरमायेदार घबराया है ॥ बैंकों को···
कई काम यह इन्दिरा जी ने दुनिया में अनमोल किये,
राजाओं और नवाबों के पेंशन भत्ते गोल किये,
समाजवाद का सूरज देखो भारत में प्रगटाया है ॥ बैंकों को···
परम पिता का पुत्र नहीं वह जिसके दिल में प्यार नहीं,
जो मेहनत नहीं करता उसको खाने का अधिकार नहीं,
जन जन में अब श्रीमती इन्दिरा गांधी का यश छाया है ॥ बैंकों को···

इधर भारत में कुछ क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे थे। उधर पाकिस्तान अपनी खोई प्रतिष्ठा को पाने को प्रयत्नशील था। फलस्वरूप उसने भारतीय सीमाओं पर १६७१ में कई जगह फिर आक्रमण कर दिया। बंगला देश तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में फिर अराजकता और वद इन्तजामी पहले से बढ़ रही थी। लाखों बंगाली भारतीय क्षेत्रों में घुस आये थे। इस अवसर पर इन्दिरा जी ने बहुत साहस का परिचय दिया। उस समय फिर सुरक्षात्मक वातावरण की आवश्यकता पड़ी निम्न गीतों में यही भावना जागृत की गयी है।

गीत

वतन को नौजवानों की जवानी की ज़रूरत है।
बदन में खून के अन्दर रवानी की ज़रूरत है॥

वतन पर मरने मिटने के करे ज़जबात जो पैदा,
अश्फ़ाक़ बिस्मिल और भगत सिंह बनके हो शैदा,
शिवा प्रताप और झांसी की रानी की ज़रूरत है॥ वतन को…

जहालत से जीये तो क्या कोई जीने में जीना है,
जुल्म के सामने आये वही सीने में सीना है,
जिये तो शान से उस ज़िन्दगानी को ज़रूरत है॥ वतन को…

लुटाई हो गई तो फिर अगर जागे तो क्या जागे,
जिसे चंगेज नादिर और हलाकू देख कर भागे,
तुम्हारी तेग भवानी में उस पानी की ज़रूरत है॥ वतन को…

तजो मजहब व मिल्लत के विवादों को वतन वालों,
किसानों और मजदूरों वतन की मांग भर डालो,
कर्ण और सेठ भामाशाह दानी की ज़रूरत है॥ वतन…

बंगला देश की लड़ाई में अभूतपूर्व वीरता दिखाने वाली लड़की रोशन आरा बेगम की कहानी।

राधेश्याम

गरूर में हो चूर-चूर जब पापी पाप कमाता है।
नष्ट भ्रष्ट हो जाता है ये इतिहास बताता है॥

यहिया खां ने तो तैमूर हलाकू आदि सारे भुला दिये ।
लाखों ही निर्दोष बंगाली मौत के मुँह में सुला दिये ।।

मांग रहे थे हक अपना वह निर्दोष विचारे जब ।
पाकिस्तानी फौज ने उन पर भारी जुल्म गुजारे जब ।।

औरतों बच्चों बूढ़ों पर इस कदर जुल्म ढाया गया है ।
लाइन में खड़ा कर दिया और गोलियों से उड़वाया ।।

बलात्कार करने को फौजें कालिज तक में जायें घुसी ।
लड़कियां इज्जत बचाने को छत से नीचे कूद पड़ीं ।।

गांव के गांव जला डाले इस क़दर जुल्म ढाया गया है ।
रोशन आरा को रास्ते में छोटे भैया ने बताया है ।।

गीत

आपत्ति भारी आयो री, बहना,
किया जालिमों ने घाव, दिया फूंक सारा गांव,
और गाम की घटायें छायी री बहना ।।
पहले घरों की करी लुटाई, लड़की जवान सब बस में बैठाई
आंखों से आप मैंने, देखा सब पाप मैंने, जाती बात बताई री, बहना ।।

आगे से घरों का कुण्डा लगाया, पिता और माता को जीता जलाया
लोग तो भूल में थे, बच्चे स्कूल में थे, मुश्किल से जान बचाई री, बहना ।।

टैंकों के कारण छाये सन्नाटे, मास्टर ने बच्चों को हथियार बाटें
टैंकों पै डारने को दुश्मन को मारने को, योजना हमने बनाई री, बहना ।।

लाशें तड़फतो मिलीं रास्ते में, देखो एक बम मेरे बंधा बस्ते में
अभयराम जंग को केशरिया रंग की, अगली है कविताई, री बहना ।।

गीत

जब भाई ने यह बतलाया क्रोध बदन में छाया ।
छाती से बम बंधवाया बहादुर लड़की ने ।।
देश प्रेम की लगी आग बदन में, क्रोध छा गया इसके कण-कण में
दोनों हाथों में हथियार और करने मारा मार
वहां से कूच ठहराया, बहादुर लड़की ने ।। जब भाई··
था हाथ में जिसके निज देश का झण्डा, जो दुश्मन आया कर दिया ठंडा
ले ली सैकड़ों की जान किया ये काम महान
सारे गांव का क़र्ज, चुकाया बहादुर लड़की ने ।। जब भाई···
थे टैंक जिधर को चल दई दीवानी, कोई किसी किस्म की नहीं दहशत मानी
बनी वीरता की खान बदला लेने की ली ठान
और जंगी विगुल बजाया बहादुर लड़की ने ।। जब भाई...
सड़क किनारे इक पेड़ के ऊपर, बैठ गई थी उस बम को कसकर
आया टैंक जब मरदूद, गई उसके आगे कूद
और कमाल कर दिखलाया—बहादुर लड़की ने ।। जब भाई···
आई टैंक के नीचे बम फूट गया था वो टैंक भंयकर तभी टूट गया था
लग गई थी आग शत्रु गये सभी भाग
दुश्मन का किया सफाया—बहादुर लड़की ने ।। जब भाई
रोशन आरा तभी वही सो गई, मरकर जग में वह अमर हो गई,
किया काम वह अभयराम हुआ शहीदों में नाम
दुनिया में यश फैलाया—बहादुर लड़की ने ।। जब भाई···

पाकिस्तान के हार ने पर उसके लाखों सिपाहियों को भारतीय सेनाओं द्वारा गिरफ्तार किये जाने पर विजय दिवस मनाया गया ।

विजय दिवस

विजय दिवस तो मना रहे जिसकी याद सुहानी है ।
लेकिन इस में छिपी हुई वीरों की अमिट निशानी है ।।
कितने वीरों ने खेली है वहां ¦पर खून की होली,
अन्तिम घड़ियों में भी मुंह से जय भारत मां की बोली,
विजय दिवस ही जिनकी अन्तिम सुखद कहानी है ।। लेकिन············

मताओं के लाल गए देवियों के सिंदूर लुटे,
अन्तिम दर्शन भी न किये अपने वतन से दूर लुटे,
दुश्मन की छाती पर चढ़ कर दी अनमोल जवानी है ॥ लेकिन......

पाप व अत्याचार के आगे जो भी अड़ा दे सीना,
उसी वीर का दुनिया में सफल होता है जीना,
पीर पराई में मिट जाना भारत की रीति पुरानी है ॥ लेकिन......

अभी दूर है मंजिल आगे क़दम बढ़ाने होंगे,
ऐसे तो कई और विजय दिवस मनाने होंगे,
ज़िन्दगानी तो अभयराम होती आनी जानी है ॥ लेकिन.........

गीत

शिमला-समझौता

वही हुआ परिणाम युद्ध का जो दुनियां में होता है ।
शिमला में आ किया पाक ने भारत से समझौता है ॥
भारत ने ही दुनियां को दिया पंचशील का नारा है,
खुद जियो औरों को जीने दो ये नियम जान से प्यारा है,
नहीं किसी पर हमला करना निज मन में धारा है,
हमलावर को नहीं छोड़ना भी सिद्धान्त हमारा है,
हठ धर्मी अभिमानी स्वार्थी धार में नाव डुबोता है ॥ शिमला में... ..

सन् पैंसठ की हार के ऊपर कुछ भी ध्यान किया ना,
ताशकन्द समझौतें का पालन और मान किया ना,
एक पड़ोसी देश के संग व्यवहार का ज्ञान किया ना,
बंगला देश की कठिनाई को भी आसान किया ना,
बार बार, कश्मीर का लेकर नाम ये झगड़ा झोता है ॥ शिमला में......
हथियार डालकर पाकिस्तान ने हार को स्वीकार किया,
भारत ने जब पाक के लाखों लोगों को गिरफ्तार किया,
बहुत से पीड़ित बगंला देश के नागरिकों का सत्कार किया,
एक साल तक खाना देकर उन पै बड़ा उपकार किया,
जो जगता है पाता है जो सोता है वह खोता है ॥ शिमला मे......

इन्दिरा जी ने भुट्ठों को शिमला में बुलवाया था,
नहीं लड़ाई करे परस्पर ये निश्चित लक्ष्य बनाया था,
जीते हुये इलाकों और सैनिकों को भी छुड़वाया था,
बातों में झगड़ें निबटायें लिख हस्ताक्षर करवाया था,
वैसा ही फल मिलें जगत में जैसा बीज कोई बोता है ।। शिमला में···

आपात्-स्थिति क्यों आई

बंगला देश की लड़ाई में भारतीय फौजों की शानदार जीत से इन्दिरा जी के प्रभाव में सोने में सुहागे वाली वात हुयी अव कुछ तत्व अनैतिक कार्यवाही करने पर उतारू हो गये। देश में कई स्थानों पर तोड़ फोड़ की घटनायें घटीं। अराजकता फैला कर शासन को वदनाम करने का प्रयास आरम्भ हुआ। इन में कुछ नेताओं के हाथ होने की भी चर्चा होने लगी। तव शहीदों की कुर्वानी को याद दिला कर जनता को वास्तविकता से परिचित कराया गया। निम्नांकित गीत में यही भाव है।

गीत

देश के कारण जिन वीरों ने खेली खून की होलियां ।
उनकी कुर्बानी से नेता भर रहे धन से झोलियां ।।
जलियां वाले, उस उपवन में, था खून बहा, हम बन्धन में,
ऊधम ने लिया देश का बदला डायर मारा लन्दन में,
कई बंधें पड़े रहे बेलों में, कई सड़ा दिये थे जेलों में,
कई काले पानी सड़ा दिये, और फांसी ऊपर चढ़ा दिये,
मरते मरते रहे बोलते भारत मां की बोलियां ।। उनकी कुर्बानी······

चन्द्रशेखर के अरमानों ने, विस्मिल के बलिदानों ने,
एसेम्बली में बम फेंका था जाकर दो दीवानों ने,
दत्त भगतसिह नौजवानों ने आज़ादी के परवानों ने,
सांड्रस मार किया बलवा गये दिखा जवानी का जलवा,
हंसते हंसते फांसी चढ़ गये बना बनाकर टोलियां ।। उनकी कुर्बानी···

अंगरेजों पे बनी बिजली थी बीरागंना वह इकली थी,
बच्चा बांध कमर में जब वह समर भूमि में निकली थी,
वह झांसी वाली रानी थी की उसने कुर्बानी थी,
नेता जी रंगून गया अपना वहाने खून गया,
लुटी देश के ऊपर ऐसी नौजवानी अनमोलियां ॥ उनकी कुर्बानी···

कुछ सोचो तो विचारो तुम मतना ज़ुल्म गुज़ारो तुम,
अरे देश के नेताओं कुछ देश की ओर निहारो तुम,
भूखी जनता रो रही, बहनें असमत खो रहीं,
शहीदों की आत्मा रो देगी तुम्हें दुनिया भर से खो देगी,
अभयराम अब होश करो जो होना था हो लिया ॥ उनकी कुर्बानी···

देश के नेताओं का न जाने क्या इरादा है,
बनाने की तमन्ना या मिटाने का इरादा है।

गड़बड़ी फैलाने पर गीत

बड़ी गड़बड़ी का समय आ गया है ।
खाक़ा वतन का बतला रहा है ॥
जिधर देखो हलचल मची जा रही है,
बुराई से दुनिया रची जा रही है,
भलाई का मिटता निशां जा रहा है ॥ खाका वतन का···

विदेशियों ने भारत में अजब गुल खिलाये,
दिलों से मानवता के रिश्ते मिटाये,
धमाका बमों का हुआ जा रहा है ॥ खाका वतन का···

गरीबों की दुनिया लुटी जा रही है,
लबे दम हैं गर्दन घुटी जा रही है,
लुटेरों का चक्कर चला जा रहा है ॥ खाका वतन का··

निम्न गीत श्री के० बी० चन्द्रा, गीत नाटक अधिकारी, उ०प्र० के सुझाव पर लिखा गया था।

काले धन्धे, आन्दोलन और हड़ताल के खिलाफ गीत

देशवासियों देश के अन्दर धन्धें काले बन्द करो।
मेहनत से सब काम करो और हड़तालें बन्द करो॥
आन्दोलन कराने वालों का काम तो होता थोड़ो का,
इक दिन होता काम बन्द तो हो नुकसान करोड़ों का,
आन्दोलन हड़तालों से उत्पादन घट जाता है,
जमाखोरी हो जाती है और काला धन बढ़ जाता है,
समाज विरोधी स्वार्थियों की सभी कुचालें बन्द करो॥ मेहनत से...

गरीबी मिटी या नहीं मिटी यह पूछो आज किसानों को,
बदले हुए घरों को देखो खेतों और खलियानों को,
पैदावार वढ़ाने की जहां आपस में होड़ लगी है,
भूख गरीबी भाग रही है और रास्ता छोड़ रही है,
दीन दुखी निर्धन बेकस के कष्ट कसाले बन्द करो॥ मेहनत से...

सारी दुनिया भारत की शक्ति का लोहा मान रही,
क्या था और क्या हो गया भारत इसको पहचान रही,
गांव गांव में सड़क बनी और बिजली की उजियाली है,
फौजों ने भी अपने देश की डट कर की रखवाली है,
निर्दोषों का खून बहाये वह बर्छी भाले बन्द करो॥ मेहनत...

तोड़ फोड़ के खिलाफ गीत

चमन वालों चमन में आग भड़काने से क्या होगा।
खिलायें फूल मेहनत से ये जलवाने से क्या होगा॥
जो सोता है वह खोता है जो जगता है वह पाता है,
समय बीता हुआ हरगिज्ज कभी ना हाथ आता है,
लिया चुग खेत चिड़ियों ने तो पछताने से क्या होगा॥
खिलाये फूल............

इन्सानियत पुरुषार्थ को अब जगाने की ज़रूरत है,
मुहब्बत के चरागों को जलाने की ज़रूरत है,
दिलों में शोले नफ़रत के भड़काने से क्या होगा ।।
खिलाये फूल……

वतन का दर्द गर दिल में तो मतलब क्या बखेड़ों से,
मुसीबत तो टले मर्दानगी के ही थपेड़ों से,
मुक़द्दर पर भरोसा करके सो जाने से क्या होगा ।।
खिलाये फूल……

अराज़कता फैलाने वालों, तोड़फोड़ कराने वालों, और कानून व्यवस्था भंग कराने वालों ने देश प्रेम को त्याग दिया और विदेश तक से सम्बन्ध जोड़ लिये । इसके लिए गीत निम्नांकित है ।

गीत

भारत से इन्हें अगर प्यार होता ।
तो बना बनाया कांम यों ना बिस्मार होता ।। भारत से……

एक तरफ तो मौत से कुश्ती लड़ी है वीर जवानों ने,
और दूसरी तरफ तिजोरी भर ली है धनवानों ने,
वतन का इन्हें क्या, यही इनके जी में,
रहे पांचों अंगुली सदा इनकी घी में,
गोदामों में सड़ता रहे चाहे गल्ला,
बिना अन्न के मगर रहे पड़ता हल्ला,
दुखिया दीन गरीबों के मर गये तड़फ कर लाल रे ।। भारत से…

कई निकले गद्दार ऐसे भी जा दुश्मन को भेद दिया,
बैठे हैं जिस नाव के अन्दर उसी नाव में छेद किया,
ये रेलों बसों और मिलों को जलाना,
छुरे बाज़ियाँ और गोली चलाना,
वतन के युवक ये कहाँ जा रहे हैं,
क्या कर रहे हैं गजब ढा रहे हैं,
देश प्रेम को त्याग दिया और हुआ हाल बेहाल रे ।। भारत से…

प्रेम प्यार की अमर लता को जो छुरियों से छांट रहे,
भाषाओं के नाम के ऊपर आज वतन को बांट रहे,
ये बंगाली उड़िया कन्नड़ के झगड़े,
पंजाबी मदरासी भाषा के रगड़े,
करो एकता ऐ सुनो देश वालों चमन में,
लगी आग इसको बुझा लो,
स्वारथ के वश भारत को ये रहे कष्ट में डाल रे ।। भारत से···

प्रधान मंत्री के बीस सूत्री आर्थिक कार्य-क्रम पर गीत

उन्नत पथ के सूत्र बीस हैं इन पर आप विचार करो ।
भारत वालों मिलकर आओ भारत का उद्धार करो ।।

सबसे पहली बात चीज सब सही दाम पर आवे,
मेहनत से सब काम करे उत्पादन खूब बढ़ावें,
सीमा से हो अधिक भूमि वह गरीबों में बटवावें,
वसूली और वितरण व्यवस्था को भी ठीक बनावें,
बेघर को घर लायक भूमि देकर के उपकार करो ।। भारत वालों···

नहीं ले कोई बेगार नियम में ध्यान में लाना होगा,
कर्जा माफ हुआ निर्धन का इन्हें नहीं सताना होगा,
पचास हजार हेक्टर भूमि में पानी पहुंचाना होगा,
बढ़ा के बिजली का उत्पादन क़दम बढ़ाना होगा,
अन्न वस्त्र की कमी रहे ना ज्यादा पैदावार करो भारत वालों···

हथ करघों की बढ़ावें क्षमता कपड़ा होगा सस्ता,
समाजीकरण हो नगरी भूमि का साफ बनेगा रस्ता,
भवन में लगा काला धन कितना जांच करेगा दस्ता,
नम्बर दो के माल वालों का हाल बनेगा खस्ता,
सम्पत्ति जब्त हो तस्करों की, दूर ये भ्रष्टाचार करो ।। भारत से...

वड़ी गड़वड़ी का समय आ गया है।
ख़ाका वतन का वतला रहा है।।

आपात स्थिति की घोषणा

चमन वालों चमन में आग वरसाने से क्या होगा ।
खिलायें फूल मेहनत से ये जलवाने से क्या होगा ।।
दिलों में शोले नफरत के भड़कानें से क्या होगा ।
मुक़द्दर पर भरोसा करके सो जाने से क्या होगा ।।

———

इंसानियत पुरुषार्थ को अव जगाने की ज़रूरत है ।
मुहब्वत के चिरागों को जलाने की ज़रूरत है ।।

गरीबी हटाने की दिशा में श्री विद्या भूषण ने संजय गांधी के साथ मिलकर काम किया था

आयात लाइसेंस का नहीं होने पाये दुरुपयोग यहां,
बसों के परमिट राष्ट्रीय होंगे बने सफल संयोग यहाँ,
क़र्ज़ा मिलेगा बैंकों से चलेंगे कुटीर उद्योग यहां,
सुविधा मिले छात्रावासों में कटे छात्रों के रोग यहां,
बेकार न रहे अभय जो चाहो रोजगार करो ॥ भारत वालों···

परिस्थितियों को देखते हुए आपात स्थिति की घोषणा कर दी गयी।

इन्दिरा जी के प्रति

चट्टान की तरह तेरी शक्ति महान है।
मोती है तेरे खून में जवाहर की शान है।
होना है दीन का तुझसे कल्याण है,
इस देश का गौरव है तू और स्वाभिमान है,
हर खिजां ने बहार में चेहरा छिपा लिया,
डूबने से मुल्क को तूने बचा लिया,

गीत बढ़ते हुए कदम

ये बढ़ते कदम अब रुकेंगे नहीं नौजवानों, चलो जिन्दगी के लिये।
देखो मंजिल पुकारे खड़ी सामने निश्चय जानो, चलो जिन्दगी के लिए ॥

फूल सब रंग के पर चमन एक है, कई फिरके मजहब वतन एक है,
और मजबूत हो एकता की कड़ी, बिखरे दोनों, चलो जिन्दगी के लिए।

श्रम की बूंदें पड़ी फल भी आने लगे, सर फिरे कुछ इन्हें देख ललचाने लगे,
जल जायेंगें, इनको जलने न दे परवानों चलो जिन्दगी के लिए ॥

चाल चल के गरीबों की ली रोटियाँ, काले धन से बनाली जो ये कोठियां,
कठिन वक्त अभयराम इनसे ही है, पहचानो चलो जिन्दगी के लिए ॥

गीत

मानव मानव नहीं है वह जिसके दिल में प्यार नहीं ।
जो मेहनत नहीं करता उसको खाने का अधिकार नहीं ।।
सदा आलसी हारे युद्ध में मेहनत वाले जीत गये,
आपने देखा राजाओं और नवाबों के दिन बीत गये,
समाजवाद के सूर्य उदय पर रह सकता अधंकार नहीं ।। जो मेहनत···

उन्नत पथ के बीस सूत्र हैं इन्हें आप अपनाओ,
परिवार नियोजन करो और बिना पढ़ों को पढ़ाओ,
बिना सफाई के रहता कभी कोई स्वस्थ परिवार नहीं ।। जो मेहनत···

दहेज न लेगें देगें हम अब यह निश्चित लक्ष्य बनाओ,
धरती पर हरियाली छाये इसलिए वृक्ष लगाओ,
अभयराम नहीं जिसमें पुरुषार्थ उसका घर संसार नहीं ।। जो मेहनत···

इन्हीं दिनों आर्यं भट्ट उपग्रह छोड़ा गया । निम्नलिखित गीत मैंने उप निदेशक गीत नाटक प्रमाग श्री बृजेन्द्र लाल शाह के सुझाव पर तैयार किया था ।

गीत

मां के वीर सपूतों की हम गाथा गायें ।
भारत के गौरव महिमा को फिर दोहरायें ।।

आर्यं भट्ट उपग्रह जो भारत ने छोड़ा,
इसका हाल सुनाऊंगा मैं थोड़ा-थोड़ा,
भारत को खगोल विद्या से ऐसा जोड़ा,
दंग रह गये सभी विदेशी खाकर कोड़ा,
उसी आर्य भट्ट पण्डित की आओ बात बतायें ।। भारत का गौरव ··

पन्द्रहवी शताब्दी में जिसको मां ने जाया,
वह बेटा वैज्ञानिक आर्य भट्ट कहलाया,
पाटली पुत्र ने जिसके कारण गौरव पाया,
गणित विद्या में चमत्कार उसने दिखलाया,
उसकी पन्द्रह सौवीं शताब्दी हम मनायें ।। भारत का गौरव…

गुप्तकाल का वह वैज्ञानिक अजर अमर है,
भूमण्डल पर छाई जिसकी बुद्धि प्रखर है,
जिसकी ज्योतिष व बीज गणित सिद्धान्तों पर है,
दुनिया के वैज्ञानिक पाते नई डगर हैं,
उसी आर्य भट्ट को आओ शीश झुकायें ।। भारत का गौरव…

आर्य प्रदीप ग्रन्थ का वह ग्रन्थकार था,
ज्योतिष विद्या से जिसको असीम प्यार था,
सभी ग्रह सूर्य परिक्रमा करें कहा बार-बार था,
यह सिद्धान्त बताना जिसका चमत्कार था,
जन जन में अभयराम यह गीत सुनायें ।। भारत का गौरव ··

दहेज उन्मूलन गीत

नौजवानों क़ौम की अब टूटी लड़ियां जोड़ दो ।
वक्त की आवाज है दहेज लेना छोड़ दो ।।
कितनी क्वांरी कन्याएं बिन शादी जीवन खो रही,
कितनी जलकर मर गई कितनी बैठी रो रही,
अब सहा जाता नहीं ये बंधन तोड़ दो ।। वक्त की…………

देखकर हालत तुम्हारी आसमां भी रो रहा,
शादी का चुप चाप जो ये काला सौदा हो रहा,
ये भयंकर पाप है अब इसका भण्डा फोड़ दो ।। वक्त की……

बेटियां भी बहनें भी पत्नी भी बन जाती यही,
पूजने के योग्य मातृ शक्ति कहलाती यही,
इनका जो अपमान करता उसके मुँह को मोड़ दो ।। वक्त की

क़ौम के तुम हो रक्षक इतना भी ना बोध है,
क़स्म खाओ दहेज़ न लेंगे अभयराम का अनुरोध है,
नासूर बनकर रिस रहा दूर कर ये कोढ़ दो ।। वक्त की……

नवयुवकों को कठिन परिश्रम, दूर दृष्टि, दृढ़ निश्चय और अनुशासन के लिए प्रेरित करने के लिए निम्न गीत सुनाया गया ।

गीत

चल दीवाने तेजी से, तुझे मंजिल खड़ी पुकारे ।
जीवन ज्योति जगायेंगे, भारत नया बनायेंगे ।।
कठिन परिश्रम, दूर दृष्टि, और दृढ़ निश्चय, अनुशासन से,
करें एकता भारत में, गरीबी दूर भगायेंगे ।। चल दीवाने……

आशाओं के द्वीप जलाकर, देश प्रेम की ज्योति जगाकर,
पिछड़े हुओं को गले लगाकर, गीत खुशी के गाये,
एक पिता के पुत्र सभी हम धर्म यही बतलाता है,
इसीलिए तो हम सबमें भाई-भाई का नाता है ।। चल दीवाने……

अज्ञान अधेरे मिट जायेंगे, ग़म के बादल फट जायेंगे,
जन सेवा में जुट जायेगें, है अब फर्ज हमारा,
हिम्मत से बढ़ने वालों पर जग की घात हुआ करती,
पहले भीषण गर्मी होती फिर बरसात हुआ करती ।। चल दीवाने……

कोई किसी का करे ना शोषण, मेहनत कश को मिल जाये जीवन,
तन पे कपड़ा पेट में भोजन, बांट सभी मिल खायें,
समाज के अन्दर किसी किस्म का चोर न रहने पाये,
अभयराम दफ्तर में रिश्वत खोर न रहने पाये ।। चल दीवाने……

आपात स्थिति के पश्चात जो जादुई चमत्कार हुआ और देश में अभतपूर्व परिवर्तन आया उस पर आधारित गीत ।

गीत आपात् स्थिति

आपात स्थिति बन गई है वरदान ।।

एक दम घोर अन्धेरे में ऐसा तेज प्रकाश हुआ,
ज़ालिम और अन्याइयों का सारा पर्दा फ़ाश हुआ,
सूखी धरतो हरी हो गयी मेहरबान आकाश हुआ,
दुख के बादल फट जायेंगे जनता को आभास हुआ,
ठीक समय पर दफ्तर में अब अफ़सर बाबू आने लगे,
बाक़ी पड़ा था काम जो उसको तेजी से निपटाने लगे,
रिश्वत खोर रिश्वत लेने में मन ही मन सकुचाने लगे,
फ़ैशन परस्ती छोड़ो आकर बीबो को समझाने लगे,
रिश्वत नहीं चलेगी हो गया दफ्तर में एलान ।।
आपात् स्थिति…………

कहे विनोवा, अनुशाशन पर्व तभी छाया ऐसी छाने लगी,
छः छः घन्टे लेट रेल अब ठीक समय पर आने लगी,
गुण्डों और बदमाशों की भी बुद्धि चक्कर खाने लगो,
होकर के निर्शचित लड़किया कालिज पढ़ने जाने लगी,
प्रधानाचार्यों आचार्यों के मन में बड़ा आनन्द हुआ,
सकल देश में लड़कों का भी हुड़दंग एकदम बन्द हुआ,
जो निर्माणों का नाश करे थे उनके गले में फन्द हुआ,
पुलिस की सेवा तेज हुई बन्द सभी दुख द्वन्द हुआ,
अराजकता फैलाने वालों को कर दिया है सावधान ।।
आपात् स्थित…………

बीस सूत्री कार्यक्रम से नई हवा इक आई है,
मेहनतकश और गरीब जनता मन ही मन हर्षाई है,
भूमिहीन को भूमि मिल रही छटा निरालो छाई है,
क़र्जा माफ़ हुआ निर्धन का दूर हुई कठिनाई है,
दीन हीन निर्बल विकलों को गम के बादल फटने लगे,
अन्न की पैदावार बढ़ाने को कृषक खेत में डटने लगे,

खाद बीज पहले से ज्यादा जगह-जगह पर बटने लगे,
कुछ नहीं होगा कहते थे जो भाव दिलों से हटने लगे,
हालात बदलते हुए देखकर जनता है हैरान ।। आपात स्थिति···
आन्दोलन हड़तालों ने यह गड़बड़ कर रखा था,
और कुछ नेताओं ने भी जनता में विष भर रखा था,
मजदूर किसानों विद्यार्थियों पर हाथ गलत धर रखा था,
फौज पुलिस तक के सम्मुख घातक लेक्चर रखा था,
सिसकती हुई मानवता में फिर प्राणों का संचार हुआ,
हाथ हुये मजबूत भलों के दुष्टों को कष्ट अपार हुआ,
दिशा मिली गुमराहों को ऐसा वातावरण तैयार हुआ,
देश काम पर जुट गया जीना बेकारों का दुश्वार हुआ,
इसी तरह यदि होता रहा तो हो जाये कल्याण ।। आपात् स्थिति···
नहीं देश का ध्यान जरा था मिलावट करने वाले में,
घोड़े की लीद मिला कर बेची पापी ने गर्म मसाले में,
लगे हुए थे तस्कर चोर बाजारी धन्धे काले में,
डी० आई० आर० लागू होने से पड़ गये गड़बड़ झाले में,
कहां और कितना दो नम्बर का माल ये आंका जायेगा,
भवन में लगा धन काला कितना सारा नापा जायेगा,
सीमा से जो अधिक भूमि धन जनता में बांटा जायेगा,
हानिकारक पौधों को गुलशन से छांटा जायेगा,
ऊँच नीच का भेद मिटेगा बनेगा सभी समान ।। आपात् स्थिति···
अणु शक्ति के यहाँ पर हो रहे निशि दिन अनुसंधान सुनो,
जन संख्या पै करे नियंत्रण बढ़े वेतन की शान सुनो,
किसी चीज की कमी रहे ना देश हो धन की खान सुनो,
अन्न की पैदावार बढ़े हो सुखी मजदूर किसान सुनो,
लेकिन ध्यान रहे यह नहीं अपने आप हो जायगा,
कठिन परिश्रम करने से ही यह सम्भव हो पायेगा,
काले धन्धे नहीं करें जो भी इसमें हाथ बटायेगा,
भारत मां का सपूत सच्चा वह ही वीर कहायेगा,
अभयराम बन जायेगी अपने वतन की शान ।। आपात् स्थिति···

पुनर्प्रतिष्ठा खण्ड

१९७७ से १५ अगस्त १९८२ तक के गीत

आपात् स्थिति के पश्चात सन् सतत्तर में चुनावों से नई सरकार बनी। पिछली सरकार के विरुद्ध विशेष रुप से दो बातें उठायी गयीं, पहली आपात् स्थिति की ज्यादती, दूसरी परिवार नियोजन में जबरन नसबन्दी। कहीं-कहीं संदेह में कुछ भले आदमी भी ज्यादतियों के शिकार हुये हों इस बात से इंकार नहीं हो सकता। नसबन्दी में भी जोर ज़बरदस्ती की चर्चा सुनने में आई मगर वह नगण्य थी। इन दोनों बातों का बहुत प्रचार करना राष्ट्र के भविष्य के लिये अच्छा सिद्ध नहीं हुआ।

इस सरकार ने कुछ नई बातें भी आरम्भ कीं। परिवार नियोजन की जगह परिवार कल्याण, मद्य निषेध के स्थान पर नशाबन्दी कर दिया गया। परिवार कल्याण से मतलब सीमित परिवार से ही था जिसके लिये परिवार नियोजन में प्रचार किया जा रहा था। नशाबन्दी के अंतर्गत ऐसा लगता था कि शराब के अतिरिक्त अन्य नशीले पदार्थ सेवन न करने के लिए भी प्रेरित किया जायेगा परन्तु ऐसा वास्तव में नहीं हुआ। इससे जन साधारण में निराशा हुई। शराब बन्दी से सम्बन्धित निम्न गीत से स्थिति स्पष्ट है।

गीत

कोई मत पियो शराब ज़हर की प्याली है ॥
पीकर ढंग होय बेढंगा—कर देती बिल्कुल भिखमंगा,
भिखारी बने नवाब, ज़हर की प्याली है ॥ कोई मत तुम ....

जो मेहनत से करी कमाई नशे मे सारी धूल मिलाई,
सेहत करे खराब, ज़हर की प्याली है ॥ कोई मत तुम ....

आंखों वाला भी हो अन्धा मन को कर देती है गन्दा,
किसी तरह नहीं लाभ, ज़हर की प्याली है ॥ कोई मत तुम ....

"अभयराम" नवयुवकों आओ, पीने वालों को समझाओ,
मिलेगा बड़ा सबाब, ज़हर की प्याली है ॥ कोई मत तुम ....

जहां जहां शराव वन्दी हुई वहाँ-वहाँ कुछ ऊपरी सुधार अवश्य देखने को मिला। मगर पहले तो लोग ठेकों से लाकर पीते थे, इन दिनों लोग घरों में, जंगलों में, एवं अन्य गोपनीय स्थानों में शराव वना-वनाकर पीने लगे। देहरादून मंसूरी जैसी जगह पर शराव की दस रुपये वाली वोतल सत्तर सत्तर अस्सी-अस्सी रुपये में चोरी से विकने लगी। परिवार कल्याण की तो और भी स्थिति खराव हुई। परिवार छोटा सुनते ही लोग मज़ाक उड़ा कर कहते थे अव इसकी क्या जरूरत हैं। राष्ट्र एकता को तो वड़ा भारी धक्का लगा। जहां कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक, और आसाम से पंजाव तक, सारा देश एक झंड़ें के नीचें था वहा वंगाल, आसास, पंजाव, मद्रास, केरल, आदि सभी प्रांतों में अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग अलापने लगे। सोना बेंचने की भी जनता में प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुयी। किसानों की फसल का उचित दाम नहीं मिला। महिलाए तक अपने गीतों में निम्न प्रकार गाने लगी थीं।

हम तो लुट गये रे इन नेताओं के प्यार में।
पातो बिक रही सवा सात और गन्ना साढ़े चार में॥

इन्ही दिनों भारत की लक्ष्मी पुस्तक भी अलग से लिखी गई थी। विस्तार से जानना चाहें तो उसे देख लें।

गत तीस वर्षों में जितनी उन्नति देश में हुई वह सर्वविदित है। लड़ाइयां हुई, उत्पादन वढ़ा, एकता के लिए सराहनीय कदम उठाये गये, परन्तु आवादी भी तेजी से वढ़ती गई, जिसके फलस्वरूप जितनी उपलब्धियां हुई थी उनका लाभ जन-साधारण को उसी अनुपात में नहीं मिला। काले धंधें, तस्करी आदि भी वढ़ी और कानून व्यवस्था अधिक खराव हो गई। इन सब पर विजय पाने के लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी ने जो कार्य किये, इमरजेन्सी उनमें एक था।

जो लोग किसी प्रकार कुर्सी चाहते थे सतत्तर के चुनाव में उन्हें कुर्सी मिल गई। वे अच्छी तरह जानते थे कि वे किस प्रकार सत्ता में आये हैं। अतः श्रीमती इन्दिरा गांधी को क्षति पहुंचाने के लिए तरह-तरह के उपाय किये गये। सम्भवतः इसलिए कि इन्दिरा जी के रहते हुए वह अपने को

सुरक्षित नहीं समझ रहे थे। इन्दिरा जी के खिलाफ आरोपों की झड़ी लगायी गई। अधिक से अधिक कष्ट पहुंचाने के प्रयास किये जाने लगे। आकाश वाणी व दूरदर्शन से शाह आयोग तुर्कमान गेट, नागरवाला और मारुति जैसे काण्ड वनाकर अन्धाधुन्ध प्रचार किया जाने लगा।

इन सभी घटनाओं की जनता में क्या प्रतिक्रिया हुई, यह जानने के लिये श्रीमती गांधी ने दिल्ली से हरिद्वार तक का दौरा किया। उस समय गाजियावाद से हरिद्वार तक अपार भीड़ उनके दर्शनों को उमड़ पड़ी। लेखक भी उस समय मेरठ से हरिद्वार तक साथ गया था। इस यात्रा में श्रीमती इन्दिरा गांधी के दर्शनार्थ ८-८,१०-१० किलोमीटर दूर से स्त्री पुरुष व बच्चे वहुत पहले से ही आकर सड़कों के किनारे जमा हो गये थे। इतनी भीड़ थी कि वहुत से लोग इन्दिरा जी के दर्शन के लिए पेड़ों और विजली के खम्भों पर चढ़े हुए थे। लेखक ने वहुत से लोगों को कांटेंदार बेरी व बबूल के पेड़ों पर खड़े हुए देखा था। पूरा मार्ग तोरण द्वारों, झंडियों और फूलों से सजाया हुआ था। हरिद्वार की विशाल जन सभा को इन्दिरा जी ने सम्वोधित किया। उस समय अपार जन समूह में जो उत्साह दिखायी दे रहा था उसका वर्णन शब्दों में चित्रित करना सम्भव नहीं है।

इन सभी प्रसंगों से यह ज्ञात होता है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी कठिनाई के दिनों में भी देश की सेवा के कार्यों में रत थीं। "हर रहे गुजर पै शमां जलाना है अपना काम, तेवर हवा के क्या है ये हम देखते नहीं।" इसीलिए श्रीमती इन्दिरा गांधी को दक्षिण में चिकमंगलूर में लाखों मतों से विजय ही नहीं मिली वल्कि पुनः मेंढ़क में भी भारी वहुमत मिला था और वह पुनः भारत की प्रधान मंत्री वनाई गई। जिसकी मिसाल विश्व के इतिहास में ढूँढें नहीं मिलती।

यहाँ श्रीमती गांधी के कठिनाई के समय के कुछ प्रसंग व गीत भी लिखना आवश्यक हो गया है। श्रीमती इन्दिरा गांधी व संजय गांधी के जेल भेजने के पश्चात देश की जो विषम परिस्थिति हुयी उसको भी लेखनी से लिखना कठिन है। परस्पर गले मिलकर, भारत माता की जय बोलते हुए, स्त्री पुरुषों को हाथ में झंडा लेकर गीत गाते हुए जेल जाते देखा गया देश प्रेम का ऐसा वातावरण आज़ादी की लड़ाई में देखने को मिला था।

कठिनाई के दिनों में मुजफ्फर नगर की यात्रा

जन सभा को सम्बोधित करती हुयीं श्रीमती इन्दिरा गांधी
चित्र में उनके पास श्री विद्याभूषण जी भी खड़े हैं।
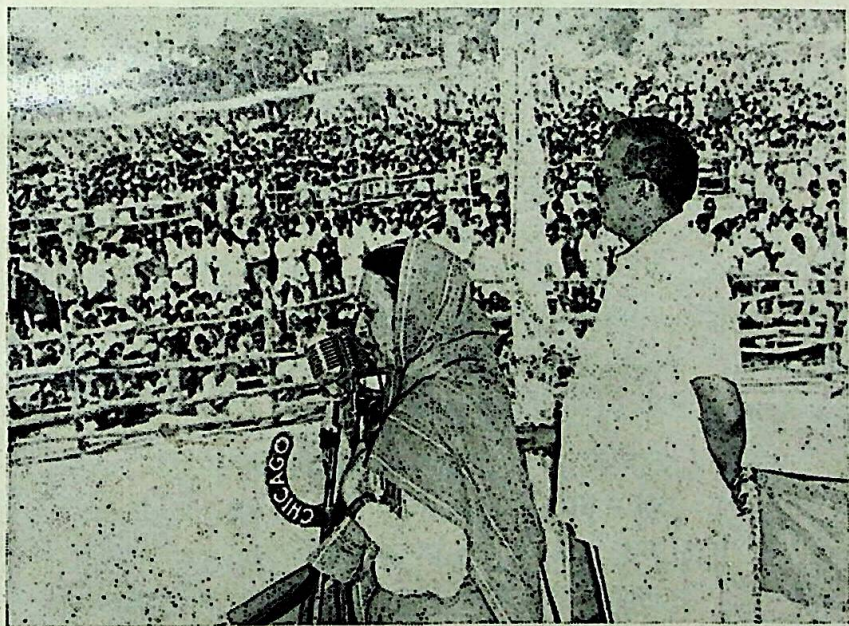
बातें सुनकर बड़ों बड़ों की देश में छाती लरज रही ।
भीड़ में लाखों की देखो वो खड़ी शेरनी गरज रही ॥

जो लहरों पर खेल रचे तूफान में ।
उसी शक्ति को अर्पित मेरे गीत हैं ।।

जो चले दर्द पराया अपना जान कर,
आगत कठिनाई को सपना मानकर,
जो हर दुखियारे से करे प्यार है,
जिसका अपना ही सारा संसार है,

जिसका दिल रमता भूखें इंसान में ।। उसी शक्ति.........
जो मुरझाई कलियों को मुस्कान दे,
विष की प्याली पीकर अमृत दान दे,
जो धरती पर लाकर स्वर्ग उतार दे,
बीस सूत्रों से कर मानव उपकार दे,
जो रातों को बदले स्वर्ग विहार में ।। उसी शक्ति.........

सारे भारत की जेलों में जगह नहीं रहीं। कहीं-कहीं धर्मशालाओं व होटलों में सत्याग्रहियों को ठहराया गया। नये गीतों के साथ कुछ पुराने गीतों में भी एक दो पंक्ति नई जोड़ कर गाया गया। जैसे, वच्चा-वच्चा देश का इन्दिरा गांधी पर निसार "अव तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफिल में है"। सर फरोशी की तमन्ना फिर हमारे दिल में है।

सहारनपुर आदि जेलों में अप्रिय घटनायें भी घटीं। रात के साढ़े ग्यारह वजे सजा पा रहे कैदियों के हाथों में लोहे के सरिये देकर खुला छोड़ दिया गया। जिससे कि वह सत्याग्रही महिलाओं व पुरुषों से दुर्व्यवहार करें। महिलाओं के चीखने की आवाज को सत्याग्रही युवक कैसे सहन कर सकते थे। वह वहीं पास में वन्द थे। किसी तरह वाहर निकले और निहत्थे ही क्रूर क़ैदियों पर टूट पड़े। कई युवकों व युवतियों के हाथ पैर की हड्डी टूट गई। पंडित कमला पति त्रिपाठी इन सत्याग्रहियों को अस्पताल में देखने गये थे।

कौन है असली कौन है नकली किसकी बाते हैं सच्ची ।
जितने नेता आज हैं सब में इन्दिरा गांधी ही अच्छी ॥

गीत

हिन्दू बन या मुस्लिम बन या जैनी सिख ईसाई बन ।
मगर समय की मांग यही है इन्दिरा का अनुयाई बन ॥
किस प्रकार कुछ लोगों ने भारत का रूप बिगाड़ दिया,
इन्होंने मिलकर नेहरू के निर्माण का फोटो फाड़ दिया,
गांधी जी का बोया हुआ था प्रेम का वृक्ष उखाड़ दिया,
फूल फलों से खिला हुआ था सारा चमन उजाड़ दिया ॥
सच का झूठ बनादे जो, मत ऐसा अन्याई बन ॥ मगर समय.........

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम देश में आनन्द छाया था,
अन्न वस्त्र और सोने का भारी भण्डार बनाया था,
फिरका परस्ती मिटाके सारे देश को एक कराया था,
एक घाट में शेर व बकरी को पानी पिलवाया था,
ऊँच नीच का भेद मिटा आपस में भाई-भाई बन ॥ मगर समय......

जिस इन्दिरा ने पूंजीवाद के गढ़ पै धावा बोल दिया,
बैंकों का दरवाजा भी गरीबों के लिए खोल दिया,
भूमि दिलाई भूमिहीन को काम बड़ा अनमोल किया,
क़ानून व्यवस्था महंगाई को तेज़ी से कंट्रोल किया,
इसी तरह से देश का सेवक दीवाना शैदाई बन ।। मगर समय .....

सन् १९८० में जनता ने देश की वागडोर फिर इन्दिरा जी के सबल हाथों में सौंपी । इन्दिरा जी ने फिर देश के चतुर्मुखी विकास की ओर ध्यान दिया । राष्ट्र एकता जैसी आवश्यकता पर सबसे पहले ध्यान गया तथा उन सभी कमियों को पूरा करने में लगीं जिनकी परम आवश्यकता थी । कई कार्य बहुत बुरी तरह विगाड़ दिये गये थे । उनको सुधारने के लिये उन्हें और उनकी नीतियों से प्रभावित श्री केदार नाथ सिंह, आई० ए० एस० जैसे उच्चाधिकारियों को कड़ा परिश्रम करना पड़ा । ज्यों-ज्यों काम करती गईं, स्थिति में सुधार होता गया ।

कौमी एकता गीत

मुहब्बत की दुनिया बसा कर रहेंगे ।
मसावात के गीत गाकर रहेंगें ।।

हिन्दू भी मुस्लिम भी ईश्वर का बन्दा, खुदा एक है नेक दोनों का धंधा
अगर इक इलाही तो है एक नंदा, अगर एक सूरज तो है एक चन्दा
नफरत दिलों से भगाकर रहेंगे ।। मसावात के..........

मंदिर भी मस्जिद भी दोनों है प्यारे, है दोनों के मशरिक की ओर द्वारे
रस्मों रिवाज एक अब तक हमारे, दरिया तो हैं एक दो हैं किनारे
बना पुल किनारे मिला कर रहेंगे ।। मसावात के.........

दिल में ही मंदिर व मस्जिद सही है, दिल में नहीं तो फिर कहीं भी नहीं
काबा यहीं है और काशी यहीं है जहां याद कर लो वो मिलता वहीं है,
ये ज्योति दिलों में जगाकर रहेंगें ।। मसावात के...........

नहीं कोई है ज्यादा व कम बराबर, गंगा का पानी आवे ज़म ज़म बराबर, है ह से हिन्दू म से मुस्लिम बराबर, हिन्दू मुसलमान हैं हम बराबर अंधेरे दिलों से मिटाकर रहेंगे ।। मसावात के............

निम्नलिखित गीत कौमी एकता के लिए जन सभाओं में सुनाया गया ।

गीत

मन्दिर मस्जिद गुरु द्वारे ने मिलकर यही पुकारा है ।
हम भारत के वासी हैं और अमन हमारा नारा है ।।
रंग बिरंगे फूलों वाला चमन हमारा देश है,
सारी दुनिया भर में चाहता अमन हमारा देश है,
इसकी रक्षा हेतु हमने अपना तन-मन वारा है ।। हम भार के··
क्या हिन्दू क्या मुस्लिम और जैनी सिक्ख इसाई हैं,
मानवता के नाते हम आपम में भाई-भाई हैं,
अपना भारत देश हमें प्राणों से भी प्यारा है ।। हम भारत के···
ऊंच नीच का भेद मिटाकर आगे कदम बढ़ाना है,
प्यारा भारत देश हमें फिर गुलज़ार बनाना है,
पहले भी हम एक रहे और अब भी भाई चारा है ।। हम भारत के···

गीत-नारी कल्याण

नारी का सत्कार करो यह वचन मनु का ध्यान करो ।
कभी भूल कर भी ना नारी का अपमान करो ।।
चाल चलन है ठीक तो सभी ठीक हो जाता है,
चरित्रवान जहाँ जाता है वहीं पै इज्ज़त पाता है,
दुराचारी बन करके मत जीवन की हान करो ।। कभी भूलकर···
महिलाओं से छेड़ - छाड़ करते हैं गुन्डा - गर्दी,
और अनेकों शर्म नाक दुष्कर्म करें बेदर्दी,
तज दो अब ये महापाप और नारी का सम्मान करो ।। कभी भूल कर···
पढ़ देखो इतिहास पुराना जो भी महान बने हैं,
सदाचारी संयमी पुरुषार्थी हो विद्वान बने हैं,
छोड़ो रुढ़ीवाद अभय अब भारत का निर्माण करो ।। कभी भूलकर···

गीत

तसल्ली से सोचो विचारो ज़रा क्या था वतन और क्या हो रहा है ।
दूर कठिनाइयां भी हो ही रही हैं यक़ीनन वतन का भला हो रहा है ।।
भाषाओं के झगड़े खत्म करके आज मजबूत भारत बनाया गया,
धर्म निर्पेक्ष की भावना भी जगी है फिरका परस्ती को भी मिटाया गया,
लड़ाइयां भी जीती गई शान से इसी से आर्कषित जहां हो रहा है ।।
तसल्ली............

उत्पादन बढ़ाया गया अन्न का सबकी मेहनत से ढंग निराला हुआ,
खेतों खेतों में पानी पहुंचाया गया बिजली का घर घर उजाला हुआ,
कारखानों में भी सामान बहुत बन रहा विदेशी कर्ज भी अदा हो रहा ।।
तसल्ली............

अणु शक्ति में भी हम पीछें नही अतंरिक्ष में कई उपग्रह छोड़े गए,
कानून व्यवस्था भी ठीक होने लगी मेहनत से सब लोग जोड़े गये,
अनुशासन को फिर हमने अपना लिया है जहाँ देखो इसका बयां हो रहा है ।।
तसल्ली............

भूमि हीनों को भूमि दिलाई गई कर्जा भी माफ कराया गया,
गरीबों को रोजगार दिलाने की खातिर बैंकों से कर्जा दिलाया गया,
मजबूत भारत अब बन कर रहे, तैयार देश का आज नौजवां हो रहा ।।
तसल्ली............

पुनर्प्रतिष्ठा-गीत

धीरे-धीरे दूर हो रही सब कठिनाई है ।
इन्दिरा जी के साथ खुशी भी लौट आई है ।।
दिन में चलना मुश्किल था उसमें सुधार हुआ है,
डाकू मारे गये कई सुन हर्ष अपार हुआ है,
फिर से आया अनुशासन ये बड़ी अच्छाई है ।। इन्दिरा जी...
कृषक को अच्छे दाम मिले फस्लें भी भरपूर हुई,
गरीबों को कर्ज़ मिला बैंकों से बेकारी भी दूर हुई,
भारत माता देख के मन ही मन मुस्काई है ।। इन्दिरा जी...
गांव-गांव में बिजली है खेत खेत में पानी है,
थोड़े दिनों में कैसे हुआ लख जनता को हैरानी है,
बढ़ने से रुक गये भाव ये सफलता पाई है ।। इन्दिरा जी...

डूबने से मुल्क को तुमने बचा लिया

इन्दिरा जी में शक्ति है तूफानों से टकराने की ।
कठिनाई के साथ जूझ कर विगड़ी वात वनाने की ॥

जिसने मरना सीख लिया जीने का अधिकार उसी को ।
जिसने काँटे पार कर लिये फूलों का उपहार उसी को ॥

हँस हँस कर आदर्श मार्ग में जिसने सीखा बलि होना ।
अपने कष्टों पर मुस्काना औरों के कष्टों पर रोना ॥

नई आशा
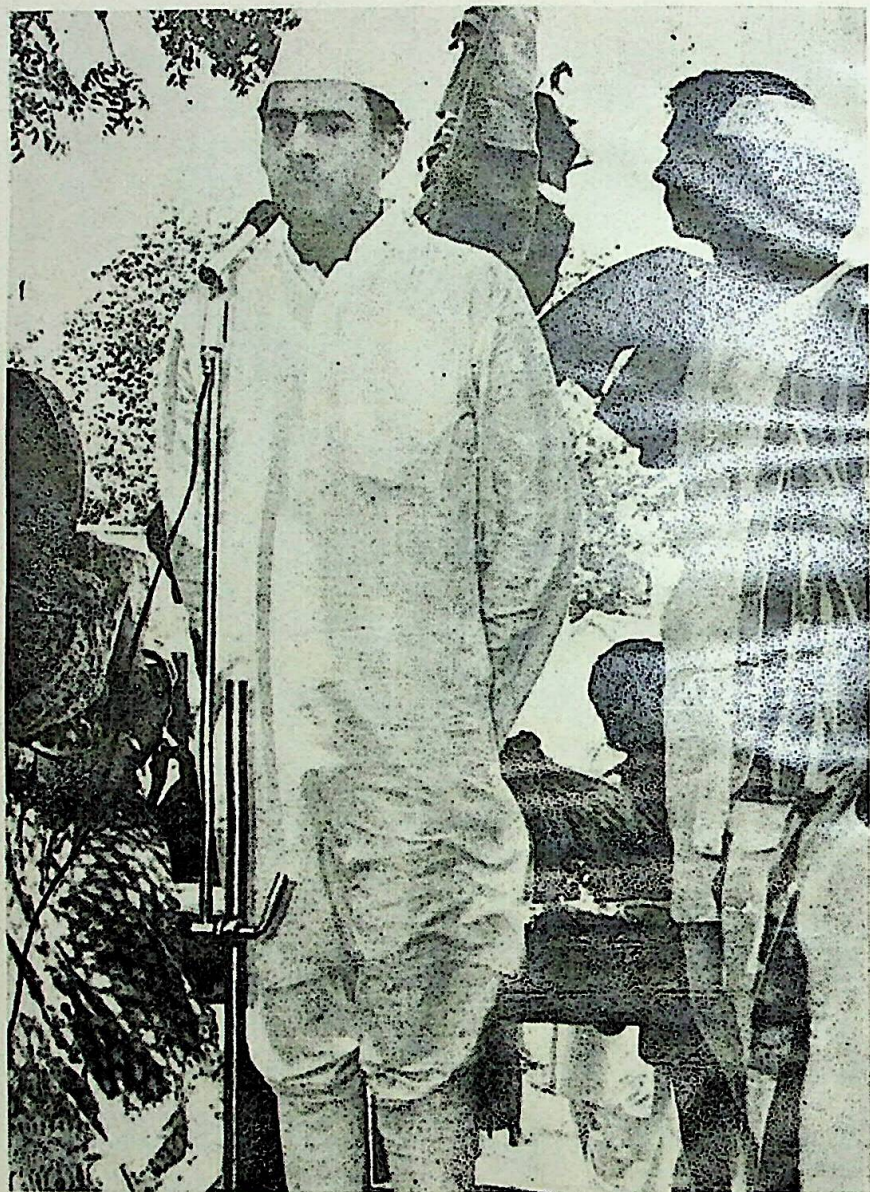
जहां तहां फैली खुद गर्जी ने लोगों का दिल चूर किया ।
राजीव गांधी अपने को चाहते थे इस से दूर किया ॥
राजनीति में न आऊं, स्वयं यत्न भरपूर किया ।
लेकिन जनता ने इनको एम०पी० वनने को मजबूर किया ॥

पं० जवाहर लाल नेहरू और राजीव गांधी

गीत

हुआ नया उद्घोष देश में जिसकी चर्चा घर घर है।
जन-जन की आवाज यही कि राजीव वीर जवाहर है॥
जिस समय पूंजी-पति मगन थे सब पैसों धेलों में,
जिस समय लोग मगन रहते थे शादी और मेलों में,
बाबू जी मगन थे स्वांग सिनेमा थियेटर के खेलों में,
उस समय जवाहर आनंद छोड़कर बन्द पड़े जेलों में,
अगणित कष्ठा घात सहे पर होकर रहे निडर हैं॥ जन जन……

इस आशा की नई किरण को लोग ध्यान से ताक रहे,
जवाहर लाल की कई बातें राजीव जी में आंक रहे,
आशाओं के सब्ज बाग़ मन मंदिर में झांक रहे,
कई अनेकों मौज तजी धूल अमेठी की फांक रहे,
त्याग तपस्या के अन्दर होता बड़ा असर है॥ जन जन……

आनंद भवन और वैभव का जिसने जग में त्याग किया,
जेलों में दी काट जवानी और कष्टों से अनुराग किया,
राज किया दुनियां के दिलों पर जीवन को बेदाग़ किया,
जन सेवा और प्रजातंत्र का रोशन एक चिराग़ किया,
जवाहर लाल ने जग को दी शांति की नई डगर है॥ जन जन……

जहां तहां फैली खुदगर्जी ने लोगों का दिल चूर किया,
राजीव गांधी अपने को चाहते थे इससे दूर किया,
राजनीति में न आऊं स्वयं यत्न भरपूर किया,
लेकिन जनता ने उनको एम०पी० बनने को मजबूर किया,
हों सपने साकार देश के अभयराम ये सही खबर है॥ जन जन…

नया बीस सूत्री गीत

बीस सूत्र को नई दिशा दो आगे क़दम बढ़ाओ ।
आओ मिलकर देश वासियों देश महान बनाओ ।।
गाँव गाँव में बिजली हो, और खेत खेत में पानी,
बढ़े उत्पादन तेल दालों को नही रहे परेशानी,
खेतीहर मज़दूरों को भी सही मज़दूरी दिलानी,
सीमां से जो अधिक भूमि हो, वह ग़रीबों में बटवानी,
पुनर्वास कर बंधुआ मज़दूरों के कष्ट मिटाओ ।। आओ···

अनुसूचित और जन जाती वालों की मिटे तबाही,
पीने के पानी की सुविधा जाय गाँव गाँव पहुंचाई,
रोज़गार और घर के लायक़ भूमि जाय दिलाई,
ज़मीनों के भाव रूकें बढ़ने से ऐसी योजना बनाई,
घर घर में हो गोबर गैस और जगह-जगह वृक्ष लगाओ ।। आओ···

छोटा परिवार बनायें सभी नहीं बढ़े मदर्म-शुमारी,
पौष्टिक आहार मिले खानेको स्वस्थ रहें नर-नारी,
महिलाओं और बच्चों को भी सुविधा मिलेगी सारी,
कुटीर उद्योग चलाये मिले बैंक से पैसा भारी,
बिना पढ़ों को पढ़ाओ और तस्कर को सज़ा दिलाओ ।। आओ ··

वितरण व्यवस्था तेज़ करें और चले बड़े उद्योग यहाँ,
सार्वजनिक क्षेत्रों का भी होवे अधिक उपयोग यहाँ,
शिक्षा हो अनिवार्य मिटेगा अविद्या रोग यहाँ,
अंतरिक्ष में शक्ति बढ़ायें हुये सफल प्रयोग यहाँ,
मुख्य कार्यक्रम यही देश का इससे लाभ उठाओ ।। आओ···

दुर्लभ चित्रों व पुस्तक प्रकाशन में अन्य प्रयासों के लिये सर्व श्री अशोक कुमार शर्मा, नरेश कुमार शर्मा प्रदीप कुमार वर्मा, प्रदीप शाह् एवं सैय्यद अकील हैदर का अभार व्यक्त किया जाता है ।

—सम्पादक

अमरीका यात्रा

26 जुलाई, 1982 को अमरीका में प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भारतीयों का अभिवादन स्वीकार करते हुए प्रसन्न मुद्रा में ।

गीत

इन्दिरा गांधी में शक्ति है कुछ करके दिखलाने की ।
कठिनाई के साथ जूझ कर बिगड़ी बात बनाने की ॥
सत्तर करोड़ का भारत जहाँ एक-एक की गैल नहीं,
अलग-अलग मज़हब फिरक़े और आपस में मेल नहीं,
आवश्यकता है जितनी उतना यूरेनियम डीज़ल तेल नहीं,
ऐसी दशा में देश को लेकर चलना कोई खेल नहीं,
हरदम कोशिश रहती है आगे देश बढ़ाने की ॥ कठिनाई ......

सारी दुनियां भारत की शक्ति का लोहा मान रही,
क्या था और क्या हो गया भारत इसको भी पहचान रही,
गांव-गांव में सड़क व बिजली, कर भारी उत्थान रही,
बाढ़ व सूखे आदि में भी, कर भारत का निर्माण रही,
घटना घटने पाई नहीं कोई, बिन भोजन मर जाने की ॥ कठिनाई···

लोग साथ में चले मगर, वह आगे चली अकेली थी,
बैंकों को राष्ट्रीय बनाया तब हिम्मत एक सहेली थी,
बंगला देश की लड़ाई में भी तूफानों से खेली थी,
मदद गरीबों की करने को बहुत मुसीबत झेली थी,
आवाज लगाई दुनियां से ग़रीबी दूर भगाने की ॥ कठिनाई···

देश के कारण जिसके कुल ने अपना सब वारा था,
बचपन में भी जिसको अपना देश जान से प्यारा था,
वानर सेना बना के जिसने काम बहुत कर डारा था,
उन्नीस नवम्बर सन् सतरा में ये चमका एक सितारा था,
प्रिय दार्शिनी इन्दिरा की परिभाषा ज्योत जगाने की ॥ कठिनाई···

अमरीका—व्हाइट हाउस में दो महान नेता, विश्व की समस्याओं पर बात-चीत करते हुए
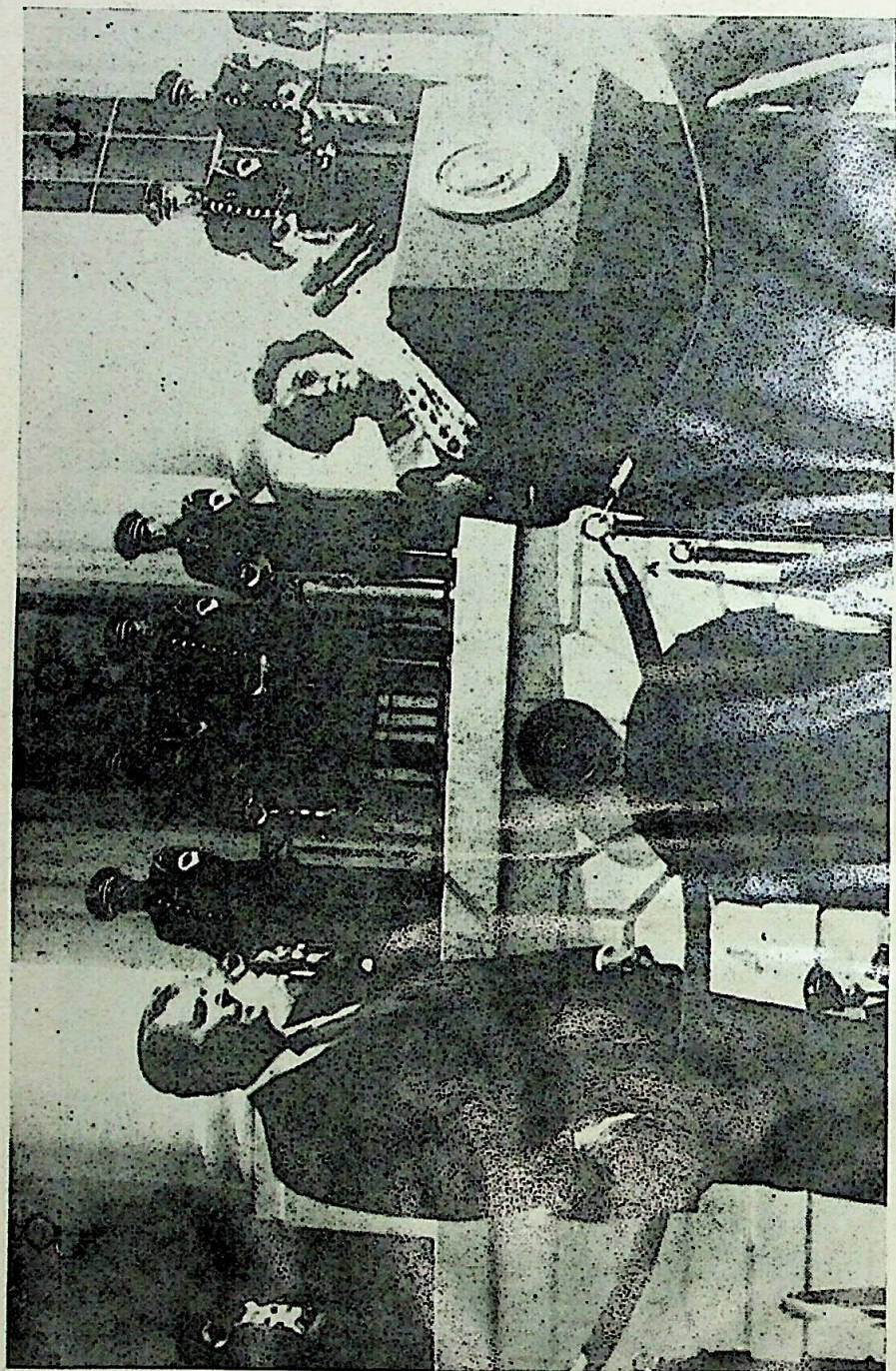
अमरीका में श्रीमती गांधी का अमरीकी राष्ट्रपति श्री रोनाल्ड रीगन द्वारा स्वागत

भारत की विदेश नीति

गीत

सभी के साथ रहें मिलकर भारत ने नीति बनाई है ।
जिस पर चलकर सभी सुखी हों वही डगर अपनाई है ॥
सबसे पहले जवाहर लाल ने ढंग विचित्र बनाया था,
गुट निरपेक्ष नीति का इक सुन्दर सा चित्र बनाया था,
खुद जिओ औरों को जीने दो नियम पवित्र बनाया था,
इसी के द्वारा कई देशों को अपना मित्र बनाया था,
किसी एक की नहीं इसमें कुल जग की निहित भलाई है ॥ सभी के…

कई देशों के सम्मुख जब भी संकट का समय आया है,
इसी नीति ने मदद करी और भारी लाभ पहुंचाया है,
खरी खसौटी पर उतरी है जब भी इसे आजमाया है,
इसी ने जग को गुलामी के बन्धन से मुक्त कराया है,
बड़े-बड़े मुल्कों ने इसकी कर दी शुरु बड़ाई है ॥ सभी के…

आज देख लो इन्दिरा गांधी जहां-जहां भी जाती हैं,
मदद गरीबों की करने की ही आवाज लगाती हैं,
न्याय के साथ रहेंगे मिलकर ये ही बात बताती हैं,
जो भारत का भला करेगा भारत उसी का साथी हैं,
इसीलिए तो इन्दिरा गांधी विश्व नेता कहलाई हैं ॥ सभी के…

अमेरिका के राष्ट्रपति रीगन ने भी दी बधाई है,
युग निर्माता के परिवार की प्रतिनिधि यहां आई हैं,
महान देश की महान नेता इन्दिरा जी बतलाई है,
जापान वासियों ने भी अब भारत की साख़ बढ़ाई है,
विश्व की नेता इन्दिरा गांधी कहकर खुशी मनाई है ॥ सभी के…

१५ अगस्त १६८२ को देहली लाल किले पर

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का भाषण

गीत

स्वतंत्रता का छत्तीसवां भारत ने दिवस मनाया ।
लाल किले पर इन्दिरा गांधी ने झंडा फहराया ॥
देश वासियों आज़ादी की सबको आज बधाई,
वीर शहीदों की चर्चा कर करने लगी बड़ाई,
स्वतंत्रता और सीमा के हित जिन्होंने जान गवाई,
आंसू का दिन बतला करके उनकी याद दिलाई,
फिर देश वासियों को उनका निज कर्त्तव्य बताया ॥ लाल किले···

दूर गरीबी हो जाये इस पर है ध्यान हमारा,
बिना एकता और परिश्रम है कोई चले ना चारा,
मिलता है सहयोग व सदभाव से बड़ा सहारा,
आगे बढ़ता देश कोई भी इन्हीं शक्तियों द्वारा,
बढ़ती हुई आवादी ने बड़ा नुकसान पहुंचाया ॥ लाल किले···

भूख ग़रीबी पिछड़ा पन भारत का शत्रु पुराना,
मिल जुलकर के इन सबको हम चाहते आज मिटाना,
मगर यहां कुछ ऐसे भी जो चाहते इन्हें बढ़ाना,
देश को भाषा क्षेत्र वाद का चाहते जहर पिलाना,
कई बार कमज़ोर इन्होंने भारत देश बनाया ॥ लाल किले···

गौतम बुद्ध और अशोक आदि की शिक्षा को अपनायें,
देश प्रेम उपकार त्याग पुरुषार्थ की ज्योति जगायें,
औरों को कहने से पहले स्वयं ठीक हो जायें,
जैसे-तैसे करके अपना देश मजबूत बनायें,
तीन बार जयहिन्द का नारा सब से है बुलवाया ॥ लाल किले···
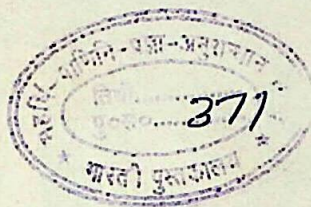
गौतम बुद्ध अशोक आदि,
की शिक्षा को अपनायें।
देश प्रेम उपकार त्याग,
पुरुषार्थ की ज्योति जगायें।
औरों को कहने से पहले,
स्वयं ठीक हो जायें।
जैसे तैसे करके अपना,
देश मजबूत बनायें।
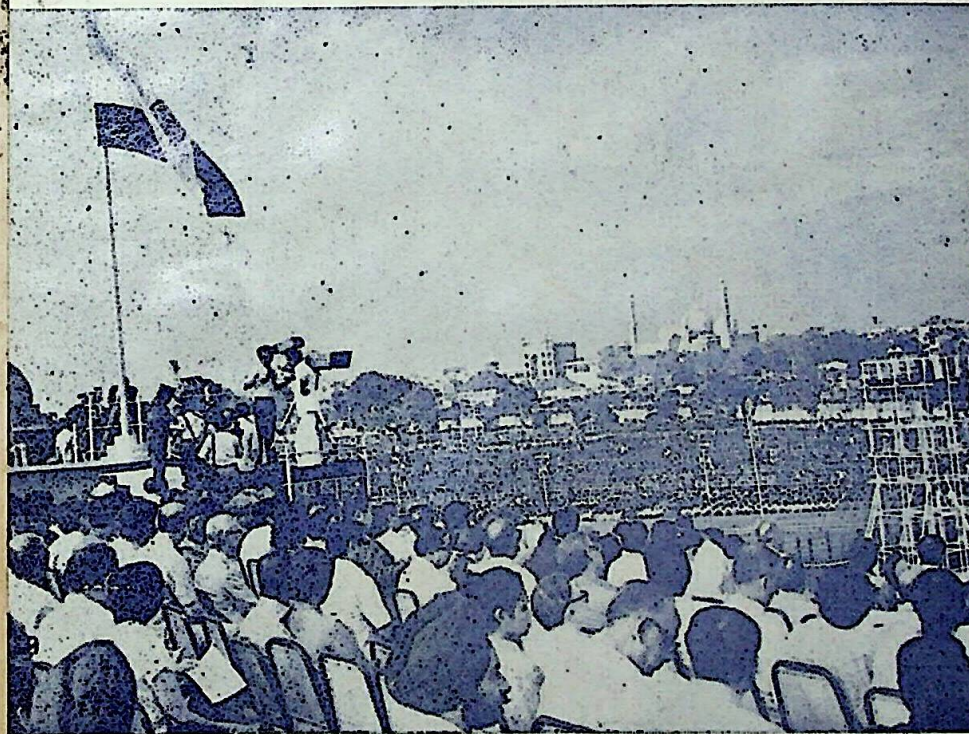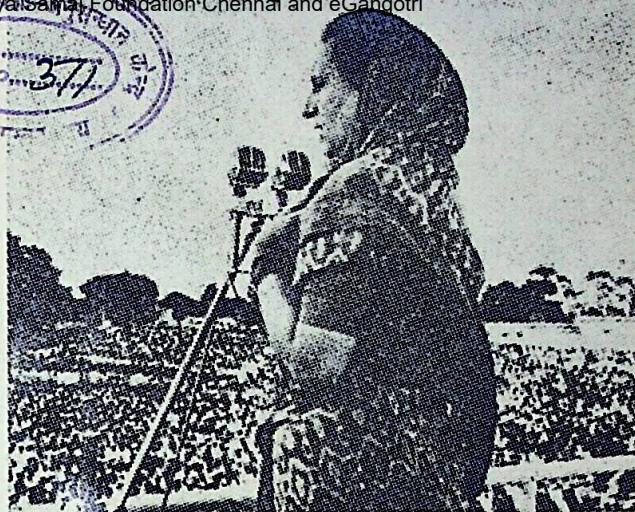
प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी स्वतंत्रता दिवस पर लालक़िले की प्राचीर से जन समुदाय को संबोधित करतीं हुई।

श्रीमती इन्दिरा गांधी
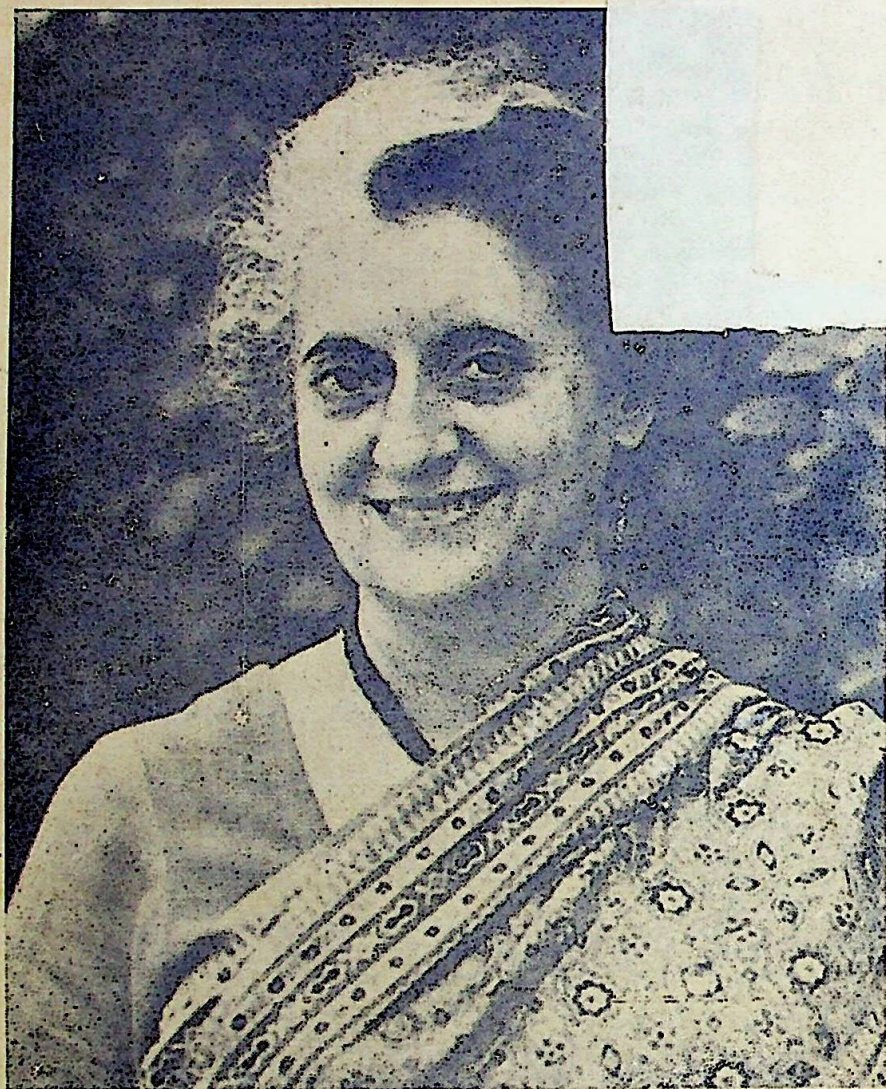
इन्दिरा जी के प्रति कुछ भी लिखना देश के सम्बंध में लिखना है। देश के प्रति कार्य करना प्रत्येक नागरिक का परम कर्तव्य है। अतः इस पुस्तक में गीतों द्वारा अपने श्रद्धा सुमन अर्पित कर मैंने अपने कर्तव्य का पालन किया है।

—अभयराम शर्मा